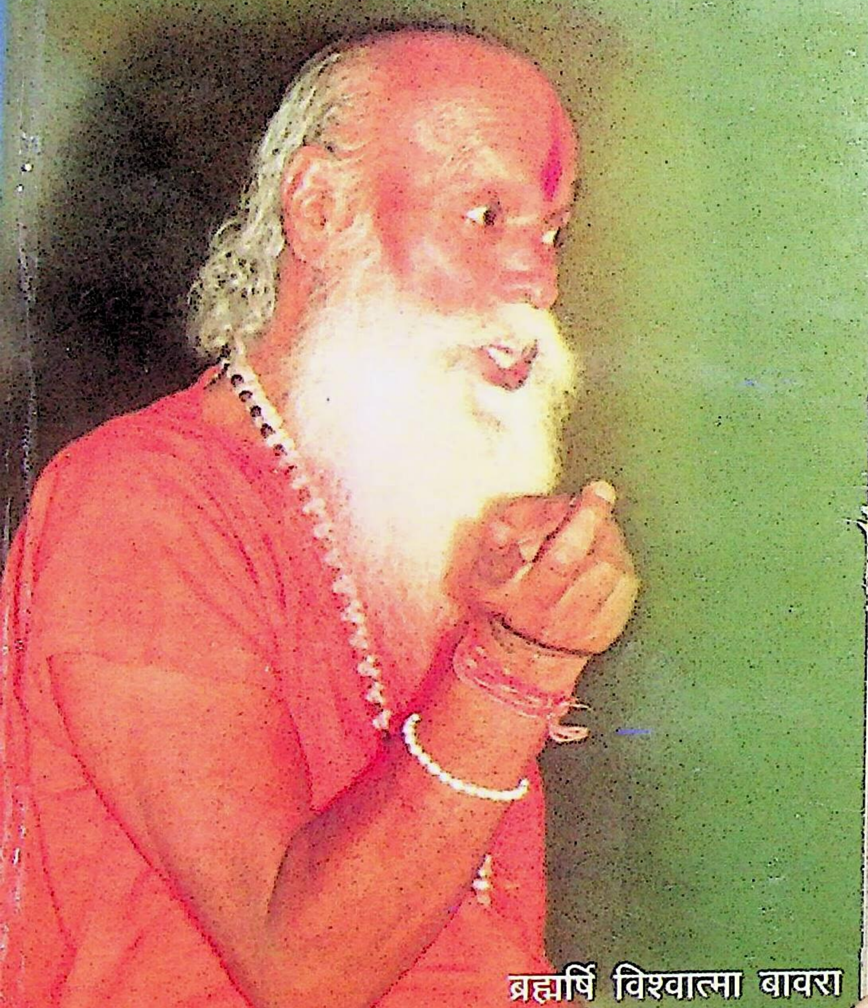
वैदिक सनातन धर्म
की वैज्ञानिक व्याख्या



ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा

वैदिक सनातन धर्म
की
वैज्ञानिक व्याख्या

ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा

दिव्यालोक प्रकाशन

ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट नगर,

पिंजौर, हरियाणा

फोन - ०१७३३-२६६१७०

प्रकाशक :
दिव्यालोक प्रकाशन
ब्रह्मर्षि आश्रम,
विराट नगर, पिंजौर (हरियाणा)
फोन : 01733-266170

संकलयिता :– आदित्य भारती परिव्राजिका

सम्पादन :– ब्रह्मऋता परिव्राजिका

शब्द संयोजन :– *अमित शर्मा*

प्रथम संस्करण :– जनवरी 2003, सम्वत् २०६०

प्रतियाँ :– २१००

मूल्य : 40/-

मुद्रक :–दी प्रैस, नवीन शाहदरा, दिल्ली–११००३२

दो शब्द

'वैदिक सनातन धर्म की वैज्ञानिक व्याख्या', लघु पुस्तिका परम पूज्य गुरुदेव अनन्त श्रीविभूषित ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा जी महाराज द्वारा रचित वैदिक सनातन धर्म की अनुपम निधि है। वर्तमान में धर्म की विकृत व्याख्याओं एवं परिभाषाओं से उनका अन्तस प्रायः आन्दोलित एवं व्यथित हुआ करता था। वैदिक सनातन धर्म जो विश्व का सिरमौर रहा, जिससे अनेक पंथों, मज़हबों एवं सम्प्रदायों की सरितायें निकली लेकिन वह हिमालय की तरह कूटवत् स्थिर रह आज भी अपने आलोक से विश्व को आलोकित कर रहा है। विश्व में प्रचलित अनेक पंथ, मज़हब एवं सम्प्रदाय विज्ञान की आंधी में ध्वस्त हो गये लेकिन यह धर्म अपने स्वरूपानुसार वैसे ही नित्य, शाश्वत और सनातन बना रहा। पूज्य गुरुदेव की यह घोषणा थी कि दुनिया में जैसे-2 विज्ञान का प्रकाश होगा वैसे-2 वैदिक सनातन धर्म का विकास होगा क्योंकि यह धर्म अन्धविश्वास का नहीं अपितु ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश में प्रतिष्ठित तर्क एवं अनुसंधान का विषय है।

वैदिक सनातन धर्म आर्षधर्म है, किसी व्यक्ति के दिमाग की उपज नहीं। यह किसी पूजा पद्धति का नाम नहीं जीवन विकास के विधान की प्रतिष्ठा है। इसे किसी विशेष पूजा पद्धति के साथ आबद्ध करना वा किसी पीर-पैगम्बर वा देवी-देवता का जामा पहनाना इसके गौरवमय स्वरूप को धूमिल करने के

प्रयास हैं जिसके लिए वर्तमान के पठित वर्ग को सावधान रहना होगा। धर्म के नाम पर चल रही अनके भ्रान्तियों से मुक्त हो जनमानस को सही दिशा प्रदान करने के लिए ही पूज्य गुरुदेव ने अनेक युक्तियों एंव ऐताहासिक घटनाओं से जनता को इस ग्रन्थ के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। मुझे विश्वास है कि सुधी पाठक इससे मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

यह प्रवचन माला बलिया में पू० श्री के प्रिय शिष्य श्री काशीनाथ मिश्र (पूर्व सांसद सदस्य) के विशेष आग्रह पर आयोजित की गई थी। इसका संकलन हमारी प्रिय आदित्य भारती जी ने किया और इसको प्रकाशित करने का योगदान दिया हमारी प्रिय कृष्ण प्रिया जी की प्रेरणा से हालैण्ड निवासी श्री चन्द्रिका प्रसाद गणेश ने। मेरा अनन्त आशीर्वाद एवं शुभकामनायें प्रिय गणेश को हैं। प्रभु इन्हें और सामर्थ्य दे जिससे वह लोकहितकारी कार्यों में इसी तरह अपना सहयोग देते रहें। अन्त में सब के प्रति मंगलकामनायें।

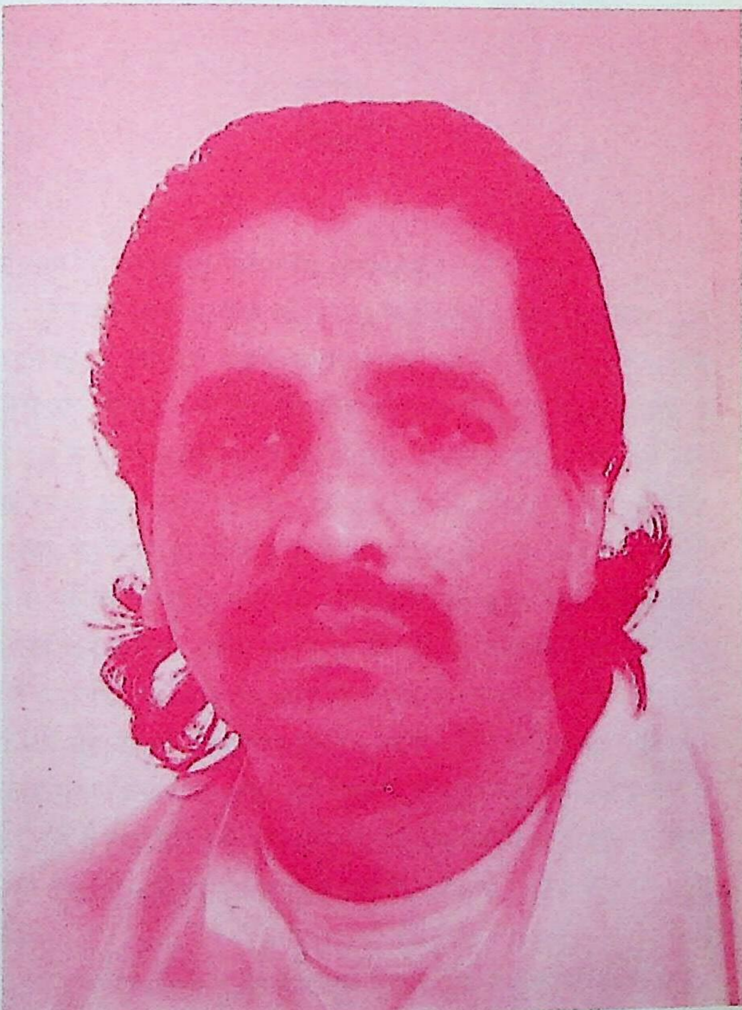
यह लघु पुस्तिका मैं अपने पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में ही कोटि-2 प्रणाम करते हुए समर्पित कर रही हूँ। वे जहाँ भी हैं अपना वरद् हस्त हम पर बनायें रखें जिससे हम उनके द्वारा प्रदत ज्ञान को जीवन के अन्तिम श्वास तक बाँटते रहें।

कोटि-2 प्रणाम सहित

ब्रह्मऋता

प्रचारिका ब्रह्मर्षि मिशन

सौजन्य से



हॉलैण्ड निवासी श्री चन्द्रिका प्रसाद (गणेश) के आर्थिक सहयोग से यह पुस्तक प्रकाशित हुई।

१

परावर रूप में उपस्थित मेरी प्रिय आत्माओ!

करुणानिधान भगवान् की करुणा आप सभी के लिए सदैव कल्याण का सृजन करती रहे, यह मेरी आन्तरिक शुभ कामना। कई वर्षों से आपके इस नगर के निवासी मेरे प्रिय शिष्य काशीनाथ मिश्र की चाह थी कि मैं आपके इस नगर में आऊँ। ईश्वरीय विधान से व्यस्त होते हुए भी मैंने तीन दिन का समय आप लोगों के मध्य यहां सत्संग और धर्म चर्चा करने के लिए प्रदान किया है। आज प्रथम दिन है। मैं जानता हूं आप लोग मेरे से तथा मेरे विचारों से परिचित नहीं हैं, फिर भी आप लोगों की श्रद्धा और धर्म के प्रति निष्ठा देख करके मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। तीन दिन तक मैं आप लोगों से धर्म चर्चा करूंगा। प्रभु कृपा से वेद से लेकर हनुमान चालीसा तक की व्याख्या आप लोगों को सुना सकता हूं लेकिन मैं जब यहां आया तो मुझे यह बताया गया कि यहां के लोग दर्शनशास्त्र के गूढ़तम विषयों को सुनने के अभ्यस्त नहीं हैं इसलिए इन्हें रामचरितमानस के माध्यम से ही कुछ सुनाया जाए। वैसे ऐसा मैं नहीं मानता क्योंकि सब जगह सभी प्रकार के लोग मिल जाते हैं।

मैं ऐसा समझता हूं कि इस युग में जहां कि धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के अपवाद चल रहे हैं, धर्म को जीवन विकास की विधा से अलग करने का प्रयत्न चल रहा है तथा भारत की धर्मप्राण जनता को यह समझाया जा रहा है कि धर्म तत्त्व एक ऐसा अशुभ तत्त्व है जो तुम्हारे जीवन विकास

में महान बाधक है इसलिए जब तक तुम धर्म निरपेक्ष नहीं बनोगे तब तक तुम्हारा उद्धार नहीं होगा। ऐसी स्थिति में धर्म के मूल सिद्धान्तों को, उसके गूढ़ रहस्यों को यदि जनता को न समझाया जाए तो मैं समझता हूं कि जनता धर्म से विमुख हो जाएगी, उसकी महत्ता से वंचित रह जाएगी। यह बात याद रखिए आप लोग कि धर्म एक वैज्ञानिक तथ्य है। वह आस्था नहीं अनुसंधान का विषय है। अनादि काल से भारत के तत्त्ववेत्ता ऋषियों ने उस धर्म का अनुसंधान किया है और आज भी कर रहे हैं। मैंने भी बहुत वर्षों तक अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं के द्वारा उसका अनुसन्धान किया है। उस तत्त्व का साक्षात्कार किया है। बड़े विश्वास के साथ आपको बता सकता हूं कि वैदिक विज्ञान के प्रकाश में प्रतिष्ठित धर्म अन्धविश्वास वा आस्था का विषय नहीं, ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश में प्रतिष्ठित अनुसंधान का विषय है।

आज जो लोग धर्म निरपेक्षता की बात करते हैं वो भ्रान्त बुद्धि वाले लोग हैं जिनका न कोई सिद्धान्त है, न कोई आस्था है और न ही कोई जीवन का विधान है। उनके सम्पूर्ण जीवन का केवल एक ही उद्देश्य है जिसको पद और पदार्थ की लिप्सा कहते हैं। पद और पदार्थ की लिप्सा को जागृत करने के लिए धर्म जैसे तत्त्व को मानव जीवन से बहिष्कृत करने की चर्चा करना अज्ञानता और भ्रान्ति के सिवा और कुछ नहीं है। भारत वह भूमि है जिस पर दुनिया के समस्त धर्मों के जन्मदाता आश्रय लिए हैं। भारत वह भूमि है जहाँ सदैव धर्ममेघ समाधि में अवस्थित रहने वाले ऋषियों के दिव्य जीवन के प्रकाश में विविध प्रकार की धार्मिक साधनाओं की प्रतिष्ठा हुई है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और ब्राह्मी स्तर पर पहुंच कर ऋषियों ने जिस धर्म की घोषणा की है उस देश के निवासियों को धर्म विरोधी अधर्म की सीख देना भ्रान्त बुद्धि के परिणाम के सिवाय और क्या कहा जाए? आप जानते हैं कि मनुष्य जब सत्य नहीं बोलता तो झूठ बोलता है क्योंकि बोलने के लिए दो ही तत्त्व हैं या सत्य बोलेगा या झूठ बोलेगा। सत्य तो नहीं बोलता

लेकिन झूठ भी नहीं बोलता ऐसा कहना एक अज्ञानता की बात है। जैसे सत्य और मिथ्या इन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध है ऐसे ही धर्म और अधर्म का भी है। यदि आपका जीवन धर्मसम्मत नहीं होगा तो अधर्मसम्मत होगा। अधर्मसम्मत व्यक्ति संसार में सुख की प्राप्ति कर लेगा, यह कल्पना ही व्यर्थ है।

आप ज़रा देखिए धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाले, अधर्म के प्रकाश में जीवन विकास की कल्पना करने वाले लोगों की क्या दुर्गति हो रही है? कल तक जो भारत के शासक बने थे आज कटहरे में खड़े हुए हैं। यह किसकी देन है? यह अधर्म निष्ठा की देन है। यदि धर्म निष्ठा उनमें होती तो अपने कर्त्तव्य के पालन में निरत होते, अपने अधिकारों का सदुपयोग किया होता और भारत की जनता जो गरीबी की रेखा से भी नीचे रहती है उनको लूटने की प्रक्रिया उनमें न होती। यदि उनमें धर्म निष्ठा होती तो विदेशियों से लाये हुए धन को उनकी सेवा में प्रयोग करते और उनका विकास करते। धर्म निरपेक्षता का परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति जो कुर्सी पर बैठता है वह यह सोचता है कि जितना लूट सकते हो लूट लो। उसका परिणाम आज देश की जनता भुगत रही है। यह बात याद रखो–

अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षानि तिष्ठति ।
प्राप्ते एकादशे वर्षे समूलं च विनश्यति ।।

(चाणक्य १५/६)

अन्याय से प्राप्त किया हुआ धन दस वर्ष तक रहता है। ग्यारहवां वर्ष लगते ही मूल सहित नष्ट हो जाता है। यह क्रियात्मक रूप से हमारे सामने आ रहा है और तुम लोग देख रहे हो। मेरा केवल इतना ही निवेदन है कि आप वर्तमान के कर्णधारों के बहकावे में आकर धर्म निरपेक्षता के अन्धकार में स्वयं को घसीटने का प्रयत्न न करें। धर्म के प्रकाश में ही आपके जीवन का सर्वतोमुखी विकास निहित है, यह बात मेरी याद रखें ।

मैं जब धर्म की चर्चा करता हूं तो उसका अभिप्राय किसी पूजा पद्धति से नहीं है। मैं जब धर्म की चर्चा करता हूं तो उसका अभिप्राय किसी पीर–पैगम्बर से नहीं है। मैं जब धर्म की चर्चा करता हूं तो उसका अभिप्राय किसी अन्धविश्वास से नहीं है। धर्म है जीवन के विकास की एक विधा। हमारे पूर्व के ऋषियों ने धर्म के लक्षण बताये हैं। महर्षि कणाद ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है –

यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः ।

जिसके द्वारा मानव सर्वतोमुखी विकास करता हुआ पूर्णत्व को प्राप्त करले, उसे धर्म कहते हैं। यह धर्म की व्याख्या है हमारे यहां। दुर्भाग्य से जब भारत स्वतंत्र हुआ तो उन लोगों के हाथ में सत्ता आई जो भारत के यथार्थ स्वरूप से अनभिज्ञ थे। जो भारत में पैदा होकर भारत की खोज कर रहे थे, ढूंढ़ रहे थे कि भारत कहां है। जिनके दिमाग की यह उपज रही है कि लोग आते रहे और हिन्दुस्तान बनता रहा। जिनको अपने अतीत के इतिहास का गौरव वा बोध नहीं था। जो अपने अतीत की उपलब्धियों में आस्था नहीं रखते थे क्योंकि उनकी शिक्षा–दीक्षा पाश्चात्य संस्कारों में ही हुई थी। दुर्भाग्य से भारतीय जन–जीवन के आधार नेता एक–एक करके अलग होते गए। मालवीय जी, तिलक तथा बाबू सुभाष जैसे अनेकों नेता जो देश के यथार्थ स्वरूप को जानते थे दुर्भाग्य से वे सब अलग होते रहे और ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता आई जिन्होंने यह निश्चय किया कि जब तक हम भारत को यूरोप नहीं बना देंगे तब तक भारत का उत्थान नहीं होगा। उस भ्रान्ति का ही परिणाम है कि जो आज ५० वर्षों में भी हम दुनिया के सामने गौरव के साथ खड़े नहीं हो सके।

मैं आप लोगों को यह बता रहा था कि भारतीय जन–जीवन में धर्म अन्धविश्वास का विषय नहीं है। उन्होंने धर्म का अनुवाद किया मज़हब। उन्होंने धर्म को समझा Religion. रिलिजन धर्म नहीं है, मज़हब धर्म नहीं है,

धर्म तो विज्ञान का विषय है जबकि रिलिजन और मज़हब केवल अन्धविश्वास के विषय हैं। दुनिया में जितने भी प्रचलित धर्म हैं उन सब के धर्म ग्रन्थों का मैं अध्ययन किया हूं और पच्चीस वर्षों से अमेरिका और यूरोप के देशों में रहते हुए उन लोगों को उसका संदेश दे रहा हूं। इसलिए आप लोगों से मैं स्पष्ट शब्दों मे बता देना चाहता हूं कि हमारे यहां धर्म शब्द की व्याख्या Faith के अर्थ में नहीं है, वह सत्य के अर्थ में, विज्ञान के अर्थ में तथा बोध के अर्थ में है। हमारा धर्म मरने के बाद स्वर्ग प्रदान करने वाला नहीं है बल्कि जीते जी स्वर्गीय सुखों को प्राप्त करने की विधि समझाता है। गीता के नवें अध्याय में भगवान् ने स्पष्ट शब्दों में यह बात घोषित की है कि यह धर्म सामान्य नहीं है –

प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ।।

(गीता ९/२)

यह प्रत्यक्ष परिणाम देने वाला धर्म है। अभी इसका अनुष्ठान करो तुरन्त फल ले लो। मरने के बाद फल देने वाला नहीं हैं कि तुम जब मरोगे तो तुम्हे बैकुण्ठ मिलेगा। ऐसी आस्था की बात नहीं है। इसलिए मैं आप लोगों से बता रहा था कि भारतीय धर्म को समझो। यह जीवन विधान की एक सुव्यवस्था है जिसकी समता दुनिया में कोई कर नहीं सकता। आज लाखों नही करोड़ों की संख्या में अमेरिकन और यूरोपियन इस शाश्वत सनातन धर्म को स्वीकार करके अपने जीवन का विकास कर रहे हैं। शाश्वत सनातन धर्म एक वैज्ञानिक जीवन की प्रक्रिया है। इसको जब तक जीवन में प्रतिष्ठित नहीं करेंगे तब तक आपका जीवन उन्नत नहीं हो सकता, आप सुख और शान्ति के भाजन नहीं बन सकते।

आप लोग रामायण पढ़ते हैं न? रामायण में एक बड़ा ही सुंदर प्रसंग है। महात्मा भरत को उसके गुरु उपदेश देते हुए समझाते हैं कि हे भरत! तुम्हारे पिता बड़े सत्यवादी थे। उन्होंने सत्य की रक्षा के लिए राम को वन

भेज दिया। राम के प्रेम में उन्होंने प्राण त्याग दिया किन्तु सत्य का त्याग नहीं किया इसलिए हे भरत –

नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना।
करहु तात पितु बचन प्रवाना।।

(रा० २/१७४–५)

राजा को वचन प्रिय था प्राण प्रिय नहीं था इसलिए तुम अपने पिता के वचनों को पूरा करो। क्या बचन है पिता का?

रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा।
पिता बचन फुर चाहिअ कीन्हा।।

(रा० २/१७४–३)

राजा ने तुम्हें राज्य दिया है इसलिए तुम अपने पिता के वचन को सत्य करो यानी तुम राज सिंहसन को स्वीकार कर लो। इसमें वेद का क्या मत है? गुरु वशिष्ठ कहते हैं –

बेद बिदित संमत सब ही का।
जेहि पितु देइ सो पावइ टीका।।

(रा० २/१७५–३)

वेद कहता है, सब की सम्मति है कि पिता जिसको राज्य देता है उसको राज्य ले लेना चाहिए। आप क्या कहते हैं? गुरुदेव कहते हैं –

करहु राजु परिहरहु गलानी।
मानहु मोर बचन हित जानी।।

(रा० २/१७५–४)

मैं भी तुम्हारे हित की बात कहता हूं कि ग्लानि का त्याग करके तुम राज्य करो। भरत जी ने मन्त्री की ओर देखा। मन्त्री जी की क्या राय है? सुमन्त जी कहते हैं –

कीजिअ गुरु आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।

रघुपति आएं उचित जस तस तब करब बहोरि।।

(रा0 २/१७५)

गुरुदेव की आज्ञा का पालन अवश्य करना चाहिए, कुमार! गुरुदेव तुम्हारे हित की बात कह रहे हैं। भरत जी ने माता कौशल्या की ओर देखा। माता कौशल्या क्या कह रही हैं? तुलसीदास जी लिखते हैं –

कौसल्या धरि धीरजु कहई।
पूत पथ्य गुर आयसु अहई।।
सो आदरिअ करिअ हित मानी।
तजिअ बिषादु काल गति जानी।।

(रा0 २/१७६–१,२)

माता कौशल्या कहती हैं – हे पुत्र! गुरु की आज्ञा पथ्य है, कुपथ्य नहीं है। यह सेवनीय है त्याज्य नहीं है इसलिए तुम ग्लानि का त्याग करके काल की गति अटल है ऐसा समझ करके गुरु की आज्ञा का पालन करो।

मैं आप लोगों से एक बात पूछना चाहता हूं कि यदि गुरु की, मन्त्री की, कौशल्या मां की आज्ञा स्वीकार करके भरत गद्दी पर बैठ गए होते तो क्या राम की कहानी यही होती जो आजकल आप लोग पढ़ते हो ? क्या राम कहीं राम राज्य की प्रस्थापना कर पाते जिसका स्वप्न सब देखते हैं अब तक? जो लाखों वर्षों से भारत की जनता के जन–जीवन को प्रेरणा प्रदान करती आ रही है क्या राम की कथा वही होती? नहीं, कदापि नहीं। लेकिन इन सब के उत्तर में महात्मा भरत ने क्या कहा ?

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू।
चाहिअ धरमसील नरनाहू।।

(रा0 २/१७९–१)

भरत का एक ही उत्तर है कि मैं सत्य कहता हूं आप लोग मेरी बात को सुनो और इस पर विश्वास करो कि राजा जो है इसको धर्मशील होना

चाहिए। जिस देश के आदर्श पुरुष ने यह घोषणा की हो – चाहिअ धर्मसील नरनाहू। जिसने यह कहा हो कि –

मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं।
रसा रसातल जाइहि तबहीं।।

(रा० २/१७९–२)

"यदि हठ करके मुझे राज्य दिया गया तो यह पृथ्वी रसातल को चली जायेगी।" कहने का अभिप्राय कि समाज नष्ट हो जायेगा। क्यों ऐसा कहा जानते हो? भरत जानते हैं कि मेरी माँ ने मेरे बाप से धोखे से अपने पूर्व में दिए हुए वर के बदले में मेरे लिए राज्य मागा है। यह अनाधिकार चेष्टा है, अनाधिकार प्रवृत्ति है। जब दूसरे के अधिकार को छल, बल और दल से प्राप्त करने की प्रक्रिया राजतन्त्र में प्रतिष्ठित हो जाए तो फिर वहां की प्रजा क्या करेगी? वही तो करेगी जो राजा करेगा। जो राजा करेगा वही यदि प्रजा करने लगेगी तो समाज की क्या गति होगी? वह समाज रसातल को नहीं जायेगा तो क्या स्वर्ग में पहुँचेगा? कल्पना कीजिए आप। महात्मा भरत एक सजग महापुरुष हैं। ज्ञान–विज्ञान के प्रकाश में वो सत्य को समझते हैं। योग्यता के अभाव में वो अधिकार की कामना नहीं करते। कभी भी वो अपने कर्त्तव्य से च्युत नहीं होते हैं।

दो बातें आप लोग मेरी याद रखना। जब मनुष्य में योग्यता के अभाव में अधिकार की भूख जग जाए और वह कर्त्तव्य से विमुख हो जाए यानी वह अधिकार अपना और कर्त्तव्य दूसरे का देखने लगे तो उस समाज का पतन होता है उत्थान नहीं होता, उस जाति का विनाश होता है विकास नहीं होता, उस देश की अवनति होती है उन्नति नहीं होती। दुर्भाग्य से वर्तमान के सभी राजनेता भारत की जनता को अधिकार का प्रलोभन तो दे रहे हैं लेकिन किसी ने कर्त्तव्य की सीख नहीं दी। अधिकार के प्रलोभन के साथ उसमें योग्यता के सृजन की प्रतिष्ठा नही की। योग्यता के अभाव में

प्राप्त किया हुआ अधिकार किस प्रकार के कर्त्तव्य में उसे प्रवृत्त करेगा? आप ज़रा सोचिए। यह किसी भी वर्ग के उत्थान की प्रक्रिया नहीं है, उस वर्ग के शोषण की प्रक्रिया है। उस वर्ग को और गर्त में डालने की प्रक्रिया है। उसे प्रलोभन देकर के पथ भ्रष्ट करने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म विरुद्ध है। जो धर्म के रक्षक हैं, धर्म के सेवक हैं, धर्माचार्य हैं, जिन्होंने धर्म की प्रतिष्ठा के लिए ही अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित किया है उनका कर्त्तव्य बनता है कि वे भारत की जनता को यथार्थ धर्म का संदेश देकर उसको सजग रखें और उसे पतन से बचाने की कोशिश करें। जनता बचती है कि नहीं बचती यह हमारा दायित्व नहीं है। हमारा दायित्व है कि हम जनता को सजग करें कि इन स्वार्थी, पद–लोलुप लोगों के बहकावे में न आयें। योग्यता के अभाव मे यदि तुम्हे अधिकार मिल भी जायेगा तो उससे तुम्हारा कोई उत्थान नहीं होने का इसलिए स्वयं मे योग्यता के सृजन का प्रयत्न करो। किसी भी देश को, समाज को, जाति को, वर्ग को उन्नत करना हो तो सबसे पहले उसमें योग्यता के सृजन की प्रक्रिया अपनानी चाहिए न कि अधिकार के प्रलोभन देने की। दुर्भाग्य है इस देश का कि जब से भारत स्वतन्त्र हुआ है तब से इस देश के राजनेताओं ने अधिकार का प्रलोभन देकर के अपनी स्वार्थ सिद्धि का ही प्रयत्न किया है, कभी जनता में योग्यता के सृजन का प्रयत्न नहीं किया। उसका परिणाम आज ६५ प्रतिशत से भी अधिक जनता निरक्षर है, अनपढ़ है। मैं आप से निवेदन कर रहा हूं कि यदि आपको कोई मार्गदर्शक नहीं दिखाई दे रहा तो अपने धर्मग्रंथों की तरफ मुड़िए। मैं जानता हूं कि आप सभी वेद नहीं पढ़ सकते, गीता नहीं पढ़ सकते क्योंकि ये संस्कृत में हैं लेकिन आप रामायण तो पढ़ सकते हैं –

नाना पुराण निगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।।

(रा० १/७)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने वेदशास्त्र का सार राम कथा के माध्यम से रामचरित मानस में समझाया है। जीवन की व्यवस्था का, इस के विकास का तथा जीवन में कैसे सुव्यवस्थित समाज की प्रतिष्ठा हो इसका रहस्य समझाया है। आप लोग रामायण के माध्यम से उस रहस्य को समझने का प्रयत्न कीजिए। महात्मा भरत का निर्देश – **चाहिए धरमसील नरनाहू।** यह प्रत्येक देश तथा प्रत्येक समाज के लिए अनिवार्य है।

जब मैं विदेशियों से चर्चा करता हू और उनको बताता हूं कि धर्म का मूल रहस्य त्याग में निहित है तो लोग पूछते हैं कि राम तो माता–पिता की आज्ञा का पालन करके वन को चले गए, राज्य का त्याग कर दिया। जिस माँ की आज्ञा का पालन करते हुए राम जंगल को चले गए उसी माँ को जब भरत आए तो गालियां दीं, अपशब्द कहे, तिरस्कृत किया, त्याग दिया उसे और पिता के प्रति भी कोई बहुत सम्मान युक्त शब्द का प्रयोग नहीं किया। क्या कहा पिता के प्रति? कैकेई को फटकारते हुए भरत कहते हैं –

भूँप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही।
मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही।।

(रा० २/१६२–३)

राजा ने तुम पर विश्वास कैसे कर लिया? फिर कहते हैं कि नहीं, मृत्यु का समय आ गया था इसलिए उसकी बुद्धि विकृत हो गई थी जो उसने तुम पर विश्वास किया। माँ के लिए क्या शब्द प्रयोग करते हैं ?

बर मांगत मन भइ नहिं पीरा।
गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा।।

(रा० २/१६२–२)

वर मांगते समय तुम्हारे मन में पीड़ा नहीं हुई? तुम्हारी जिह्वा गल करके गिर क्यों नहीं गई? तुम्हारे मुख में कीड़े क्यों नहीं पड़ गये? किसके लिए कह रहे हैं? कैकेई के लिए जो उनकी माँ है। माँ की आज्ञा का पालन

करते हुए राम वन को गए। राम परमात्मा हैं, धर्मात्मा हैं। उसी माँ को भरत गालियां दे रहे हैं और पिता की भी उपेक्षा कर रहे हैं। फिर भी उनको महात्मा क्यों कहते हैं? आपके धर्म में माता–पिता की आज्ञा का पालन करना धर्म है या माता–पिता का तिरस्कार करना धर्म है? एक ही उत्तर है मेरे पास कि हमारे इस शाश्वत सनातन धर्म में धर्म का मूल स्वरूप है त्याग–

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।।

(गीता १२/१२)

यह गीता में भगवान् की घोषणा है कि त्याग से बड़ा और कोई धर्म नहीं है। जो दूसरे के हित के लिए अपने सुख–सुविधा का त्याग करता है वही महात्मा है, वही धर्मात्मा है और वही पवित्रात्मा है। आप जानते हो राम ने माता–पिता की आज्ञा का पालन करते हुए क्या किया था? राज्य का दूसरे के लिए त्याग। भरत ने माता–पिता की अवहेलना करते हुए क्या किया था? उसी राज्य का दूसरे के लिए त्याग।

मेरा कहने का अभिप्राय धर्म का मूलाधार त्याग है। धर्म का मूलाधार पूजा–पाठ नहीं है, मन्दिर में जाना नहीं है, तीर्थयात्रा एवं पुस्तकों का पाठ करना नहीं है बल्कि धर्म का मूलाधार है दूसरे के लिए अपने सुख का त्याग करना। जो ऐसा करता है वही धर्मात्मा है। रामचरितमानस में एक नहीं अनेकों स्थानों पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने उस धर्म की व्याख्या की है –

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
निर्नय सकल पुरान बेद कर।
कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर।।

(रा० ७/४१–१,२)

वे कहते हैं कि परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है। पर पीड़ा के समान कोई पाप नहीं है। उन्होंने कहा कि वेद–पुराण का सार मैं तुम्हें समझा रहा हूं, इसको त्रिकालज्ञ ऋषि लोग जानते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने और भी कहा –

परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा।
पर निंदा सम अघ न गरीसा।।

(रा0 ७/१२१–११)

दया धर्म है, परोपकार धर्म है, अहिंसा धर्म है और –

धरमु न दूसर सत्य समाना।
आगम निगम पुरान बखाना।।

(रा0 २/९५–५)

सत्य से बड़ा और कोई धर्म नहीं है, यह वेद, पुराण और शास्त्र कहते हैं। उन लोगों से पूछिए कि समाज की सुव्यवस्था के लिए सत्य की जरूरत है कि नहीं? अहिंसा की, परोपकार की आवश्यकता है कि नहीं? यदि इन सब की आवश्यकता है भले आदमी तो धर्म की जरूरत क्यों नहीं? इन्हीं सब का नाम ही तो धर्म है और धर्म क्या है? मन्दिर जाना या तीर्थ यात्रा करना तो धार्मिक वातावरण उत्पन्न करने की प्रक्रियाएं हैं। जहां कोई पवित्रात्मा बैठकर तप किया हो, साधना किया हो तथा जहां अपने चित्त को साध करके उस Divine power को प्रकट किया हो उस क्षेत्र के वातावरण में एक पवित्र तरंग व्याप्त हो जाती है। उस तरंग के व्याप्त होने से उस स्थान पर जो भी कोई श्रद्धा से जाता है वह उस तरंग को ग्रहण करता है। इसलिए बताया गया है –

तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि सुकर्मीकुर्वन्ति कर्माणि
सच्छास्त्रकुर्वन्ति शास्त्राणि ।।

(ना0भ0सू0 ६९)

वे महात्मा लोग तीर्थ को सुतीर्थ बनाते हैं, कर्म को सुकर्म बनाते हैं, तथा शास्त्र को सद्शास्त्र बनाते हैं। अब आप लोग समझ गए होंगे कि तीर्थों की यात्रा जो हमारे यहां धर्म के लिए बताई गई है, वह पवित्र तरंगों को ग्रहण करने की प्रक्रिया है। जब एक मूर्ति को लाखों आदमी भगवद् दृष्टि से देख रहे हों तो किसी मनोवैज्ञानिक से पूछिए कि उसके मस्तिष्क पर उस समय जो तरंगें बहती हैं जहां उसकी श्रद्धा होती है वहां जाकर केन्द्रीभूत होती हैं कि नहीं? अब यह कल्पना की बात नहीं अब तो पश्चिम के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान करके इसे सिद्ध भी कर दिया है कि एक ही पदार्थ को घंटों तक देखते रहने से नेत्रों से एक तरंग निकलती है वो जाकर उस पदार्थ से युक्त हो जाती है और युक्त हो करके केन्द्रीभूत हो जाती है। उसी में आपकी भावनानुसार एक स्वरूप प्रकट हो जाता है। जहां हज़ारों व्यक्तियों की वृत्ति एक स्थान पर हो वहां कितनी सद्भावमय तरंगें केन्द्रीभूत होंगी इसकी ज़रा आप कल्पना कर लीजिए। उसी को हमारे यहां तीर्थ कह देते हैं। वहां जो भी आदमी जायेगा उन तरंगों से लाभान्वित होगा। वो तरंगें उसे अभिभूत करेंगी। उसमें एक सात्त्विक वातावरण आयेगा। आप याद रखें कि तीर्थ स्थान शरीर को ही पवित्र नहीं रखते बल्कि मन की पवित्रता के भी साधन हैं। आपका मन जो पवित्र होता है वह शुद्ध तरंगों के द्वारा होता है। आपके जीवन की सारी प्रक्रिया इसी से चलती है। आपका सूक्ष्म शरीर तरंगमयी शरीर है यह स्थूल शरीर नहीं है। इसलिए मैं बता रहा था कि तीर्थों पर जाना भी धर्म के संस्कार की जागृति का एक माध्यम है लेकिन ये सब धर्म नहीं हैं धर्म की भूमिका है, उससे आपको धर्मात्मा बनने में सहायता मिलती है। आप कामात्मा वा पापात्मा से मुक्त हो धीरे-धीरे धर्मात्मा बन जाते हैं। जो कामात्मा हैं वो समाज के लिए अभिशाप हैं। कामात्मा कौन है जानते हो? गीता के दूसरे अध्याय में ही भगवान् ने कामात्मा को बुद्धिहीन व्यक्ति कहा है –

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।
(गीता २/४३,४४)

कहा कि 'तयापहृत चेतसाम्' जो कामात्मा हैं उनकी बुद्धि मारी गई है। आप कामात्मा न बनें, धर्मात्मा बनें, महात्मा बनें। यदि आप कामात्मा नहीं बनेंगे तो धर्मात्मा बनेंगे, महात्मा बनेंगे और अन्त में आप परमात्मा बनेंगे, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है। गीता का यही संदेश है। भगवान् ने एक नहीं अनेकों स्थानों पर यह बात समझाई है –

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।।
(गीता १४/२)

बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।।
(गीता ४/१०)

'ज्ञान के तप से पवित्र होकर बहुत सी आत्मायें मेरे भाव को प्राप्त हो गई हैं।' ईश्वर भाव को प्राप्त करना ही हमारे जीवन का परम लक्ष्य है। भगवद् भाव को प्राप्त करना, मानव का भगवद् रूप में प्रतिष्ठित होना, जीव का शिव रूप में अवस्थित होना, नर का नारायण रूप में अवस्थित होना, यह हमारे यहां सनातन धर्म का लक्ष्य है। भगवान् ने इस बात को अनेकों बार दुहराया है गीता में। उस प्रक्रिया में सबसे पहले आपको धर्मात्मा बनना पड़ेगा। धर्मात्मा बन कर ही आप महात्मा बन सकते हैं। दूसरी श्रेणी है महात्मा की। धर्मात्मा के लक्षण हैं –

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः।
(गीता १८/२)

काम्य कर्मों का त्याग तथा निष्काम भाव से कर्म में प्रवृत्ति, ये तो धर्मात्मा के लक्षण हैं। महात्मा किसे कहते हैं? भगवान् ने गीता में कहा है –

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।।

(गीता ९/१३)

जो दैवी प्रकृति के आश्रित हैं वो महात्मा हैं। दैवी प्रकृति क्या है? सोलहवें अध्याय के प्रारम्भ में भगवान् ने दैवी प्रकृति के २६ गुण बताये हैं–

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीचापलम्।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत।।

(गीता १६/१,२,३)

जो दैवी प्रकृति में स्थित है और अनन्य भाव से जो विराट् पुरुष में आस्था रखता हुआ विराट् पुरुष की साधना मे तत्पर रहता है और जिसको यह बोध हो गया है कि यह सारा जगत् परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है, वह महात्मा है। वेद उसकी घोषणा करता है –

पुरुषऽएवेदं सर्व्वं यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्।

(पु0सू0 २)

उसको उसने प्रत्यक्ष किया है, देखा है।

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।

(ईशा0–७)

जिस अवस्था में योगी महात्मा ऐसा अनुभव कर लेता है कि एक

ही आत्मा अनेक रूपों में प्रकट हुई है, यजुर्वेद कहता है कि उसको मोह कहां से होगा, शोक किसके लिए होगा? वह तो एकत्व का ही दर्शन कर रहा है, एकत्व का दर्शन करने वाला ही महात्मा है। एकत्व के दर्शन की अभिलाषा लेकर के कामनाओं एवं काम्य कर्मों का त्याग करके कार्य कर्मों का अनुष्ठान करने वाला धर्मात्मा और शुद्ध चित्त की अवस्था में उस परमात्म तत्त्व को सर्वरूपों में देखते हुए उसी में अवस्थित रहने की स्थिति में पहुंचा हुआ व्यक्ति महात्मा है। जब वह शरीर छोड़ेगा तो परमात्मा में लीन हो करके परमात्मा बन जायेगा। कैसे परमात्मा बनेगा इसके लिए उपनिषदें कहती हैं –

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे
ऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः
परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।।
(मुण्डक० ३/२–८)

गंगा नदी जहां बहती है अनेकों नदियां उसमें मिल रही हैं, अनेकों नाले उसमें मिल रहे हैं और गंगा होते जा रहे हैं। इसी रूप में जब गंगा गंगासागर में मिल जाती है तो वहां गंगा का न नाम रहता है और न रूप रहता है। वहां पर फिर क्या होता है? सागर होता है। जैसे गंगा अपने नाम–रूप से विमुक्त होकर सागर रूप में परिणत हो जाती है इसी रूप से वेद कहता है कि यह जीव जब अपने आपको शिव में समर्पित कर देता है तो शिव स्वरूप हो जाता है। उसका फिर अलग अस्तित्त्व नहीं रहता। उस अवस्था में वह परमात्मा बन जाता है –

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
(गीता १८/५४)

गीता के दूसरे अध्याय में भगवान् ने बताया –

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।

स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।।

(गीता २/७२)

यह ब्राह्मी स्थिति है। जो ब्राह्मी स्थिति में रहने वाला महात्मा है वह शरीर छोड़कर के ब्रह्म में लीन हो ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। मैं आप लोगों को यह बता रहा था कि भारतीय जीवन विधान में सर्वप्रथम आप अधर्म से मुक्त होकर धर्मात्मा बनिए। धर्मात्मा के पश्चात् फिर साधना में क्रमशः आप महात्मा बनें, महात्मा बनने के पश्चात् फिर आप शरीर छूटने के बाद परमात्मा बन जायेंगे, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है। श्रुति कहती है –

न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते।

गीता में भगवान् ने स्वयं कहा है –

यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

(गीता १५/६)

तुलसीदास जी ने धर्मात्माओं के लिए क्या कहा? उन्होंने घोषणा की कि जो धर्मात्मा हैं वे –

सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं।

(रा० ७/१५–४)

देवताओं के लिए जो दुर्लभ है उस सुख का भोग वे इस जीवन में करते हैं मरने के बाद नहीं। एक बार मैं इंग्लैंड में अपने आश्रम में बैठा हुआ था। एक पादरी मेरे पास आ गया। आजकल इंग्लैंड, अमेरिका और यूरोप के देशों में चर्चें खाली हो रही हैं, चर्चों में कोई जाना पसंद नहीं करता क्योंकि अन्धविश्वास से लोग ऊब गए हैं। जहां हम लोगों के आश्रम हैं वहां लोग आते हैं योग सीखते हैं और दर्शन पढ़ते हैं। योग और दर्शन का प्रचार करने के लिए हमने जगह–जगह पर केन्द्र खोले हैं। पादरी आया और मेरे से कहने लगा कि हमारे चर्च तो खाली हो रहे हैं और आप लोग नये–नये आश्रम बना रहे हैं। रहस्य क्या है? क्या आपके पास यहां लोग आते हैं? हम

कहा कि बहुत आते हैं। देखते रहो बैठे रहो, अभी देखों कितने लोग आते हैं। उसने कहा कि आप कौन सी सीख देते हो जो आपके पास लोग आते हैं और हमारे पास आजकल नहीं आ रहे? मैंने उससे कहा कि बात यह है कि तुम लोगों को बताते हो कि Christ में विश्वास करो, Last Date में विश्वास करो, बाईबिल में विश्वास करो, Christ के बाप में विश्वास करो और एक पवित्रात्मा है उसमें विश्वास करो। पांचों में विश्वास करो तो मरने के पश्चात् तुम्हें स्वर्ग मिलेगा। बोले हां, हम तो यही सीख देते हैं। वो भी स्वर्ग कब मिलेगा? मरने के बाद, तुरन्त नहीं मिलेगा। मर करके पहले कब्र में पड़े रहो। जब न्याय का दिन आयेगा तब परमात्मा ने यदि मोहर लगा दिया तो स्वर्ग भेज देगा नहीं तो नरक में धकेल देगा। यही तुम्हारी सीख है? बोले हां। हम कहा कि आजकल वैज्ञानिक युग में किसको इतनी फुर्सत है कि पहले तो वह मरे, मर करके सड़े और सड़ने के पश्चात पता नहीं कब उसका Judgement Day आवे, कब वो बुलावें तथा कब उसे स्वर्ग भेजें? इतने लम्बे समय तक के लिए कौन स्वर्ग जाने के लिए इन्तज़ार करेगा? कहा कि फिर आप क्या सिखाते हो? हम कहा कि हम उन्हें बताते हैं कि तुम्हें मरने के बाद स्वर्ग जाना हो तो चर्च में जाओ। मेरे पास उसकी Agency नहीं है। हम तुम्हें स्वर्ग नहीं भेज सकते। यदि तुम्हें जीते जी स्वर्गीय सुख भोगना हो तो मेरे पास आओ। उसकी कला मैं तुम्हें बताऊंगा। वह स्वर्गीय सुख तुम्हें इस जीवन में सुख देगा और मरने के बाद भी तुम्हारे लिए मोक्ष बिल्कुल निश्चित है। गोस्वामी जी की घोषणा है –

सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं।
अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं।।

(रा0 ७/१५–४)

देवताओं के लिए जो दुर्लभ सुख है उस सुख को इसी लोक में रहता हुए मनुष्य उपभोग करता है और मरने के पश्चात उसे साक्षात् मोक्ष

की प्राप्ति होती है, भगवद् धाम की प्राप्ति हो जाती है और वह भगवद् स्वरूप को प्राप्त हो जाता है। यह केवल आस्था नहीं है, मेरे पास बैठकर वैज्ञानिक दृष्टि से तुम इसे समझ सकते हो। मेरे कहने का अभिप्राय शाश्वत सनातन धर्म विवेक सम्मत धर्म है, बुद्धि सम्मत धर्म है, उसमें अन्धविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं है।

याद रखो यदि किसी को लगता हो कि सनातन धर्म में कहीं अन्धविश्वास के लिए स्थान है तो बड़े प्रेम से मेरे पास आइये। आपके पास जितने तर्क हों सब इक्टठा करके ले आइये। आपको सुन्दर समाधान मिल जायेगा। यदि विज्ञान को आप जानते हैं तो विज्ञान की दृष्टि से, यदि विज्ञान नहीं जानते दर्शन जानते हैं तो दर्शन की दृष्टि से समझ लीजिए आप। यहां कहीं भी अन्धविश्वास के लिए स्थान नहीं है। हमारे धर्म की प्रतिष्ठा ऋषियों ने की है। यह आर्ष धर्म कहा जाता है। आर्ष धर्म माने ऋषियों द्वारा प्रतिष्ठित धर्म। ऋषि वे थे जिन्होंने सत्य का दर्शन किया था।

ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः।

हमारे यहां यह नहीं है कि इसको मानो। हम कहते हैं कि तुम्हें यह जान लेना चाहिए। तुलसीदास जी की घोषणा है कि हमने सीता–राममय इस जगत् को माना नहीं है –

सीय राममय सब जग जानी।

(रा० १/८/२)

उन्होंने कहा कि मैंने इस जगत् को जाना है कि यह जगत् सीताराममय है। सीता को उन्होंने देखा तो कहा कि यह प्रकृति है और राम को उन्होंने पुरुष कहा। इन्हें विज्ञान की दृष्टि से क्या कहते हैं ? Energy and Spirit. Energy Sita and Spirit is Rama. उस परम चेतन को राम कहते हैं इसलिए–

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते।।

(श्रीरामपूर्वतापिन्य० १/६)

वह राम है उसकी पराशक्ति परमेश्वरी सीता है जिसके बारे में तुलसीदास जी ने लिखा है –

जासु अंस उपजहिं गुनखानी।
अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी।।
भृकुटि बिलास जासु जग होई।
राम बाम दिसि सीता सोई।।

(रा० १/१४८/३–४)

राम परब्रह्म परमात्मा परम चैतन्यघन सच्चिदानन्द हैं और सीता समष्टि सृष्टि की आधारभूता –

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

(रा० १ श्लोक ५)

वह परमेश्वरी पराशक्ति Energy है। बुद्धि से लेकर स्थूल शरीर तक सीता है। इसमें रमण करने वाले या प्रकाशित होने वाले राम हैं। सृष्टि में जहां कहीं दिखाई देगा यही दोनों दिखाई देंगे तीसरा तत्त्व कोई दिखाई नहीं देगा। दर्शनशास्त्र कहता है – **चित्त चितेर न तृतीयो**। एक चित्त तत्त्व है, दूसरा अचित्त तत्त्व है, तीसरा कोई तत्त्व है ही नहीं। अचित्त तत्त्व सदैव चित्त तत्त्व के अधीन होता है इसलिए वह अद्वैत कहा जाता है क्योंकि अचित्त तत्त्व का अलग कोई अस्तित्त्व है ही नहीं। तुलसीदास जी ने इसलिए लिखा–

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न।।

(रा० १/१८)

कहने के लिए भिन्न हैं वो वास्तव में भिन्न नहीं हैं। आजकल के वैज्ञानिकों से पूछिए क्या Energy Spirit से भिन्न है? क्या कोई ऐसा साधन है तुम्हारे यहां जो Energy और Spirit को अलग–अलग करके दिखा दे? क्या Energy Spirit है? नहीं । Energy is not the cause of Consciousness. Energy is insentient and Consciousness is sentient. Whatever is senient that cannot be effect of insenient Energy. यह बिल्कुल सत्य है कि जो चेतन है वह कभी भी जड़ का कार्य नहीं हो सकता। प्रकृति जड़ है इसमें कोई संदेह नहीं। वह गुणात्मक है, चेतन ज्ञानात्मक है। गुण सदा ज्ञान के अधीन रहता है इसलिए गुण की अलग सत्ता नहीं है। सत्ता तो ज्ञान की है इसलिए वह अद्वैत कहा जाता है। अद्वैत होते हुए भी वह द्वैत है। जब सृष्टि काल में आता है तब वह द्वैत हो जाता है और जब अव्यक्तावस्था में रहता है तो द्वैत हो जाता है। गीता की यही घोषणा है –

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।।

(गीता २/२८)

इसलिए ज्ञान विज्ञान के द्वारा अनुसंधानित उस परम तत्त्व के आश्रित जीवन विकास की वैज्ञानिक प्रक्रिया के प्रकाश में प्रतिष्ठित शाश्वत सनातन धर्म एक मात्र दुनिया का धर्म है। जहां भी कहीं मानव है, उसके लिए इससे श्रेष्ठ और कोई साधन नहीं है। हां पूजा की पद्धतियां अनेक हो सकती हैं। आप अपने विश्वास को कहीं भी लगाईए, उससे हमारा कोई मतलब नहीं है। आप किसमें विश्वास करते हैं, इससे हमारा कोई मतलब नहीं है। सनातन धर्म कहता है कि आप क्या जानते हैं इससे हमारा मतलब है, आप क्या मानते हैं इससे हमारा कोई मतलब नहीं है। मानना आपकी अपनी मान्यता के ऊपर है। मानना आपके मन का विषय है, जानना आपकी आत्मा का धर्म है। यदि आप आत्म धर्म समझना चाहते हैं तो आपको जानना होगा।

यदि आप आत्म धर्म में नहीं अनात्म धर्म में आस्था रखते हैं तो आप मान करके जीते रहिए हमें कोई आपत्ति नहीं है। याद रखो बिना जाने मानना आपको ऐसे अंधे कुंए में धकेलेगा कि जहा से निकलना आपके लिए असम्भव हो ज़ाएगा। यह वेद की घोषणा है –

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया ँ रतः।।
अन्यदेवाहुर्विद्ययाऽन्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।

(ईशा0/९,१०)

इसलिए वेद कहता है –

विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यायामृतमश्नुते।।

(ईशा0/११)

मेरा कहने का अभिप्राय कि बिना जाने मानने की प्रवृत्ति मनुष्य को गर्त में गिराती है। हां यदि जानने के लिए प्रथम आप कुछ मान लेते हैं तो हानिकारक नहीं है। जैसे एक गणित का विद्यार्थी किसी प्रश्न को हल करने के लिए कुछ नम्बरों का स्वीकार करता है, मान लेता है। स्वीकृति के आधार पर वह अपने गणित के सवाल को हल कर लेता है। ऐसे ही यदि जानने के लिए आप कुछ मानते हैं प्रारम्भ में तो हानिकारक नहीं है। यदि मान करके आप बैठ जाते हैं तो आपका जीवन अन्धकार से कभी बाहर नहीं हो सकेगा, याद रखो। इसलिए शाश्वत सनातन धर्म की घोषणा है –

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

ज्ञान के समान पवित्र करने वाला दूसरा दुनिया में कोई नहीं है। और –

बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।।

(गीता ४/१०)

भगवान् ने कहा कि ज्ञान के द्वारा पवित्र होकर के ही मनुष्य मेरे भाव अर्थात् भगवद् भाव को प्राप्त किया है।

आप लोगों से भी निवेदन करूंगा कि धर्म के आश्रय से अधर्म का त्याग कर पहले आप अपने जीवन में धर्मात्मा बनें फिर महात्मा बनें और शरीर छोड़ने के बाद परमात्मा बन जायेंगे, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं। यही सनातन धर्म का मुख्य संदेश है। इन्हीं शब्दों के साथ आज का प्रवचन यहीं विश्राम पाता है।

हरि ऊँ तत्सत्

२

परावर रूप में उपस्थित मेरी प्रिय आत्माओ!

करुणानिधान भगवान् की करुणा आप सभी के लिए सदैव कल्याण का सृजन करती रहे, यह मेरी आन्तरिक शुभ कामना। शाश्वत सनातन धर्म और उसके मूलभूत सिद्धान्तों के बारे में आपसे चर्चा कर रहा हूँ।

पहले भौतिक विज्ञानियों ने जो पुरानी बाईबिल के आधार पर सृष्टि की कल्पना करते थे, यह निश्चय किया था कि यह सारी मानवीय सृष्टि लगभग ६000 वर्ष पुरानी है। बाद में जब खोज करने लगे तो उनको दो लाख वर्ष के पुराने अवशेष मिलने लगे। फिर उन्होंने कहा कि नहीं यह सृष्टि उससे बहुत पुरानी है। पटना म्यूज़ियम में एक चीड़ का वृक्ष रखा हुआ है जो ५३′ लम्बा है। वैज्ञानिकों ने उसकी खोज की तो कहा कि यह चार करोड़ वर्ष का पुराना है। मध्यप्रदेश के एक जिले शहडोल में एक सागवान का पेड़ मिला जो पत्थर रूप में परिणत हो गया था। वैज्ञानिकों ने जब उसका अनुसंधान किया तो कहा कि यह ६१/२ करोड़ वर्ष का पुराना है। अब लोगों को यह बात समझ आने लगी होगी कि मानवीय सृष्टि हज़ार या लाख वर्षों में नहीं गिनी जा सकती, वह तो करोड़ों वर्षों की पुरानी है।

हमारे यहाँ सनातन धर्म की प्रक्रिया में युगों की प्रतिष्ठा है। यह युग प्रारम्भ होता है सतयुग से जिसकी आयु सतरह लाख अठाईस हज़ार वर्ष की है। उसके बाद आता है त्रेता जिसकी आयु बारह लाख छिआनवें हज़ार वर्ष की है। त्रेता के पश्चात् द्वापर युग आता है जो आठ लाख चौंसठ हज़ार

वर्ष का है। उसके पश्चात् कलियुग आता है जिसके अभी तक पांच हज़ार दो सौ कुछ वर्ष बीते हैं। यदि सतयुग से मानवीय सृष्टि की गणना की जाए तब भी लाखों वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर मानव का आविर्भाव हुआ, ऐसा मानना पड़ेगा।

पश्चिम के लोगों ने कहा कि जब मनुष्य पैदा हुआ तो वह असभ्य, अज्ञानी और मूर्ख था। उसको कुछ पता नहीं था। वह पहले पत्थरों से मारकर पशु खाता था। बाद में पत्थरों को घिस करके औजार बनाए तो वह औजारों से मारकर पशु खाने लगा। धीरे–धीरे उसमे विकास की प्रक्रिया आई तो वह मनुष्य बना और सभ्य बना। डारविन के सिद्धान्तों के अनुसार मनुष्य एक सेल के प्राणी से विकसित होता हुआ धीरे–धीरे पहले बन्दर बना। बन्दर की पूंछ घिस गई तो वह मनुष्य बन गया। जब वह मनुष्य बन गया तो वह असभ्य था। उसकी कोई भाषा नहीं थी। धीरे–धीरे उसमें भाषा का विकास हो गया। धीरे–धीरे की कोई सीमा है? कोई सीमा नहीं। मानवीय विकास की प्रक्रिया के रूप में पश्चिम के सिद्धान्त आज भी दुर्भाग्य से हमारे स्कूलों में पढ़ाए जाते हैं। वैदिक विज्ञान जो दुनिया का प्राचीनतम ग्रन्थ है उसमें मनुष्य की उत्पत्ति का क्रम बड़ा ही वैज्ञानिक है। दुनिया का सबसे पुराना मानवीय भावों की अभिव्यक्ति का कोई मूर्त रूप है तो वेद है।

वेद कितना पुराना है, इसके विषय में आज तक किसी ने निश्चित बात नहीं बताई। पश्चिमी विद्वानों ने कहा कि वेद ढ़ाई हज़ार वर्ष का पुराना है। एक ने और छलांग लगाई तो कहा कि नहीं पांच हज़ार वर्ष पुराना है। एक रॉथ नाम का जर्मन विद्वान् हुआ है, उसने कहा है कि वेद सात हज़ार वर्ष का पुराना है। मैंने उन पाश्चात्य विद्वानों से कहा कि तुम्हारी स्थिति मेंढ़क की है।

एक बार दुर्भाग्य से समुद्र का मेंढ़क तालाब में गिर गया। वह बहुत बड़ा मेंढ़क था इसलिए तालाब के सभी मेंढ़क इक्टठा होकर आए और पूछने

लगे कहां से आए? कहा कि समुद्र से। पूछा कि समुद्र कितना बड़ा है? उसने कहा कि बहुत बड़ा है। दूसरे मेंढ़क ने छलांग लगाई कि इतना बड़ा है? बोले नहीं, बहुत बड़ा। बारी–बारी सभी छलांग लगाते रहे अन्त में जो सबसे बड़ा मेंढ़क था उसने इस पार से उस पार तक छलांग लगाई और पूछा कि इतना बड़ा है? उसने कहा कि नहीं, वह तो बहुत बड़ा है। वे बोले कि तुम झूठ बोलते हो। इससे बड़ा तो कुछ हो ही नहीं सकता। मेरे कहने का अभिप्राय कि पहले पश्चिम के विद्वानों ने पुरानी बाईबिल में पढ़ा था कि आज से छः हज़ार वर्ष पहले इब्राहिम का जन्म हुआ। इब्राहिम सृष्टि का पहला आदमी था। इब्राहिम के पश्चात डेविड हुआ, फिर मोसेस हुआ, मोसेस के पश्चात ईसा हुआ, इस प्रकार परम्परा आगे चली। उन्होंने अपनी कल्पना के घोड़े दौढ़ाए और वे ६००० वर्ष से ऊपर नहीं गए। अब आपको थोड़ी सी और बात मैं बताऊँ।

ऋग्वेद में सरस्वती नदी पर हज़ारों मन्त्र लिखे गए हैं। सरस्वती नदी को लुप्त हुए बहुत वर्ष बीत गए हैं। पश्चिम के वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान करके बताया कि सरस्वती नदी ७२००० वर्ष पहले और सवा लाख वर्ष के बीच में कभी लुप्त हुई है। मैंने उन बुद्धिमानों से कहा कि यदि तुम यह मान लो कि ७२००० वर्ष पहले सरस्वती नदी लुप्त हुई है तो लुप्त होने पर तो कोई सरस्वती की महिमा नहीं गाएगा। जहां पर ऋषि कहता है –

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।

(ऋग्वेद २/४१–१६)

हे सरस्वती! तूं मेरी मां है, तू मेरी देवी है, तू मेरी नदी है।'' यह वो किसी बहती हुई नदी को कहेगा या सूखी नदी को कहेगा? कहा कि नहीं वह तो बहती हुई नदी को कहेगा। जब तुम्हारा वैज्ञानिक कह रहा है कि उसको सूखे ७२००० वर्ष हुए हैं तो इसका अभिप्राय वेद की रचना इससे पूर्व हुई है। तो तुम्हारी कल्पना के अनुसार वेद लाखों वर्ष का पुराना हो गया। हमारी

विचारधारानुसार वेद अनादि है अपौरुषेय है।

मनुष्य की उत्पत्ति का क्रम भी बहुत वैज्ञानिक है। प्रथम मनुष्य जब पैदा हुआ तो वह ज्ञान–विज्ञान से युक्त था। वो जड़ नहीं था, मूर्ख नहीं था, अज्ञानी नहीं था बल्कि वह पूर्ण प्रज्ञ था क्योंकि सृष्टि का आधार सतोगुण है तमोगुण नहीं है। तमोगुण में जड़ता होती है सतोगुण में प्रकाश होता है। मैंने वैज्ञानिकों से पूछा कि सृष्टि का मूलाधार कारण तत्त्व है या स्थूल तत्त्व? उन्होंने कहा कि कारण तत्त्व। प्रकृति का कारण स्वरूप तो प्रकाशमय है। प्रकाशमय में अज्ञानता कहां से उत्पन्न हो जाएगी? इसीलिए सृष्टि का प्रथम पुरुष पूर्ण ज्ञानी था, पूर्ण प्रज्ञ था। पूर्ण प्रज्ञ सृष्टि में जो पुरुष पैदा हुआ उसी के प्रकाश में ज्ञान का विकास हुआ और तीन तत्त्व उस मनुष्य के साथ जुड़े। कौन–कौन से? उसने बताया –

इला सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।

(ऋग्वेद १/३–९/५/५/८)

इला, सरस्वती और मही, ये तीन तत्त्व थे। एक भाषा थी उसकी, एक जहां वह पैदा हुआ उसकी भूमि और तीसरा उसका संस्कारमय प्रकाश था। ये तीनों उसके साथ जुड़े हुए थे। गीता के दसवें अध्याय में कहा है –

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।।

(गीता १०/६)

''सप्त ऋषि और चार मनु, ये मेरे संकल्प से उत्पन होने वाले, 'मद्भावा' माने मेरी सत्ता से उत्पन्न होने वाली मेरी मानसिक सन्तानें हैं।'' इन्हीं से सारी सृष्टि पैदा हुई है।

वेद कहता है कि मनुष्य जब पैदा हुआ तो उसके साथ ही उसका धर्म पैदा हुआ। कैसे? कहा कि जब अग्नि जलती है तो अग्नि के साथ ही अग्नि का धर्म पैदा होता है या पहले अग्नि जलती है बाद में उसका धर्म

प्रकट होता है। अग्नि का धर्म क्या है ? प्रकाश, उष्णता और शक्ति, ये अग्नि के धर्म हैं। जहां अग्नि होगी वहां प्रकाश होगा, जहां अग्नि होगी वहां पर उष्णता होगी और जहां अग्नि होगी वहां पर शक्ति होगी। आप जो चलते, फिरते, खाते, पीते, डोलते और काम करते हैं, यह किसके नाते है? यदि आपका Temperature ९८^0 से कम हो जाए ९५^0 या ९६^0 हो जाए तो आप उठ–बैठ सकते हैं क्या? नहीं। आपमें गति होगी क्या? नहीं होगी। आपके चेहरे पर तेज होगा क्या? नहीं होगा। धीरे–धीरे आप समाप्त हो जायेंगे। जहां अग्नि होगी वहां ये तीन तत्त्व होंगे – प्रकाश, उष्णता और प्ररेणा शक्ति (क्रिया शक्ति)। अब आप समझिए कि जब प्रथम मनुष्य पैदा हुआ तो उसमें ये तीनों तत्त्व थे। इन तीनों तत्त्वों से युक्त उसकी जो जीवन प्रक्रिया आगे बढ़ी, उसी को कहते हैं धर्म। मनुष्य जब पैदा हुआ तो उस का अपना धर्म भी साथ पैदा हुआ। यह नहीं कि पहले मनुष्य पैदा हुआ और बाद में उसने धर्म स्वीकार किया।

यह बात याद रखिए धर्म स्वीकार नहीं किया जाता, धर्म माना नहीं जाता, धर्म जाना जाता है। आजकल जो धर्म परिवर्तन हो रहा है, वह धर्म परिवर्तन नहीं है। धर्म को कोई परिवर्तित कर ही नहीं सकता। धर्म कैसे परिवर्तित होगा? धर्म तो नित्य है, सनातन है, वह कभी परिवर्तित हो सकता है? कभी नहीं। फिर यह जो धर्म परिवर्तन के नाम पर अज्ञानता का प्रदर्शन हो रहा है, यह अविद्या का परिणाम है। यह सब पाखंड है। धर्म कभी परिवर्तित नहीं होता। मनुष्य है मनुष्य का अपना धर्म है। वह मनुष्य जहां भी रहेगा वहां उसका धर्म सदा साथ रहेगा। मैं एक तिहाई दुनिया घूमा हूं। जहां भी मैं गया वहां मुझे मनुष्य मिला और मनुष्य का अपना धर्म मिला। मनुष्य का धर्म सनातन है।

अब मेरे से सनातन धर्म का स्वरूप समझिए। वेद कहता है कि मनुष्य के पास तीन प्रकार की शक्तियां हैं– बुद्धि, मन और इन्द्रिया। इन्द्रियां

कर्म के लिए, मन भाव के लिए और बुद्धि शक्ति विचार के लिए है। इन तीनों से युक्त होता है मनुष्य। इन तीनों के लिए वेद ने तीन आलम्बन दिए हैं। बुद्धि के लिए ज्ञान, हृदय के लिए उपासना और हाथ के लिए कर्म। इसको वेदत्रयी कहते हैं। वेदत्रयी माने कर्म, उपासना और ज्ञान। यह ऊपर से नीचे चलता है या नीचे से ऊपर चलता है? कहा कि विवेकी का ऊपर से नीचे चलता है और जो अविवेकी हैं वे नीचे से ऊपर चलते हैं। पहले काम करते हैं, फिर भाव आता है और फिर बाद में ज्ञान के लिए मरते हैं। जो विवेकशील हैं उनमें पहले ज्ञान का प्रकाश होता है, फिर भाव का जागरण होता है तत्पश्चात वे कर्म में प्रवृत होते हैं। जो ज्ञान के प्रकाश में कर्म में प्रवृत होते हैं, वे धर्मात्मा हैं।

धर्म का विषय नाचना, गाना, ढोल बजाना तथा तालियां पीटना नहीं है। धर्म का विषय है जीवन के विकास की दिशा में आगे बढ़ना। धर्म मनोरंजन का साधन नहीं मनोनिग्रह का, मनोनियमन का साधन है। वह आपको जीव भाव में पड़े रहने के लिए मजबूर नहीं करता। वह आपको जीव से ऊपर उठा कर शिव में पहुंचाने की प्रक्रिया समझाता है इसलिए धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझो। यह सनातन धर्म है, शाश्वत धर्म है और ऋषि प्रणीत धर्म है। किसी अज्ञानी द्वारा फैलाया हुआ मत नहीं है। किसी दम्भी द्वारा प्रस्थापित किया हुआ पाखण्ड रूपी मत नहीं है। तुलसीदास जी के शब्दों में–

दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ।

(रा० ७/९७)

यह पंथ नहीं सनातन धर्म है। पूर्ण वैज्ञानिक रूप से आप इसको समझिए। आपको परमात्मा ने बुद्धि दी है। आप मनुष्य हैं तो बुद्धि के नाते हैं। इन्द्रियां तो पशुओं के भी हैं, मन तो पशुओं के पास भी होता है लेकिन बुद्धि नहीं होती। बुद्धि के नाते आप मनुष्य हैं। यदि आप अपनी बुद्धि का

प्रयोग नहीं करते तो शास्त्र कहता है –

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।

(चाणक्य नीति १०/७)

मनुष्य के रूप में आप पशु जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यदि आप बुद्धि के प्रकाश में अपने हृदय का प्रयोग करते हैं, हृदय के द्वारा आप कर्म में प्रवृत्त हों फिर आप देखिए आपके जीवन में सुख और शान्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा। भगवान् ने गीता में बताया–

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

(गीता २/६६)

जो अयुक्त हैं, असंयमी हैं, जो अपने कारण से जुड़े हुए नहीं हैं, उनके पास विशुद्ध बुद्धि नहीं होती। यह 'कारण' क्या है, यह भी समझ लो। लोग पूछते हैं कि हमारे जीवन विकास में ईश्वर का क्या स्थान है? क्या हमारे कर्मों को ईश्वर बदल देगा? क्या ईश्वर की इच्छा से ही सारे कर्म हो रहे हैं? नहीं। फिर ईश्वर की क्या उपयोगिता है हमारे जीवन के विकास में या समाज की सुव्यवस्था में? इसको आप ध्यान से सुनिए। अभी आपकी समझ में आ जायेगा कि आपको ईश्वर की आवश्यकता है कि नहीं।

आप अपने शरीर की रचना को देखें। यह जो आपका शरीर है, यह तीन रूपों में है– स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर। स्थूल शरीर का आप जागृत अवस्था में प्रयोग करते हैं। जब आप सो जाते हैं तो स्वप्न देखते हैं। स्वप्न में आप जिस शरीर से बात करते हैं, खाते–पीते हैं, भोग करते हैं, रोते हैं और काम भी करते हैं, वह आपका सूक्ष्म शरीर है। स्थूल शरीर तो खाट पर पड़ा होता है। जब आप घोर निद्रा में चले जाते हैं जिसे सुषुप्ति कहते हैं वह कारण शरीर में चले जाना है। कारण शरीर शान्त अवस्था है, उसमें क्रिया नहीं होती। आपको अपने अहं का भी बोध नहीं

होता। दुनिया में क्या हिन्दू ही जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था में जाता है या दुनिया के सारे मनुष्य जाते हैं? दुनिया के सारे मनुष्य जाते हैं इसलिए जिस धर्म की मैं व्याख्या कर रहा हूं, वह मानवमात्र के लिए उपयोगी धर्म है। यह किसी देश से, जाति से, वर्ग से, व्यक्ति से ही सम्बन्धित धर्म नहीं है। सृष्टि में जहा कहीं मानव है उसके लिए केवल एक धर्म है, वह है शाश्वत सनातन धर्म। उस धर्म को आप हिन्दू भी कह सकते हैं। उस धर्म को कोई भी नाम देते रहिए। यह आप जानें आपका काम जाने।

मैं आपको यह समझा रहा था कि आपके तीन शरीर हैं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण। कारण शरीर का मूल रूप है बुद्धि, सूक्ष्म शरीर का मूलाश्रय है मन और स्थूल शरीर का मूलाश्रय है इन्द्रियां और यह देह। सर्वप्रथम बुद्धि का व्यष्टि रूप मे आविर्भाव होता है। वही बुद्धि परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित होती है। प्रकाशित होने पर बुद्धि में बोध का उदय होता है। बोध होने पर उसमें मैं का जाग्रण होता है। बुद्धि में चेतन का प्रकाश पड़ता है तो उसमें बोध आ जाता है। कैसे आ जाता है? जैसे चकमक पत्थर के ऊपर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो उसमें से आग निकलने लगती है। सूर्य की किरणें तो ढ़ेले पर भी पड़ रही हैं, मिट्टी पर भी पड़ रही हैं, पहाड़ पर भी पड़ रही हैं। सब जगह आग क्यों नहीं निकलती? कहा कि सब जगह वह Fine Form में नहीं है, शुद्ध रूप में नहीं है। चकमक पत्थर में ही क्षमता है कि वह सूर्य की किरणों को ग्रहण कर लेता है और वह तेज युक्त हो जाता है। उसमें से चिन्गारियां निकलने लगती हैं। इसी प्रकार से प्रकृति के प्रथम परिणाम बुद्धि में ऐसी क्षमता है कि वो चेतन को ग्रहण कर ले। चेतन के गुण धर्म को ग्रहण कर ले। ग्रहण करके अपने आप में चेतना से युक्त हो जाए। चेतना से युक्त जब आपकी बुद्धि होती है तो जैसे उस चकमक पत्थर से चिंगारी निकलती हैं ऐसे ही आपकी बुद्धि से अहं का आविर्भाव होता है। जब वही अहं शरीर के आकार में आबद्ध होता है तो उसकी संज्ञा होती है

अहंकार। अहकार जब आया तो उसके साथ मम होता है कि यह मेरा है। सबसे पहले मेरी मां, मेरा बाप, मेरी मातृ भूमि या मेरी पितृ भूमि। मैं और मेरा जब ये दोनों बुद्धि के साथ लग गये तो उसको मन कहते हैं। पहले बुद्धि है फिर अहं है और फिर मन है। मन का यह सारा संसार है।

भगवान् कहते हैं कि पहले बुद्धि को उस प्रकाशक के साथ जोड़िए। बुद्धि यदि अधोमुखी हुई तो किसको देखेगी? अहं को। अहं किसको देखेगा? मन को। मन किसको देखेगा? संसार को। मन संसार में फैल जायेगा। संसार में फैला हुआ मन ही दुःख–सुख में कारण बनता है। इसी में आप रोते हो, गाते हो, हंसते हो और खेलते हो, कभी नरक में जाते हो तथा कभी स्वर्ग में जाते हो। 'सदसद्योनिजन्मसु।' (गीता १३/२१) कभी सद् योनियों में तो कभी असद् योनियों में जन्म लेते हैं, यह सब ममाकार का परिणाम है। भगवान् कहते हैं कि जब बुद्धि तुम्हारी युक्त हो जाए, अपने प्रकाशक की तरफ मुंह करले, अहं की तरफ मुंह न करे तो क्या होगा? वह परम प्रकाश से अभिभूत हो जाएगी फिर उसमें अहं का उदय नहीं होगा। अहं यदि होगा तो वह आकार में आबद्ध नहीं होगा। ज्ञानी भी शरीर में रहता है लेकिन वह शरीर में आसक्त नहीं होता। शरीर का प्रयोग तो वह करता है लेकिन शरीर छूट जाए तो उसको दुःख नहीं होता। शरीर यदि बना रहे तो उसे कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि बन्धन और मुक्ति से वह रहित है। अज्ञानी अहंकार में आबद्ध होकर के नीचे गिर जाता है इसीलिए कहते हैं कि वह च्युत हो गया, अपने धर्म से नीचे गिर गया। जब आप अपने कारण की तरफ मुख करेंगे, बुद्धि के प्रकाशक को जब देखेंगे तो वो तो अनन्त है, कहीं सीमा नहीं है उसकी। इस बुद्धि में रमण करने के नाते उसे राम कहते हैं। जब राम दशरथ के यहां नहीं पैदा हुए थे तब भी थे। आप लोग रामायण में पढ़े हैं कि जब मनु और शतरूपा नैमिषारण्य में जाकर तपस्या किए, परब्रह्म परमात्मा को पुकारा तो ब्रह्म जब उनके सामने प्रकट हुआ तो उस

समय क्या नाम था उसका? तुलसीदास जी से पूछिए वे लिखते हैं कि भगवान् जब उनके सामने प्रकट हुए तो वे कहां से आए?

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना।
बिस्वबास प्रगटे भगवाना।।

(रा० १–१४६/८)

विश्वास रूप प्रभु प्रकट हुए। एक सज्जन कहने लगे कि वेद में तो लिखा ही नहीं कि भगवान् प्रकट होते हैं। मैंने कहा कि किस वेद में नहीं लिखा? वेद कहता है –

अजाय मानो बहुधा वि जायते।

(यजुर्वेद ३३/१९)

एक नहीं अनेकों वेद के मन्त्र मैं आपके सामने रख सकता हूं जिसमें बताया गया है कि वह अव्यक्त परमात्मा अभिव्यक्त होता है। पुरुष सूक्त से बड़ा और कोई वेद का सिद्धान्त नहीं है। पुरुष सूक्त स्वयं वेद भगवान् की वाणी है–

ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधि पूरुषः।
स जातोऽत्यरिच्च्यत पश्च्चाद्भूमिमथो पुरः।।

(पु०सू० ५)

वह परमात्मा उस परब्रह्म की ही अभिव्यक्ति है इसलिए वेद कहता है –

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

(ईशा० शान्ति पाठ)

मनु शतरूपा ने प्रार्थना की –

अगुन अखंड अनंत अनादी।
जेहि चिंतहिं परमारथवादी।।

नेति नेति जेहि बेद निरूपा।
निजानन्द निरुपाधि अनूपा।।
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना।
उपजहिं जासु अंस ते नाना।।
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई।
भगत हेतु लीलातनु गहई।।

(रा० १/१४४–४,५,६,७)

वेद जिसके लिए कहता है –

चिन्मयस्यद्वितीयस्य निष्कलस्याशरीरिण:।
उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना।।

(रामपूर्व० १/७)

अपने भक्तों की अमीप्सा को पूर्ण करने के लिए वह परम चैतन्यघन सच्चिदानन्द ब्रह्म निराकार से.नराकार होकर अभिव्यक्त हो जाता है। जब वह प्रकट हुआ तो तुलसीदास जी लिखते हैं –

भक्त बछल प्रभु कृपानिधाना।
बिस्वबास प्रगटे भगवाना।।

(रा० १/१४६–८)

वे भगवान् प्रकट हुए जिनका कण–कण में वास है, जो विश्व में बसे हुए हैं। जब प्रभु प्रकट हुए तो उनका नाम क्या था? तुलसीदास जी लिखते हैं कि वे अकेले प्रकट नहीं हुए। फिर?

बाम भाग सोभति अनुकूला।
आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला।।
जासु अंस उपजहिं गुनखानी।
अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी।।
भृकुटि बिलास जासु जग होई।

राम बाम दिसि सीता सोई।।

(रा0 १/१४८–२,३,४)

जो प्रकट हुए वे राम और वाम भाग में –

उद्‌भव स्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीता नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

(रा01 श्लोक ५)

जो थी उसका नाम था सीता। यह न समझना कि जनकपुर में पैदा हुई तब देवी का नाम सीता पड़ गया। दशरथ के यहां पैदा हुए तब उनका नाम राम पड़ गया। राम और सीता ये शाश्वत सनातन धर्म के महान् तत्त्व हैं। इन्हीं को ब्रह्म कहते हैं। परमात्मा का वह स्वरूप जिसे हम राम कहते हैं, उसकी व्याख्या उपनिषद् करती है–

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।

(श्रीराम. पूर्व0 १/६)

जिसमें योगी लोग रमण करते हैं, जो नित्य आनन्द स्वरूप केवल चिदात्मा है वा शुद्ध चेतन है, उसको राम शब्द से सम्बोधित किया गया है। वह परब्रह्म परमात्मा है, ऐसा श्रुति कहती है। राम क्यों कहते हैं? क्योंकि योगी लोग उसमें रमण करते हैं। योगी जो अपनी चेतना को ऊर्ध्वमुखी करके ब्रह्मचक्र में ले आते हैं, वहां उसको केन्द्रित करते हैं, वह राम है। वह सबका प्रकाशक है। योगी लोग उसी परम प्रकाशक में रमण करते हैं। हम उसे राम कहते हैं तुम कोई और नाम रख लो, हमें उसमें क्या आपत्ति होगी? हमारी भाषा में हमें राम अच्छा लगता है क्योंकि यह धातुज अर्थ रखता है। संस्कृत में कोई एक भी शब्द नहीं है जो निरर्थक हो। उसमें निरर्थक शब्द का प्रयोग नहीं होता। धातु के अनुसार ही उसकी व्याख्या होती है। रमण करने के नाते उसे राम कहते हैं।

सृष्टि में गति देख रहे हो न? गति किसमें है? प्रकृति में। परमात्मा

में तो गति हो नहीं सकती क्योंकि वह तो एक अखण्ड अनन्त है। गति होती है प्रकृति में। जो गति होती है, उसका हेतु क्या है? यह प्रश्न किया गया यजुर्वेद में। गति में दो कारण होते हैं – Pushing and Pulling अर्थात् आगे से खींचें तब गति होती है या पीछे से धक्का दें तब। हवाई जहाज, बैलगाड़ी, ईंजन, ये जड़ पदार्थ हैं। इनमें बड़ी तेज गति होती है। इस गति में हेतु क्या होता है? इन्हें कोई धक्का दे रहा है या कोई आगे खींच रहा है। कल्पना करो आप। कर्मवादियों ने कहा कि नहीं धक्का देने से गति हो रही है। धक्का कौन देता है? कर्म। कर्म पहले बना या व्यक्ति? जब व्यक्ति होगा तभी कर्म करेगा या कर्म पहले पैदा हो गया और व्यक्ति कर्म के फलानुसार बाद में पैदा होता रहा? फिर किसका कर्म था वह? उनके पास कोई उत्तर नहीं। कहा कि नहीं पहले तो व्यक्ति पैदा हुआ। फिर कर्म कहां से धक्का देने के लिए पहुंच गए? पहली बार जो व्यक्ति पैदा हुआ उसका तो कोई कर्म नहीं था। फिर गति में कारण क्या है? आकर्षण। आपके चित्त में जो चेतन प्रकाशित हुआ है, उसी के आकर्षण के नाते आपके शरीर के सारे परमाणु संगठित हैं। जिस दिन वह चेतना लुप्त हो जाएगी, सारे परमाणु बिखर जायेंगे। शरीर को संघात रूप में रखने वाली शक्ति चिदांश है जो आपके ब्रह्मचक्र में प्रकाशित हो रही है। उसी के आकर्षण से ये सब जुड़े हुए हैं। आकर्षण के नाते ही उसकी संज्ञा है कृष्ण। कृष्ण माने ''कर्षयति सः कृष्ण''। जो सारी सृष्टि को अपने आकर्षण में बांधे हुए है, स्तम्भित किए हुए है, उसी के लिए उस परम चैतन्यघन का नाम कृष्ण है। वह सब में रमण कर रहा है, सब उसमें रमण कर रहे हैं इसलिए उसका नाम राम है।

'नारं ज्ञानम्' – नार कहते हैं ज्ञान को। नार ही उसका निवास स्थान है। 'स तस्य अयनं नारायणम्' ज्ञान रूपी नयन में निवास करता है इसलिए उसको नारायण कहते हैं। 'विष् व्यापने' धातु से विष्णु शब्द बनता है। सब में व्याप्त होने के नाते उसे विष्णु कहते हैं। ये जितने नाम हैं परमात्मा

के ये सब धातुज़ नाम हैं। सब साभिप्रायी हैं, साहेतुक हैं। ''जनानां पापानि हरति इति हरि'' हरि उसको इसलिए कहते हैं कि वह अपने भक्तों के पापों को हर लेता है। हर लेता माने नष्ट कर देता है। जैसे अन्धकार को सूर्य हर लेता है, सूर्य को अन्धकार को नष्ट करने में परिश्रम नहीं करना पड़ता –

उदय भानु त्रिभुवन तम भागा।

सूर्य उदय हुआ अन्धकार अपने आप भाग जाता है ऐसे ही परमात्मा का प्रकाश जब आपके ब्रह्मचक्र में प्रकाशित हुआ तो ये सारे पाप–पुण्य की कल्पना ही समाप्त हो जाती है। पाप–पुण्य की कल्पना तो अहंकार के साथ जुड़ी हुई है। तत्त्व में न पाप है न पुण्य है इसलिए गीता के पांचवें अध्याय में भगवान् ने कहा है–

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।।

(गीता ५/१५)

यह पाप, पुण्य की सारी कल्पना अज्ञान तक सीमित है। धर्म आपको इन सारी कल्पनाओं से ऊपर ले जाना चाहता है। शाश्वत सनातन धर्म अपको यह सिखाता है कि आप किस जाति के हो, किस वर्ग, किस सम्प्रदाय और किस मत के हो, इससे कोई लेना–देना नहीं है। आप मनुष्य हो, आपके पास तीन तत्त्व हैं – बुद्धि, हृदय और हाथ, ये जोड़े रहोगे तो इस से दिव्य प्रकाश होगा। दिव्य प्रकाश के द्वारा हृदय में दिव्य भाव होगा। दिव्य भाव के नाते आपके द्वारा दिव्य क्रियाएँ होंगी। दिव्य क्रियाओं के परिणाम स्वरूप यह सारा समाज दिव्य हो जायेगा। जब मनुष्य लोक–कल्याणार्थ, लोक–संग्रहार्थ काम करेगा तो इस सृष्टि में कहीं भी दुःख और दारिद्रय नहीं होगा।

याद रखिए जब कामना से प्रेरित होकर मनुष्य कर्म में प्रवृत्त होता है तो परिणाम में दुःख भोगता है। कामना कहाँ से पैदा होती है? मन से –

काम जानामि ते मूलं संकल्पात् किल जायसे।

(महा0शान्ति0 १७७/२५)

संकल्प से काम का आविर्भाव होता है। संकल्प मन का धर्म है। जब संकल्प से काम उत्पन्न हुआ तो कामना से प्रेरित होकर आपने इन्द्रियों का प्रयोग किया। उसके परिणाम में आपको जो कुछ मिला, आप उसको पकड़ कर बैठ गए। फिर संग्रह की वृत्ति आप में आई। जब संग्रह की वा परिग्रह की वृत्ति आप में आ गई तो आपने वहां से तीन काम शुरू किये। परिग्रही आदमी पहले व्यभिचारी होता है।

व्यभिचारी किसे कहते हैं? जो दूसरे के अधिकार का उपभोग करने की चाह रखता हो, वह व्यभिचारी है। जो अपने अधिकार का उपभोग करता है, वह व्यभिचारी नहीं, ब्रह्मचारी होता है। उपनिषदों में यही बताया गया है। जब आप शरीर में असक्त हुए, कामना की जागृति हुई तो आप में सर्वप्रथम लोभ का जन्म होगा। उससे आप व्यभिचारी वृत्ति में पड़ जायेंगे तो आप संग्रह करेंगे। जब समाज जान लेगा कि आप व्यभिचारी हो तो आपकी निन्दा होने लगेगी। निन्दा मरण से भी बदतर है–

सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।

(गीता २/३४)

रामायण में तुलसीदास जी कहते हैं –

सम्भावित कहुँ अपजस लाहू।
मरन कोटि सम दारुन दाहू।।

पहले आप संग्रही बने, फिर व्यभिचारी तथा तत्पश्चात् चोर बने। जब चोर बनेंगे तो समाज के सामने जो कुछ कहेंगे वो झूठ बोलेंगे। जब ये चार दोष आप में आ गये तो फिर जहाँ मौका मिला तहाँ दूसरे का गला दबाने में आपको कोई दुःख नहीं होगा और आप हिंसक बन जायेंगे। परिग्रह, व्यभिचार, चोरी, असत्य और हिंसा, ये पांचों आपके जीवन में अपने आप आ

जायेंगे, आपको बुलाना नहीं पड़ेगा। धर्म कहता है कि आप इनसे मुक्त हो जाइये। जब आप इन पांचों के शिकार बनते हैं तो केवल अपनी ही हानि नहीं करते बल्कि पूरे समाज में आप नरक पैदा करते हैं। उस समय आप नारकी जीव होते हैं। नारकी जीव जहाँ भी रहेगा नरक पैदा करेगा। आपके जीवन से और आपके आस–पास के वातावरण से सड़ाँध आएगी।

किसी संत के पास आप जाते हैं तो उसका लक्षण क्या है? जिसकी बात सुन करके, जिसके स्वरूप को देख करके, जिसके पास बैठने से मन में एक प्रकार की शान्ति की तरंग उठने लगे तो कहते हैं कि ये संत हैं, महात्मा हैं या धर्मात्मा हैं। जिसके निकट जाने से कामनाओं की वृद्धि होने लगे तो समझ लेना कि यह कोई दुरात्मा है। उस दुरात्मा के संग में आकर दुनिया नरकमय बन जायेगी। इस सृष्टि को नरक वा स्वर्ग बनाना आपके हाथ में है। अपना उत्थान करना वा अपने को गर्त में गिराना आपके हाथ में है। भगवान् ने गीता के छटे अध्याय में स्पष्ट शब्दों में कहा है –

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यत्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

(गीता ६/१५)

मैं तो दुनिया में जहाँ जाता हूँ सभी देशों में मनुष्यों को यही बताता हूँ जो आपको बता रहा हूँ। आपको अपनी भाषा में बता रहा हूँ और वहां उनको उनकी भाषा में बताता हूँ, अन्तर इतना ही है। उनके लिए भी यह उतना ही उपयोगी है जितना आपके लिए है। यह बात जो मैं आपको बता रहा हूँ क्या इसाईयों के लिए उपयोगी नहीं है? क्या मुसलमानों के लिए उपयोगी नहीं है? क्या यहूदी के लिए, पारसी के लिए उपयोगी नहीं है? कोई भी आदमी हो यदि वह मनुष्य है तो उसके लिए उपयोगी है। यह कोई कानून नहीं है कि जो परिग्रही होगा वह हिन्दू होगा या मुसलमान होगा या ईसाई होगा या यहूदी ही होगा। कोई भी हो, मनुष्य में कहीं से दोष आ सकते हैं।

जो अपने कारण से, अपने स्त्रोत से या परमात्मा से जुड़ा हुआ है, वही अपरिग्रही, सदाचारी, चोरी न करने वाला, सत्य–निष्ठ और अहिंसक हो सकेगा।

परमात्मा क्या है? परमात्मा आपके जीवन का स्त्रोत है। बुद्धि से लेकर शरीर तक का स्त्रोत प्रकृति है। बुद्धि को प्रकाशित करने वाला जो चैतन्यघन है, वह परमात्मा है। वह दो नहीं है। जैसे सूर्य और सूर्य की किरणें दो नहीं हैं, ऐसे परमात्मा और जीवात्मा दो नहीं हैं। जैसे सूर्य की किरणों का सूर्य से अलग अस्तित्त्व नहीं है, ऐसे ही परमात्मा से भिन्न जीवात्मा का अस्तित्त्व नहीं है। जैसे प्रत्येक अवस्था में किरण सूर्य से जुड़ी हुई होती है ऐसे ही प्रत्येक अवस्था में जीव शिव से जुड़ा हुआ होता है। अन्तर केवल इतना ही है कि संसारासक्त वा अधोमुखी होने के नाते वह अपने स्त्रोत को, अपने प्रकाशक को, अपने कारण को नहीं जानता। ऊर्ध्वमुखी हो जाए तो अपने प्रकाशक का साक्षात्कार कर लेता है। उसे देखता है, जानता है, समझता है और उसमें लीन हो जाता है। यही बात गीता में भगवान् ने बताई –

ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप।।

(गीता ११/५४)

''वह मुझे जानता है, देखता है और तत्त्वतः मुझ में प्रवेश कर जाता है।'' परमात्मा तुम्हारे से बहुत दूर नहीं है। वह दूर कैसे हो सकता है? दूर तो हो ही नहीं सकता। सृष्टि में जितने जीव हैं सब परमात्मा की ही अभिव्यक्तियां हैं। तुलसीदास जी ने कहा –

सब कर परम प्रकासक जोई।
राम अनादि अवधपति सोई।।

(रा० १/११७–६)

यह तुलसीदास जी ने अपनी तरफ से नहीं कहा। यह वेद की घोषणा है। वेद कहता है–

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं बिभाति।।

(श्वेता० ६/१४)

तुलसीदास जब सिद्धान्त की बात करते हैं तो वेद की बात करते हैं। रामायण की चौपाईयों में वे वेद के मन्त्रों का ही अनुवाद करते हैं। मैं आप लोगों से निवेदन कर रहा था कि शाश्वत सनातन धर्म की सीख है कि आप अपनी बुद्धि को परमात्मा के प्रकाश की तरफ ले जाइये, अधोमुखी मत बनाइये। जब बुद्धि ऊर्ध्वमुखी होगी तो उसके द्वारा जो हृदय में भाव होगा, वो संकुचित नहीं होगा। वहां कामना का जन्म नहीं होगा, वहां भावना का जन्म होगा। कामना और भावना में क्या अन्तर है? इसको पहले मेरे से समझ लो। कामना कब उत्पन्न होती है? जब आप अपने आपमें अभाव या कमी देखते हैं तब। कमी न देखें तो कामना होगी क्या? नहीं होगी। अभाव में उत्पन्न होने वाली तो है कामना और भावना? भावना तो 'भू सत्तायां' धातु से बनी है। जहाँ भाव है, भाव में अभिव्यक्त होने वाली को भावना कहते हैं। कामना में व्यक्ति भिखारी बन जाता है और भावना में व्यक्ति शहनशाह बन जाता है। आपको भिखारी बनना पसंद है या शहनशाह बनना पसन्द है? दुनिया में कोई भिखारी बनना पसंद नहीं करेगा। फिर कामना के गुलाम क्यों बने हो, भाई? भावना के साम्राज्य में आइए। भगवान् कहते हैं भावना तब आयेगी जब बुद्धि परमात्मा से जुड़ी रहेगी–

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

(गीता २/६६)

अयुक्त माने जो परमात्मा से जुड़ा नहीं है। जो अयुक्त है उसमें

सद्बुद्धि नहीं होती और उसमें भावना भी नहीं होगी। वहां तो कामना का साम्राज्य होगा और जहाँ भावना नहीं वहाँ शान्ति नहीं। वहाँ तो अभाव का अनुभव हो रहा है, वहाँ अशान्ति है। वहाँ तो रात–दिन दौड़ लगी हुई है। लोग कहते हैं कि लाईफ बड़ी फास्ट हो गई है। मैंने एक सज्जन से पूछा कि तुम कहते हो कि विज्ञान आ गया और सारी दुनिया बदल गई। क्या बदला इसमें? हमें याद है हमारे बच्चेपन में माताएँ चूल्हें मे लकड़ी जला करके, फूक करके रोटी पकाती थी। आपके यहां भी पकाती होंगी और अब भी पकाती हैं। थोड़े दिन बाद अंगीठी में कोयला डाल कर रोटी पकने लगी, थोड़े दिन बाद मामला अब बदल गया और स्टोप आ गया। राशन का तेल आया, उसमें डाला और रोटी पकने लगी। अब आज कल शहरों में गैस आ गया है, हीटर आ गया है। रोटी पकाने के तरीके में तो अन्तर आया लेकिन रोटी हमारे बाप–दादे भी मुंह से ही खाते थे और हम भी मुंह से खाते हैं। रोटी खाने में तो कोई अन्तर नहीं आया और हज़म करने में तो बिल्कुल अन्तर नहीं आया है। हां, खाने के तरीके में अन्तर आया है। पहले हाथ–पैर धो करके, पलथी मार करके खाना खाते थे। उसके बाद में कुर्सी पर बैठकर खाना शुरू किया बिना हाथ पांव धोए। अब खड़े–खड़े खाते हैं पशुओं की तरह। यह पाशविक प्रवृत्ति तो आ गई लेकिन मनुष्यता चली गई। सिस्टम तो वही रहा, प्रकृति का प्रवाह तो वही बह रही है, उसमें तुम कहाँ से अन्तर करोगे देवता? इसलिए मैं आप लोगों से कह रहा हूँ कि उस शाश्वत धर्म को समझिए। अपने आप को परमात्मा से जोड़ने का क्या लाभ होगा, आप समझ गए होंगे।

धर्म के दो पहलू हैं एक व्यक्तिगत जीवन को सम्मुन्नत बनाने के लिए और दूसरा सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित बनाने के लिए। व्यक्तिगत जीवन को उन्नत बनाने के लिए धर्म के पांच अंग हैं। सामाजिक सुव्यवस्था के लिए भी धर्म के पांच अंग हैं। अभी मैंने बताया है कि आप लोभ में ग्रसित

होकर परिग्रही बनते हैं। परिग्रह किसका करते हैं आप? अपना करते हैं? नहीं, समाज का। दूसरे का ही लेते हैं। परिग्रह समाज से सम्बन्धित है, असत्य समाज से सम्बन्धित है और हिंसा समाज से सम्बन्धित है। इसके विपरीत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ये धर्म से सम्बन्धित हैं। जब समाज के साथ आप अन्याय करते हैं, विपरीत आचरण करते हैं तो आप अधर्मी बनते हैं। जब समाज के साथ न्याय का व्यवहार करते हैं तो आप धर्मात्मा बनते हैं। आज कल के नेता धर्मात्मा होने को बुरा क्यों मानते हैं? इसलिए कि आखिर हैं तो वे भारतीय ही। उनको पता है कि धर्म को मानोगे तो पाप–पुण्य को मानना पड़ेगा। पाप–पुण्य को मानोगे तो जनता को लूटोगे कैसे ? फिर नरक का भय होगा। नरक का भय न हो इसलिए जैसे बिल्ली आती देख करके कबूतर ने आँख बन्द कर ली कि अब बिल्ली मुझे नहीं देख रही ऐसे ही हमारे वर्तमान के राजनेता सोच रहे हैं कि धर्म को हम नहीं मानेंगे तो इस पाप के परिणाम से बच जायेंगे। उन बुद्धिमानों को पता नहीं है कि जैसे कबूतर के आँख बन्द कर लेने से बिल्ली की आँख बन्द नहीं होती, वो तो उसको झपट कर खा जाती है ऐसे ही तुम्हारे धर्म–निरपेक्ष की घोषणा करने से तुम पाप के परिणामों से बच नहीं सकते। याद रखो जिस भोली–भाली जनता को तुम लूट रहे हो, जिसके सत्त्व का अपहरण कर रहे हो, जिसके अधिकार का तुम दुरुपयोग और उपभोग कर रहे हो, उसकी आह तुम्हें गर्त में डाल देगी। दुनिया की कोई शक्ति तुम्हें पाप से बचा नहीं सकती। तुम चाहे धर्म–निरपेक्ष बन जाओ चाहे धर्म को बहिष्कृत करके तुम यहाँ से कहीं दूसरे लोक में पहुंचा दो लेकिन धर्म तो यहीं रहेगा। वह शाश्वत है, सनातन है, अविनाशी है। पाप की करनी तुम्हारी तुम्हें अवश्य दण्ड देगी, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है।

मैं आप लोगों को बता रहा था कि धर्म के रास्ते पर चलो और समाज के साथ न्याय का व्यवहार करो। परिग्रही मत बनो, व्यभिचारी मत

बनो, चोर मत बनो, असत्यवादी मत बनो और हिंसक मत बनो। यदि तुम्हारे में एक दोष आया तो ये पांचों अपने आप ही आ जायेंगे इसलिए सावधान हो जाओ। दूसरी दिशा है धर्मात्मा बनने की। धर्मात्मा बनने के लिए पांच सीढ़ियां हैं वो कौन–कौन सी हैं जानते हो? रामायण में भगवती उमा भगवान् शंकर से प्रार्थना करती हुई पूछ रही है –

नर सहस्त्र महँ सुनहु पुरारी।
कोउ एक होइ धर्म ब्रतधारी।।

(रा० ७/५४–१)

हज़ारों मनुष्यों में कोई एक धर्मव्रतधारी होता है। धर्म की चर्चा सभी सुनते हैं लेकिन उसको धारण करने वाला हज़ारों में कोई एक होता है, यह पार्वती जी कह रही हैं। यही बात भगवान् ने अर्जुन से कही थी –

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।।

(गीता ७/३)

लोग मेरे से पूछते हैं कि आप इतनी मेहनत करते हो सारी दुनिया में घूम कर, क्या आपके उपदेशों से मनुष्य सुधर जायेंगे? मैं कहता हूँ कि भईया यह तो भगवान् ने ही कहा है कि हज़ारों आदमियों में कोई एक अच्छा आदमी होता है तो हम क्यों कल्पना करें कि सभी सुधर जायेंगे। यह बात तो प्रभु ने द्वापर में कही थी। कलियुग में तो हमें लाख में एक मिल जाए तब भी हम अपना प्रयत्न सफल मानेंगे। इसलिए हमारी यह राय है कि तुलसीदास जी ने जो लिखा है कि –

धर्मसील कोटिक महं कोई।
बिषय बिमुख बिराग रति होई।।

(रा० ७/५४–२)

करोड़ों धर्मशीलों में कोई एक विरक्त होता है और –

कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई।
सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई।।

(रा० ७/५४–३)

करोड़ों वैरागियों में कोई एक ज्ञानी होता है और –

ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ।
जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ।।

(रा० ७/५४–४)

करोड़ों ज्ञानियों में कोई एक जीवन मुक्त होता है तथा –

तिन्ह सहस्त्र महुँ सब सुख खानी।
दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी।।

(रा० ७/५४–५)

उन करोड़ों जीवनमुक्तों में कोई एक ब्रह्मलीन विज्ञानी होता है–

धर्मसील बिरक्त अरुग्यानी।
जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी।।

(रा० ७/५४–६)

यह ब्रह्म–पारायण मोक्ष तक पहुंचने के लिए पाँच सीढ़ियां हैं। सनातन धर्म कहता है कि मर करके तुम किसी की कृपा से स्वर्ग जाने की चाह छोड़ दो। यदि साधन करते हुए भी तुम्हें किसी अन्य की कृपा से स्वर्ग जाने की इच्छा बनी रही तो तुम्हारी साधना बेकार है। धर्म का प्रयोजन है तुम्हें पूर्ण स्वराज्य प्रदान करना।

स आपनोति स्वराज्यम्।

यह वेद की घोषणा है। सनातन धर्म तुम्हें किसी के अधीन रहने की प्ररेणा नहीं देता। वह तुम्हें स्वराज्य को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। स्वराज्य को प्राप्त करना, ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करना तथा आत्म राज्य को प्राप्त करना, तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है क्योंकि तुम उसी की

ज्योति हो जिसका प्रकाश सारे विश्व में फैला हुआ है। सनातन धर्म तुम्हें यह बात समझाता है कि तुम्हारे जीवन में इस प्रकार की प्रतिष्ठा होनी चाहिए जिससे तुम क्रमशः विकास करते हुए ऊपर उठो। घबराओ नहीं! इस जीवन में यदि तुम धर्मात्मा बन गए तो अगले जीवन में महात्मा बन जाओगे। अन्तर क्या पड़ा? जहां करोड़ों जीवन बीत गये वहाँ यदि चार-छह जीवन और लेना पड़े तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? घबराने की क्या बात है? भगवान् क्या कहते हैं ?

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।

अनेकों जन्मों के पश्चात् ज्ञानवान् मेरी शरण में आता है। फिर वह अनुभव करता है –

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।।

(गीता ७/१९)

इसलिए घबराने की बात नहीं है। भगवान् ने तुम्हारे साथ एक शर्त रखी है–

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।।

(गीता २/४०)

एक बार इस धर्म के रास्ते पर तुम चल पड़ो फिर तुम्हारा पतन नहीं होगा। तुम महान् भय से बच जाओगे –

कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।

(गीता ९/३१)

यह परमात्मा की घोषणा है। जैसे आप यहां से बनारस जा रहे थे और रास्ते में आपकी गाड़ी खराब हो गई, वहाँ आप रुक गये। रात आपको वहाँ रहना पड़ा। दूसरे दिन आप बलिया से बनारस जाओगे या जहां गाड़ी खराब हुई थी वहाँ से आगे जाओगे? जहाँ गाड़ी खराब हुई थी, वहीं से आगे जाओगे। यही भगवान् कहते हैं कि यदि तुम इस रास्ते पर चल पड़े तो जितना रास्ता तय कर लोगे उतना रास्ता तय हो जायेगा। शेष रास्ता दूसरे

जन्म में नए शरीर रूपी गाड़ी मिल जाने पर तय हो जायेगा। भगवान् ने कहा–

अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ।।

(गीता ६/४५)

अन्त में तुम परमगति को प्राप्त कर लोगे। याद रखो, अभी से धर्म के रास्ते पर चलो। धर्म का रास्ता भावना का रास्ता है, अधर्म का रास्ता कामना का रास्ता है। कामना से मुक्त होकर भावना के क्षेत्र में आओ। भावना के क्षेत्र में आने वाला सर्वत्र भगवान् को देखता है। कामना से प्रेरित व्यक्ति सर्वत्र अभाव की ही सत्ता देखता है या किसी के प्रभाव को अनुभव करके दुःखी होता है। ज़रा आप सोचो दुःखी कब होते हो? जब अपने से नीचे वाले को देखते हो। यदि आप जो सबसे महान् है, उसको देखोगे तो आपको यह पता चल जायेगा कि जो सबसे महान् है, वह कोई और नहीं बल्कि आपका अपना बाप है। फिर आपको उसकी महत्ता से दुःख होगा कि सुख होगा? आप समझोगे कि सारी मेरे बाप की सम्पत्ति है, इसका उत्तराधिकारी मैं हूं इसलिए यहाँ दुःख के लिए स्थान ही नहीं है। वेद कहता है – अमृतस्य ते पुत्राः तुम परमात्मा की अभिव्यक्ति हो, तुम परमात्मा की सन्तान हो तथा तुम परमात्म स्वरूप हो। जैसे शेर का बच्चा शेर होता है गीदड़ नहीं होता, इसी प्रकार से आनन्दस्वरूप परमात्मा से उत्पन्न हुआ जो जीव है वो आनन्द स्वरूप है। तुलसीदास जी कहते हैं –

ईस्वर अंस जीव अबिनासी।
चेतन अमल सहज सुख रासी।।

(रा0 ७/११७–२)

गीता में भगवान् ने कहा –

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।।

(गीता १५/७)

मेरा कहने का अभिप्राय कि आप आनन्दस्वरूप हो। यह सृष्टि

आनन्दमय है। परमात्मा की सृष्टि में कहीं दुःख नहीं है।

आनन्दाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।।

वेद कहता है आनन्द से सृष्टि होती है, आनन्द से यह पलती है और आनन्द में ही लय होती है। कहा कि फिर यह दुःख कहाँ से आता है? उसकी भी कहानी सुनलो। जहाँ मैं और मेरे का संसार प्रारम्भ हुआ वहीं से दुःख पैदा हुआ। यह सारी सृष्टि तो परमात्मा की विभूति है। उस पृथ्वी पर आपने रेखा खींच कर कहा कि यह मेरी है शेष दूसरे की है। जहाँ उस परमात्मा की सृष्टि में आपने अपनी लकीर लगाई, उस पर द्वन्द्व शुरू हो गया। तेरा–मेरा जहाँ शुरू हुआ वहीं संघर्ष प्रारम्भ हो गया। अरे भले आदमी! जिस जमीन के टुकड़े को तुम मेरा कहते हो, तुम्हारे से पहले लाखों उसको मेरा–मेरा कह कर चले गए।

इस पृथ्वी की आयु आज के वैज्ञानिक कहते हैं कि चार अरब वर्ष हो गई है। चार अरब में तो तुम्हारे जैसे अरबों–खरबों पैदा हुए होंगे और सब ने इसे अपना कहा होगा लेकिन उनका कहीं निशान नहीं है और तुम इसके लिए मर रहे हो कि यह मेरा है। परमात्मा की सृष्टि दुःखदाई नहीं है। वह तो आनन्दस्वरूप है लेकिन उस परमात्मा की सृष्टि में जो तुम अपनी सृष्टि कर लेते हो कि यह मेरा है वह तुम्हारे लिए दुःख का कारण बन जाता है क्योंकि तुम असीम को सीमा में बांध देते हो। भूमा को सीमा में बांधने से तुम दुःखी होते हो। वेद कहता है–

सूर्य चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।

(ऋग्वेद १०/१९०–३)

यहाँ कोई वस्तु नई नहीं है। जो पहले था वह अब है आगे भी वही होगा। यह सृष्टि अनादि काल से चली आ रही है, अनन्त काल तक चलती रहेगी। यह अविर्भाव–तिरोभाव की प्रक्रिया चलती रहती है इसलिए यहाँ जो कुछ है सब शाश्वत है, सनातन है और नित्य है। जिसको तुम अनित्य मानते

हो वो तो नाम और रूप का परिणाम है।

वैज्ञानिक कहता है कि यह Space ऊर्जा से भरा हुआ है। That very energy appeared into form of metal वही ऊर्जा पृथ्वी के रूप में अभिव्यक्त हुई है, समुद्र के रूप में अभिव्यक्त हुई है, विद्युत के रूप में अभिव्यक्त हुई है। यह सब Energy का ही परिणाम है। इसमें कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो पुरानी हो या जो नई हो। वो तो नित्य, शाश्वत और सनातन है इसलिए तुम इस अविनाशी तत्त्व को जान करके स्वयं में अविनाशी पद को प्राप्त कर लोगे।

यह जो मिला हुआ शरीर है यह तुम्हारे लिए साधन है। इस सामग्री का सदुपयोग करके तुम ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर लोगे तो तुम्हें मोक्ष मिल जायेगा। यदि इस का दुरुपयोग करके तुम विषयों में रत हो गये तो नारकी बन जाओगे, दु:ख के गर्त में गिर जाओगे। यह तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है कि तुम अपने आपको ऊर्ध्वमुखी बनाना चाहते हो या अधोमुखी बनाना चाहते हो? इसमें किसी वर्ग का, किसी जाति का, किसी देश का, किसी मत का, किसी मज़हब का, किसी सम्प्रदाय का या किसी पंथ का कोई भेद नहीं है। सत्य जो है वह सत्य है।

एक बार मैं इंग्लैंड के किसी चर्च में व्याख्यान दे रहा था। मेरे व्याख्यान को सुन करके जो अंग्रेज थे वे सारे के सारे अभिभूत हो गये। वहाँ पर 'नन्स' बैठी हुई थी जो कि चर्च की Head थी। उसने देखा कि हमारे सारे लोग भारतीय योगी के पीछे लग गए हैं। उसने सोचा कि इनको कैसे बहकाया जाए। वह हमारा धन्यवाद करने के लिए खड़ी हुई। वह कहने लगी कि स्वामी जी ने जो बातें कही हैं ये बिल्कुल वैज्ञानिक हैं लेकिन ये बातें सारी पूर्व Philosophy की हैं हम पश्चिम के लोगों के लिए इसकी कोई उपयोगिता नहीं है। मैं जानता था उसकी चाल कि यह क्यों ऐसा कह रही है। जब वह कह करके बैठ गई तो मैं खड़ा हुआ, मैंने पूछा " My Dear! be aware of

this truth that sun is rising always from east, is that useful for you people or not? मैंने कहा कि सूर्य सदैव पूर्व से उदय होता है, यह तो आप लोग जानते हो? बोले हां । हम कहा कि तुम लोगों के लिए यह उपयोगी है कि नहीं? हां, है, हम कहा कि जब पूर्व से उदय होने वाला सूर्य तुम्हारे लिए उपयोगी है तो पूर्व से उदय होने वाला ज्ञान विज्ञान तुम्हारे लिए उपयोगी क्यों नहीं होगा? वह नन्स शर्मिंदा होकर बैठ गई। जब मैं जाने लगा तो मैंने कहा कि My mother ! do you know that I am an Indian philosopher ? यहां जनता को बहकाने का काम अब तुम छोड़ दो। जो लोग मेरी बात एक बार सुन लिए हैं वो जनता के बहकावे में आने वाले नहीं हैं।

यह मेरी शर्त है कि एक बार धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप को जो समझ लेगा वह किसी के बहकावे में आने वाला नहीं है। हम भक्ति को मानते हैं लेकिन हमारी भक्ति नाचने–गाने वाली नहीं है। हमारे यहाँ भक्ति के आचार्य हैं भगवान् मारुति। आज दिन तक हिन्दू धर्म में हनुमान से बड़ा कोई भक्त हुआ है? शंकर से बड़ा ज्ञानी कोई हुआ है? भला सोचो इन महापुरुषों के तुम अनुयायी हो करके किस रास्ते पर जाते हो? किसके बहकावे में आते हो? कौन से धर्म की साधना तुम लोग करने में लगे हुए हो? मनोरंजन ठीक है। हमेशा ज्ञान–विज्ञान का तुम चिन्तन करते रहो, हो सकता है तुम स्वयं को सम्भाल न सको इसलिए मनोरंजन भी चाहिए। मनोरंजन का यह अभिप्राय नहीं कि तुम धर्म में भी मनोरंजन घुसेड़ दो। धर्म को भी ताली बजाने का रास्ता चुन लो। यह तो धर्म का अपमान है। धर्म का तिरस्कार है। धर्म में एक प्रकार का अन्याय है। यही कारण रहा है कि धर्म के इस नग्न रूप को देख करके हमारे ये नेता कहने लगे कि हमें धर्म की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन्हें धर्म के यथार्थ स्वरूप का बोध नहीं है। शाश्वत सनातन धर्म क्या है, इसको तुम लोग समझो और तदनुसार जीवन बिताने के लिए तत्पर हो जाओ। धर्म तुम्हें इस अवस्था से उठाकर ब्राह्मी स्थिति में पहुंचाने में सक्षम

है, कब? जब उस रास्ते पर चलने के लिए तुम तैयार हो जाओगे तब इसलिए अपनी बुद्धि, मन और इन्द्रियों की दिशा को तुम मोड़ो। जब तुम्हारी बुद्धि ऊर्ध्वमुखी होगी तो मन भाव से भावित हो जाएगा, बाहर से सि बमट जाएगा और इन्द्रियां तुम्हारी परमेश्वर की पूजा में लग जायेंगी। तब भगवान् ने जो कहा –

यतः प्रवृतिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तम्भ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।

(गीता १८/४६)

तुम अपने इन्हीं कर्मों द्वारा परमात्मा की आराधना करके परम सिद्धि रूपी मोक्ष के अधिकारी बन जाओगे। इसके लिए कुछ छोड़ना नहीं है, कुछ पकड़ना नहीं है, केवल बुद्धि की दिशा परिवर्तित करनी है। बुद्धि की दिशा कैसे परिवर्तित की जाए, इसके बारे में भगवान् ने कहा है कि बावरा जी अब कल बताना।

हरि ॐ तत्सत्

३

परावर रूप में उपस्थित मेरी प्रिय आत्माओ!

करुणानिधान भगवान् की करुणा आप सभी के लिए सदैव कल्याण का सृजन करती रहे, यह मेरी आन्तरिक शुभ कामना। आप लोगों की श्रद्धा, स्नेह, जिज्ञासा, मिश्रा जी का निवेदन और इतनी संख्या में आप सब की उपस्थिति ने मुझे विवश कर दिया कि कल का दिन और आप लोगों को व्याख्यान सुनाया जाए। कल सुबह दस से बारह बजे तक इसी स्थान पर आप लोगों को मेरे विचार सुनने के लिए मिलेंगे। मैं चाहता हूं कि सनातन धर्म के सम्पूर्ण सिद्धान्त आप लोगों को सुना दूं, समझा दूं लेकिन तीन–चार दिन में इतने महासागर की अभिव्यक्ति कैसे हो सकती है?

सनातन धर्म एक आर्षधर्म है। यह किसी एक व्यक्ति के दिमाग की उपज नहीं है और न ही यह किसी राजनैतिक प्रेरणा से संस्थापित किया हुआ कोई पंथ, मज़हब या 'रिलिजन' है। दुनिया में जो कई प्रचलित तथा–कथित धर्म हैं सही में वो धर्म नहीं हैं क्योंकि उनके पीछे कोई विज्ञान नहीं है, कोई तर्क नहीं है और न ही कोई युक्ति तथा अनुसंधान ही है। उनके पीछे एक अन्धविश्वास है। इसमें विश्वास करो, उसमें विश्वास करो तो तुम हमारे मज़हब के, ' रिलिजन' के अथवा पंथ के बन जाओगे लेकिन सनातन धर्म में खुली छूट है।

कभी–कभी लोग मेरे से भी कहते हैं कि जो लोग सरिता जैसी पत्रिकाओं में वेद के विरुद्ध, शास्त्र के विरुद्ध लिखते रहते हैं, आप उनका उत्तर क्यों नहीं देते? मैं कहता हूं कि इनका उत्तर देने की जरूरत ही क्या

है? वो बेचारे अबोध हैं, उंनको समझ में नहीं आई इसलिए वो ऐसी बात लिख रहे हैं। उनको यदि रुचि हो तथा वो समझना चाहें तो किसी विद्वान् के पास आकर समझ लें। उनको इसकी यथार्थ दृष्टि मिल जाएगी। भारत में ७०० वर्ष तक Middle East से आया हुआ इस्लाम धर्म इसको नष्ट करने के लिए अपना पूरा जोर लगा लिया लेकिन यह शाश्वत सनातन धर्म अपने में नित्य शाश्वत बना रहा। जब यहाँ अंग्रेज आए तो उन्होंने देखा कि यहाँ पर कौन सी मूल भूमिका है जिसके ऊपर ७०० वर्षों के घोर अत्याचार के पश्चात् भी यह धर्म नष्ट नहीं हुआ? उन्होंने देखा कि इस धर्म के मूल में वेद, शास्त्र और दर्शन हैं। यहां उन्मुक्त विचारधारा की खुली छूट है। आप किसी धर्म के विरोध में एक शब्द कह दें तो कल आपके लिए फतवा मिल जायेगा कि इसको कतल करदो, हम इतने लाख रुपया देंगे। यहां वेद–शास्त्र के प्रति लोग युगों से कहते आ रहे हैं लेकिन कोई फतवा नहीं दिया गया। क्यों नहीं दिया गया, जानते हो? इसलिए नहीं दिया कि हम जानते हैं कि जैसे–जैसे विज्ञान का विकास होगा वैसे–2 वैदिक विज्ञान का प्रकाश होगा। यही कारण है कि आज पश्चिम का जगत् इस वैदिक विज्ञान के सामने नत–मस्तक हो रहा है। आज जहां भी प्रज्ञ मानव है, सभ्य मानव है, सुशिक्षित मानव है वो विचार करने लगा है कि दुनिया में कोई एक ऐसा धर्म होना चाहिए जो विज्ञान के प्रकाश में सत्य पर प्रतिष्ठित किया जाए। दुनिया के सामने जितने भी तथाकथित धर्म वाले हैं सब विज्ञान से घबरा रहे हैं कि कहीं विज्ञान हमारी इस मान्यता को नष्ट न कर दे लेकिन विज्ञान का जैसे–जैसे प्रकाश हो रहा है हम प्रसन्न हो रहे हैं और उनको समझाते हैं कि तुम्हारा विज्ञान जो कह रहा है आज से कई लाख वर्ष पूर्व भारतीय ऋषियों ने यह बात हमें समझाई है। यह हमारे शास्त्रों में यहां लिखा हुआ है, पढ़ लो तुम।

मैं आपको यह समझा रहा था कि पश्चिम के जो ईसाई 'मिशनरी'

मैक्समूलर के साथ यहाँ आए वो विचार करने लगे कि कौन सी ऐसी युक्ति निकाली जाए जिससे यहाँ की जड़ को ही समाप्त किया जाए। उन्होंने यहाँ संस्कृत पढ़ी और संस्कृत पढ़ कर हमारे ग्रन्थों का गलत अर्थ करना शुरू किया। शिक्षा के लिए उन्होंने University तथा स्कूलों की व्यवस्था कर दी। लार्ड मैकाले की योजना अनुसार यहाँ पर शिक्षा की व्यवस्था कर दी। उनके द्वारा लिखी हुई पुस्तकें यहाँ उन विद्यालयों में पढ़ाई जाने लगी। उन्होंने सबसे पहले जो हमारे धर्म को नष्ट करने की चाल चली उसमें यह बताया कि आर्य एक जाति है जो बाहर से आई। यहाँ के मूल निवासी द्रविड़ हैं। आर्यों ने उन पर आक्रमण करके उन्हें जीत लिया और उन्हें जंगलों में भगा दिया तथा स्वयं राजा बन कर बैठ गए। यह कोरी कल्पना है। कहीं सत्य की गन्द नहीं है इसमें। यह उनका प्रथम प्रहार था कि आर्य जाति बाहर से भारत में आई। आर्य किसे कहते हैं? कहा कि जिसकी लम्बी नाक हो, चौड़ा चेहरा हो, बड़ी–बड़ी आँखें हो, गोरा रंग हो अर्थात् जितनी उन्होंने कल्पना की अपने स्वरूप को देख करके उन्होंने आर्य की व्याख्या कर दी। द्रविड़ कौन हैं? कहा कि जो काले रंग के होते हैं, जिनकी आँखें छोटी होती हैं और नाक चपटी होती है।

दूसरा उन्होंने अर्थ करना शुरू किया वेद के मन्त्रों का। पहले मैक्समूलर ने कहा कि यह तो गडरियों का गीत है। आर्य लोग गाय–भैंस चराया करते थे। वो कान में अंगुली डाल करके गाते थे जैसे गडरिए गाते हैं, उन्होंने उसको अक्षरबद्ध कर दिया तो वह वेद बन गया। उसमें कोई तत्त्व की बात नहीं है। तीसरा उन्होंने कहा कि जब तक इनके इतिहास को नष्ट नहीं किया जाएगा तब तक इनकी आस्था नष्ट नहीं होगी। उन्होंने एक शब्द निकाला मिथ। कहा कि यह जो महाभारत है, रामायण है, ये सब मिथ हैं। मिथ माने काल्पनिक कहानियां। कभी कृष्ण नहीं हुए, कभी राम नहीं हुए। यह सब मन की उपज है, बुद्धि की उपज है और यह कवियों की कल्पना

मात्र है। एक महाशय ने यह लिखा कि पहले कृष्ण हुए उसके बाद में राम हुए क्योंकि कृष्ण के ज़माने में एक स्त्री पांच–पांच पतियों से विवाह करती थी। तब बहु–पति प्रथा थी। राम के जमाने में आकर के एक पत्नी प्रथा हुई इसलिए राम बाद में हैं कृष्ण पहले के हैं। विकास की प्रक्रिया (Evolution Theory) में यही फिट आता है यानी ऐसी छलयुक्त चाल चली अंग्रेजों ने जिससे इस देश की संस्कृति, सभ्यता सब समाप्त हो जाए। उन्होंने देखा कि शक्ति से इनको नष्ट नहीं किया जा सकता इसलिए विचार किया कि इनके सिद्धान्तों की विकृति कर दो, ये अपने आप नष्ट हो जायेंगे। उनको यह पता नहीं की दुनिया के कई देश नष्ट हो गए जो भारत के बाद के थे। बेबिलोनिया, असीरिया, चार्डिया, यूनान, ये सब बड़े–2 राष्ट्र थे, नष्ट हो गए। ये सब Christianity की आंधी में बह गए और कुछ इस्लाम की आंधी में बह गए लेकिन उनको यह पता नहीं था कि उन देशों में जीवन विधान की दो विधाएं नहीं थी। उन देशों में केवल गृहस्थाश्रम में जीवन जीने की व्यवस्था थी। वहां सन्यासियों, त्यागियों, तपस्वियों तथा ऋषियों का ऐसा समूह नहीं था जो धर्म के अनुसंधान में ही अपने जीवन को प्रवृत्त करता हो इसलिए वो देश नष्ट हो गए लेकिन भारत में तो आज भी लाखों विद्वान् पड़े हुए हैं। लाखों योगी तथा लाखों अनुसंधान कर्त्ता मिलेंगे आपको जो हर प्रकार से इन तत्त्वों का अनुसंधान कर रहे हैं और बरसों तक करते रहेंगे। जो ऋषियों ने पहले कहा था उसको वर्तमान में भी अनुभव करके व्यक्त किया जाता है। आज भी हमारी वो परम्परा जीवित है। उनको यह पता नहीं था इसलिए उन्होंने इस प्रकार की दुर्भिसन्धिपूर्ण योजना बनाई। मुझे विश्वास है कि वो इसमें सफल नहीं हुए हैं।

दुर्भाग्य यह है कि भारत जब स्वतन्त्र हुआ तो भारत की बागडोर ऐसे हाथों में आ गई जो देखने में तो देशी थे लेकिन विचारधारा से पूर्णतया अंग्रेजी थे। लार्ड मैकाले ने कहा था कि मैंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली शुरू कर

दी है जिससे भारत में पढ़ने वालों की शक्ल तो इंडियन होगी लेकिन अक्ल अंग्रेजी होगी। वही हुआ भी। पचास वर्ष पूर्व हमारी संस्कृति, सभ्यता, जीवन, धर्म तथा सामाजिक व्यवस्था की यह दुर्गति नहीं थी जो स्वतन्त्रता के पचास वर्ष बाद हो रही है। पहले भी लोग विदेशी भाषा पढ़ते थे क्योंकि अंग्रेज़ों का शासन था पर तब वे यह नहीं मानते थे कि अंग्रेज़ी पढ़ने से ही वो 'हैवन' में पहुंचेंगे। आज प्रत्येक माँ–बाप सोचता है कि मेरा बच्चा 'कान्वैन्ट' स्कूल में पढ़े। मेरा बच्चा अंग्रेज़ी मीडियम से पढ़े। भाषा के साथ भाव का प्रवाह बहता है। जहाँ पर वह भाषा आयेगी वहां प्रवाह कैसा आयेगा? हमने भी अंग्रेजी पढ़ी है, हम भी अंग्रेजी में व्याख्यान देते हैं। अब तक मैं लगभग ढाई–तीन सौ व्याख्यान दिया हूंगा अमेरिका, कैनड़ा की यूनिवर्सिटी में। भाषा को मैं बुरा नहीं मानता। अपने सत्त्व का, अस्मिता का, धर्म का त्याग करके, अपने संस्कारों को तिलांजलि दे करके केवल पटर–पटर अंग्रेजी बोलने से यदि स्वर्ग की ज्योति आपको दिखाई देने लगे तो मैं समझता हूं कि वहां जितने रहने वाले नारकीय जीवन जी रहे हैं वो सब स्वर्ग में ही बैठे होते लेकिन ऐसी बात है नहीं।

याद रखना दुनिया के जितने मैने देश देखे हैं उन सबसे निकृष्ट देश अमेरिका है। मैं २५ वर्षों से वहां रह रहा हूं इसलिए मैं बता रहा हूं। वहां पर न परिवार है, न समाज है, न राष्ट्र है, वहां केवल व्यक्ति और सरकार है। यही स्थिति आपको यूरोप में मिलेगी। कभी–2 लोग मेरे से पूछते हैं कि आपके भारत में सरकार लोगों की क्या सहायता करती है? हम कहा कि हमारे भारत में करोड़ों लोग ऐसे हैं जिनको यह पता नहीं होता कि कोई सरकार है भी कि नहीं है। क्यों नहीं पता है? इसलिए कि सरकार से उनको क्या लेना–देना? मेहनत करते हैं मजदूरी लेते हैं, खेती करते हैं खाते हैं। हां, जब कोई उन पर अत्याचार करने लगता है, वो अत्याचार जब परिवार सहने में सक्षम नहीं होता तब उनको सरकार का दरवाज़ा खट–खटाना

पड़ता है। सरकार पांचवें स्तर पर है। पहले व्यक्ति है, फिर परिवार, फिर समाज, फिर राष्ट्र और फिर जाकर कहीं सरकार है। उन देशों को जिनकी संस्कृति, सभ्यता को आज आप उत्तम समझ रहे हैं वहाँ पर परिवार नहीं है, समाज नहीं है, राष्ट्र नहीं है केवल व्यक्ति है। दुनिया इस व्यक्तिवाद से त्रस्त है क्योंकि व्यक्तिवाद पूंजीवाद को जन्म देता है। पूंजीवाद सारे समाज को नरक बना देता है। पश्चिम में भी इसके विरुद्ध अन्दोलन खड़ा हुआ। व्यक्तिवाद के विरोध में समाजवाद खड़ा हुआ, पूंजीवाद के विरोध में साम्यवाद खड़ा हुआ। जो साम्यवाद या समाजवाद आया उसके पीछे भी भोग की ही तृष्णा बनी रही। एक ने कहा कि मैं अकेले भोगूंगा, समाजवादियों ने कहा कि हम सब मिलकर के भोगेंगे। एक ने कहा कि यह मेरी अकेले की सम्पत्ति है साम्यवादियों ने कहा कि नहीं यह हम सब की सम्पत्ति है। ये चारों विचारधाराएँ उसी भोग के लिए मरती रही। व्यक्तिवाद और पूंजीवाद के विरोध में साम्यवाद तथा समाजवाद जो पैदा हुआ यह भी –

अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।

(कठ0 १/२–५)

उसकी प्रक्रिया को ही अपनाता चला गया लेकिन भारतीय जीवन की प्रक्रिया में यह अन्धविश्वास वाली बात नहीं है। यहाँ तो पूर्ण रूप से अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा रही है। हमारी जीवन प्रक्रिया, हमारी शैली, हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता, हमारा धर्म, हमारा सिद्धान्त, हमारा दर्शन, ये सब अध्यात्मवादी हैं। याद रखो भौतिक विज्ञान ने दुनिया बहुत छोटी कर दी है जिसके लिए हमारे ऋषियों ने कहा था –

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

(महो0 ६/७१)

महोपनिषद् में कहा है कि यह मेरा है यह तेरा है यह तो बहुत छोटी

बुद्धि वाले कहते हैं। जो उदार चरित्र हैं, जो तत्त्वद्रष्टा हैं, उनके लिए तो यह सारी वसुधा एक छोटा सा कुटुम्ब है इसीलिए हमारे यहाँ अथर्ववेद के भूमिसूक्त में इसी पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों की महिमा का गान किया गया है। यजुर्वेद में बताया गया है –

समुद्रपर्यन्ता या पृथिव्याः एक राट्।

(ऐतरेय ब्राह्मण)

समुद्र से घिरी हुई जो पृथ्वी है उसको एक राष्ट्र कहते हैं। उन दिनों अनेक टुकड़ों में यह भूमि बंटी नहीं थी क्योंकि अनेक पंथ नहीं थे, अनेक मज़हब नहीं थे, अनेक 'रिलिजन' नहीं थे तथा अनेक धर्म नहीं थे। उस समय शाश्वत सनातन धर्म की प्रतिष्ठा थी और मानव तदनुसार अपना जीवन विकास करता था इसलिए महाभारतकार लिखते हैं -

न वै राज्यं न राजाऽऽसीन्न च दण्डो न दण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम्।।

(महा० शान्तिपर्व – ५९/१४)

उस समय न राज्य था, न कोई राजा था, न कोई दण्ड का पात्र था और न कोई दण्ड देने वाला था। था कौन? प्रजा। प्रजा माने मानव जाति। सृष्टि में जो प्रकृष्ट रूपेण जायमान जीव है वह मनुष्य है। मनुष्य की संज्ञा है प्रजा। सारा मानव समुदाय धर्म के द्वारा अनुशासित था और धर्म तत्त्वद्रष्टा मनीषियों की खोज का, अनुसन्धान का परिणाम था। समाज की व्यवस्था कैसी हो, जीवन के विकास की प्रक्रिया क्या हो, इसके विषय में इस देश में एक सुन्दर सी व्यवस्था प्रतिष्ठित की गई। जो समाज की उच्चावस्था में पहुंचा हुआ व्यक्ति था, जिसको समाज से कुछ लेना–देना नहीं था, जो केवल समाज की दृष्टि था, लोकहित में निरत रहता था तथा जिसके जीवन का आधार केवल तप था उसको हमारे यहां शिक्षक के पद पर प्रतिष्ठित किया गया, उसको उच्च वर्ग में प्रतिष्ठित किया गया। उसको बताया गया कि यह

ब्रह्म का ज्ञाता है। ब्रह्म माने वेद, ज्ञान। उस ब्रह्म का वह अनुसंधान करता है इसलिए उसकी संज्ञा ब्राह्मण होगी। जिन लोगों में रजोगुण की वृद्धि की गई, जो पृथ्वी की, समाज की अथवा मानवमात्र की रक्षा के लिए अपने जीवन को समर्पित करने के लिए आगे आए उनको 'क्षतं त्रायते इति क्षत्री' क्षत्रीय की संज्ञा दी गई। जिसकी व्यवसायात्मिका बुद्धि थी, जो लोक कल्याण में उत्पादन करके उसके वितरण की व्यवस्था में कुशल था, उसको संज्ञा दी गई कि तुम वैश्य हो। जो श्रम करके कला के द्वारा अनेक प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में कुशल था, उसको संज्ञा दी गई कि तुम शूद्र हो। आप जानते हो कि आपके शरीर का आधा भाग अर्थात् कमर से लेकर पांव तक के ऊपर सारा शरीर खड़ा हुआ है। समाज में श्रमिक वर्ग का यही स्थान रहा है। एक बार एक सज्जन कहने लगे कि वेद में लिखा हुआ है–

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्न्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भयां शूद्द्रोऽअजायत।।

(पु0सू0 ११)

यहाँ पर भगवान् के चरण से शूद्र पैदा हुआ, भगवान् के मुख से ब्राह्मण पैदा हुआ, भगवान् की भुजाओं से क्षत्रीय पैदा हुआ और भगवान् की कमर (ऊरू) से वैश्य पैदा हुए ऐसा कहा है। मैंने उससे कहा कि किस भाषा विज्ञान् का यह अर्थ है '**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्**'। 'आसीत' माने पैदा होना तो नहीं होता। '**बाहू राजन्नयः कृतः**' कृतः माने पैदा करना तो नहीं होता। यह '**ऊरू तदस्य यद्वैश्यः**' वहां भी पैदा करना नहीं होता। फिर क्या होता है? यह समाज की व्यवस्था है। समाज को कैसे व्यवस्थित किया जाए? ऋषियों द्वारा गुणानुसार समाज की प्रक्रिया और उसकी सुव्यवस्था की प्रतिष्ठा की गई है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए उन्होंने मार्ग प्रशस्त किया है। जब तुम लक्ष्य को प्राप्त करने की अभीप्सा ले करके सत्–मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ संकल्प होते हो उस अवस्था में तुम्हारा चरण स्थानीय स्थान है।

जब तुम चलने के लिए आगे बढ़े, तुम्हारी व्यवसायात्मिका बुद्धि हो गई, अब तुम वैश्य बन गए। जब इससे आगे बढ़े जहाँ अहं को ब्रह्म के नज़दीक पाया तो क्षात्र वृत्ति में पहुंच गये। जहाँ पहुंच कर ब्रह्म स्वरूप हो करके लोक के साथ आत्मसात हो गए, वह तुम्हारी पूर्णावस्था हो गई। ये चार अवस्थायें हैं Classification of society according to your ability and quality. यह तुम्हारे गुण कर्मानुसार, चित्त की अवस्थानुसार अथवा तीनों गुणों के आधार पर शुद्ध सतोगुण की अवस्था, रज–तम मिश्रित सतोगुण की अवस्था, पूर्ण रजोगुण की अवस्था, रज–तम मिश्रित रजोगुण की अवस्था और तमोगुण की अवस्था की व्याख्या है जिसके अनुसार यहां पर समाज की व्यवस्था की गई लेकिन दुर्भाग्य है कि यह व्यवस्था बाद में जाकर दूषित हो गई।

छान्दोग्योपनिषद् में एक कथा है कि एक दासी का पुत्र था। जब अपने साथ के बच्चों से उसने सुना कि हम गुरुकुल जायेंगे, वेदाध्ययन करेंगे तो उसके हृदय में भी पढ़ने की चाह उत्पन्न हुई। उसने अपनी माँ से कहा कि माँ ! मैं भी गुरुकुल में जाऊंगा, वेदाध्ययन करूंगा। माँ ने कहा कि अच्छा वत्स! जाओ तुम। बालक ने पूछा कि गुरु जी ने यदि मेरा परिचय पूछा तो मैं क्या बताऊंगा? माँ ने कहा कि तुम कह देना कि मेरी माँ का नाम जाबाला है और तुम्हारा नाम मैंने सत्यकाम रखा है इसलिए तुम सत्यकाम जाबाल हो। कहा कि यदि पूछें कि तुम किस के पुत्र हो तो? बेटा, तुम्हारे पिता का तो मुझे ही पता नहीं है तो मैं तुम्हें क्या बताऊँ? मैं तो दासी हूं। अनेक लोगों ने मेरा प्रयोग किया है। पता नहीं किससे तुम पैदा हो गए हो इसलिए मुझे पता नहीं कि तुम्हारे पिता कौन हैं। मैं इतना ही जानती हूं कि मैं तुम्हारी माँ हूं और तुम मेरे पुत्र हो। वह बालक गौतम ऋषि के आश्रम में गया। गौतम ऋषि ने जब उससे पूछा कि वत्स! तुम्हारा गोत्र क्या है? उसने कहा 'गुरुवर ! मेरी माँ को भी पता नहीं है। मेरी माँ का नाम जाबाला है, मेरा नाम सत्यकाम है, यही मैं जानता हूँ, इससे अधिक मैं नहीं जानता। गौतम

ऋषि ने कहा कि 'त्वं ब्राह्मणोऽस्ति' तुम ब्राह्मण हो क्योंकि तूने मेरे से सत्य कहा है, झूठ नहीं बोला। सत्यकाम जाबाल उपनिषद् काल का एक महान् ऋषि हुआ है। मेरा कहने का अभिप्राय कि हमारे यहाँ जो बर्ण व्यवस्था थी धर्म में यह जीवन विकास की प्रक्रिया थी। किसी को नीचा या किसी को ऊंचा बनाने के लिए नहीं थी। इसमें कोई वन्दनीय, पूजनीय या त्याज्य नहीं था।

हमारे धर्म में कहीं भी छुआछूत के लिए स्थान नहीं था। आप वेद के मन्त्र पढ़िए आपको पता चलेगा। इतना ही नहीं मैं आपको और एक आश्चर्य की बात बताऊं। मैंने सारी स्मृतियों का अध्ययन किया है और महाभारत में जहां जाति व्यवस्था है उसका अध्ययन किया है। मुझे कहीं ऐसी जाति का दर्शन नहीं हुआ जिस जाति का कर्त्तव्य हो लोगों का मल ढोना और मल साफ करना जिसको आप भंगी कहते हैं। मैंने यह पता लगाया कि यह मल उठाने की प्रथा भारत में कहाँ से चली? आप इतिहास को पढ़िए यह प्रथा मौर्य काल में नहीं थी, चाणक्य के समय में नहीं थी, शुंग काल, गुप्त काल तथा हर्षवर्धन के काल में भी नहीं थी क्योंकि किसी भी ग्रन्थ में इसका उल्लेख नहीं है। यह प्रथा आई है जब मुसलमानों का भारत में शासन हुआ तब। वे लोग जो ईस्लाम धर्म को स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं हुए उनको दण्ड देने के लिए मजबूरी उनसे विष्ठा उठवाने का काम लिया गया और एक अछूत जाति बना दी गई। उनको अछूत घोषित करने की व्यवस्था वहाँ से चली है। हमारे वेद में कोई अछूत नहीं है। आपको यह जान कर भी आश्चर्य होगा कि हमारे यहां भोजन बनाने का काम शूद्र का था ब्राह्मण का नहीं। ज़रा अपने ग्रन्थों में पढ़िए। ये जो प्रक्रियायें रही हैं सारी इस देश की संस्कृति, सभ्यता को नष्ट करने के लिए रही हैं। यहां पर अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैलाई गई।

संस्कृत के दो शब्द है द्रविड़ और आर्य। 'द्रू गतौ' धातु में 'इलय्' प्रत्यय लगाकर द्रविड़ शब्द बनता है। 'ऋ गतौ' धातु में 'धन्' प्रत्यय लगा

कर आर्य शब्द बनता है। दोनों धातुओं का अर्थ है गतिमान होना चाहे वह द्रविड़ हो चाहे आर्य। अंग्रेज़ों ने कहा कि द्रविड़ एक ऐसी जाति है जो पतित थी, असभ्य थी। आर्य एक सभ्य जाति आई जिसने उनको जीत करके अपना राज्य कायम कर लिया। भला आप सोचिए हमारे यहां नर्मदा नदी के उस पार क्षेत्र को द्रविड़ क्षेत्र कहा जाता है और नर्मदा के इस पार को आर्य क्षेत्र कहा जाता है। यह आर्यावर्त है और दक्षिणावर्त को द्रविड़ प्रदेश कहा जाता है। हमारे यहां ब्राह्मणों में भी दो प्रकार का विभाग है– गौढ़ ब्राह्मण और द्रविड़ ब्राह्मण। नर्मदा के उस पार वाले द्रविड़ ब्राह्मण और नर्मदा के इस पार वाले गौढ़ ब्राह्मण कहलाते हैं। जहां पर ब्राह्मणों में भी इस प्रकार की व्यवस्था रही हो वहां द्रविड़ों को वनवासी मानना, उनको त्याज्य मानना, उनको यह कहना कि ये यहाँ के आदिवासी हैं और आर्य बाहर से आये हैं यह एक छलावा, एक भ्रान्ति, एक षड्यन्त्र नहीं तो और क्या है?

मैं आप लोगों को क्या बताऊं? कभी–कभी इतिहास का अध्ययन करते हैं तो इतना दु:ख, इतनी पीड़ा होती है कि इतनी महान् संस्कृति, इतना महान् धर्म, इतनी वैज्ञानिक जीवन विकास की प्रक्रिया के होते हुए भी हम इस दुर्गति को कैसे पहुंच गए? इसका मैंने एक कारण ढूंढा। भारत का दुर्भाग्य उस दिन उदय हुआ जिस दिन हमारे यहां किसी ने एक सूत्र बना करके हमारे स्मृति ग्रन्थ में डाल दिया। सूत्र क्या बनाया उसने ?

स्त्री शूद्रो न धीयताम्।

स्त्री और शूद्र को वेद नहीं पढ़ना चाहिए, विद्या नहीं पढ़नी चाहिए। जिस दिन यह सूत्र बनाया होगा किसी चालाक व्यक्ति ने उसी दिन भारत के विनाश का बीज डाला होगा। परिणाम क्या हुआ जानते हो? आधा समाज अज्ञानता के गर्त में चला गया। यह सारा समाज हमारा दो भागों में विभक्त है। आधा समाज स्त्रियों का है और आधा पुरुषों का है। जब यह प्रतिबन्ध लग गया कि स्त्रियां पढ़ ही नहीं सकती तो आधा समाज तो अज्ञान के गर्त

में चला गया। अब रह गया आधा। आधे में से भी कह दिया कि शूद्र नहीं पढ़ सकते। आगे चल कर बताया कि यह संस्कृत तो पुरोहितों की भाषा है, तुम्हें कौन पुरोहिती करनी है? क्षत्रियों से कहा कि तुम्हारा काम युद्ध करना है। वैश्यों से कहा गया कि तुम्हारा काम खेती करना, उत्पादन करना तथा व्यवसाय करना है। शूद्रों से कहा कि तुम्हारा काम सेवा करना है, तुम्हें पढ़ लिख कर क्या करना है? परिणाम यह हुआ कि सौ में से पचास स्त्रियां निकल गई। पचास के यदि चार भाग आप कर लें तो उनमें से एक भाग को बताया कि तुम वेद–शास्त्र के अधिकारी हो तीन वर्गों को उस अधिकार से वंचित कर दिया गया। परिणाम क्या हुआ? १०० में से जहां १२$^{१/२}$ प्रतिशत को ज्ञान का, विद्या का, वेद–शास्त्र के अध्ययन का अधिकार दिया गया उस समाज का, उस राष्ट्र का पतन नहीं होगा तो क्या होगा? यह दुष्कर्म किसने किया? इतिहास के खोज की बात है कि कौन ऐसा बुद्धिमान हुआ जिसने हमारे इस महान् समाज को ज्ञान–विज्ञान से वंचित कर दिया। वेद का अनुसन्धान करते हुए वेद के मन्त्रों में मैंने पाया है कि शूद्र भी वहां पर ऋषि हैं। अनेकों वैश्य वहां पर ऋषि हैं। अनेकों क्षत्रीय ऋषि हैं वहां पर। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में आपको चारों वर्णों के ऋषि मिलेंगे। आप ऐतरेय ब्राह्मण को पढ़ते हैं? ऋग्वेद की व्याख्या ऐतरेय महीदास ने की है। ऐतरेय महीदास कौन था? इतरा का पुत्र था। इतरा कौन थी? एक दासी थी। क्या कहेंगे आप इसको? उसके द्वारा ऐतरेय ब्राह्मण की रचना हुई है और ऋग्वेद का उसने भाष्य किया है। उसी का एक अंश है ऐतरेयोपनिषद् जिसकी व्याख्या करके लोग वेदान्ती बनते हैं।

दुर्भाग्य है देश का कि यहाँ से संस्कृत भाषा ही गायब हो गई और संस्कृत में पढ़ने–लिखने का सारा क्रम ही गायब हो गया। वेद से लेकर कालीदास के महाकाव्य तक सारा साहित्य संस्कृत में सुरक्षित है। हमारा सारा इतिहास, सारा दर्शन, सारा राजनीति शास्त्र, सारा अर्थ शास्त्र, धर्म

शास्त्र, मोक्ष शास्त्र सभी संस्कृत में हैं। जब संस्कृत का ही बोध नहीं रहा तो इन ग्रन्थों का बोध कहां से होगा? जब इन ग्रन्थों को आप पढ़ेंगे ही नहीं तो एक अज्ञानी ने जो कह दिया उसी को आपने सत्य मान कर पकड़ लिया। उसी का परिणाम हुआ यह दुर्गति। नहीं तो इस महान् भारत देश की दुर्गति करने वाला दुनिया में कोई साहसी पुरुष पैदा नहीं हुआ था। भारत दुनिया का सिरमौर रहा है। उसके पास ज्ञान–विज्ञान की अथाह निधि है। उस अथाह निधि की तरफ कोई आँख उठा कर देखने की सामर्थ्य नहीं रखता था। जब से ज्ञान–विज्ञान का ह्रास हुआ, जब से शिक्षा पर एक वर्ग विशेष का एकाधिकार हुआ, जब से संस्कृत शिक्षा से लोगों को वंचित किया जाने लगा तब से इस देश की दुर्गति का दुर्भाग्य प्रारम्भ हो गया।

याद रखो, यदि यह देश कभी उठेगा, यदि इस देश की महानता पुनः विश्व में प्रकाशित होगी तो तभी होगी जब आप संस्कृत भाषा का अध्ययन करेंगे, जब आपको अपने अतीत की उपलब्धियों के अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आप अपने इतिहास, अपने पुराण, वेद, दर्शन शास्त्र एवं राजनीति शास्त्र का अध्ययन करेंगे तब आपको गौरव होगा। आचार्य शुक्र ने अपने नीतिशास्त्र में लिखा है कि किसी जाति को जो महान् से महान् हो यदि आप उसे नष्ट करना चाहते हैं तो सबसे पहले उसे शिक्षा से वंचित कर दो। शिक्षा से वंचित करने का तरीका क्या है? कहा कि उसको भोग में लगा दो, ऐशयायत में लगा दो। जब वह ऐशयायत में पड़ जायेगी तो अध्ययन नहीं करेगी। अध्ययन करने के लिए तो तपोमय जीवन की जरूरत होती है।

मैं अपने शिष्यों को बताया करता हूँ कि मैं अपने अध्ययन काल में बरसों तक यह नहीं देखा कि पांव पसार कर कैसे सोया जाता है खाने की तो बात ही अलग थी। प्रातः–सायं केवल एक गिलास दूध मेरा आहार था। छः–सात वर्षों तक हमने यह नहीं देखा कि सोया कैसे जाता है। बैठे–बैठे

आँख खुल जाती थी तो ग्रन्थ मेरे सामने होता था। मेरा कहने का अभिप्राय कि विद्या अध्ययन एक तपस्या है। इसलिए –

तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति।।

(तैत्तिरीय0 ३/४)

आज तपस्या की वृत्ति समाप्त हो गई। आज जितनी ऐशयायत है सब विद्यार्थियों में आपको मिलेगी। यह गलत संस्कार डालने के लिए शिक्षा का गलत स्वरूप सामने आया है। इस प्रकार की शिक्षा तो कुशिक्षा से बदतर है। आप देख सकते हैं कि हमारे भारत के गांव का रहने वाला एक अनपढ़ व्यक्ति अधिक सभ्य है उस पढ़े–लिखे तथाकथित विद्वानों की अपेक्षा जो आज कालेज, युनिवर्सिटियों तथा स्कूलों में विद्या प्राप्त कर रहे हैं। कारण क्या है इसका? कारण यह है कि यह विद्या नहीं है यह तो अविद्या के गर्त में प्रवेश करना है। विद्या का प्रकाश तो संयम, सदाचार और तपस्या मांगता है। जब तक आपको अतीत की उपलब्धियों का बोध नहीं होगा तब तक आप दुनिया के सामने सिर उठा कर खड़े नहीं हो सकते। मैं विश्वास के साथ आपको बता रहा हूँ कि मैं विदेशों में भी जिन विश्वविद्यालयों में जाता हूँ Challenge करता हूँ कि तुम लोगों ने जिन विषयों में मेरे से प्रश्न करना हो पूछ लो। केवल एक विषय मैं नही जानता जिसको गणित कहते हैं। वो मेरा विषय नहीं रहा। हमने उसमें कभी दिमाग भी नहीं लगाया। आप लोगों ने सुना होगा हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने संस्मरण में लिखा है कि जिस विषय के लिए मुझे घर में तथा स्कूल में मार पड़ती थी वह विषय मेरे जीवन में कभी काम नहीं आया। वह कौन सा विषय था? गणित। आईन–स्टाईन नाम का महान् यहूदी विद्वान् हुआ है उसको पैसे गिनने नहीं आते थे।

मेरा कहने का अभिप्राय कि ज्ञान–विज्ञान का स्रोत आपके लिए तभी प्रकाशित होगा जब आप संयमित जीवन जी करके अपने अतीत की उपलब्धियों का अध्ययन करेंगे। मिथ्या अहंकार तथा भ्रान्ति से मुक्त होकर

आप अपने अतीत की उपलब्धियों का अनुसंधान करें, अध्ययन करें। मैं जानता हूँ सभी संस्कृत नहीं जानते परन्तु हिन्दी तो जानते हैं। ग्रन्थ न पढ़िए रामायण तो पढ़िए। तुलसीदास जी ने वेद–पुराण शास्त्रों का सार लिखा है। आज लोग मेरे पास आये थे उन्होंने एक बार नहीं अनेकों बार पूछा कि आप बतायें तुलसीदास जी ने यह क्यों लिखा –

ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी।

(रा0 ५/५९–६)

अरे भाई ! ढोल, गवांर, शूद्र, पशु, नारी लिखा तो इसमें आपको संशय क्या हो गया? एक बात मैं आपको बताऊं कि महाकाव्य में जो कुछ लिखा जाता है वह लेखक का मत नहीं होता। महाकाव्य का अध्ययन कीजिए। उसके लक्षण पढ़िए आप लोग। उसमें नायक प्रतिनायक दो होते हैं। उसमें सामान्य व्यक्तियों की भी कथनी होती है। उसमें जो लेखक हैं वह केवल अपने नायक के कथन का ही दायित्व अपने ऊपर लेता है। रामायण में जब मन्दोदरी रावण को समझा रही थी कि राम परमात्मा हैं उनकी शरण में चले जाओ, कुल का नाश नहीं होगा। रावण ने क्या कहा जानते हो?

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं।
अवगुन आठ सदा उर रहहीं।।

(रा0 ६/१६–२)

यह किसने कहा? रावण ने। जो रावण ने कहा वह तुलसीदास का मत होगा क्या? अरे भाई) यह रावण कह रहा है। तुम रावण की बात को प्रमाण क्यों मान रहे हो? कहा कि फिर राम से पूछिए राम क्या कहते हैं? कहा राम कहते हैं–

हा गुन खानि जानकी सीता।
रूप सील ब्रत नेम पुनीता।।

राम तो गुणखानी बताते हैं नारी को और रावण 'अवगुन आठ

सदा उर रहहीं' बताता है। अब बताइये, राम को आप आदर्श मानेंगे या रावण को? राम का कहा तुलसी का कहा होगा या रावण का कहा? एक देवी मेरे पास आई कहने लगी कि बाबा तुलसी ने तो नारियों के लिए लिख दिया– **'अवगुंन आठ सदा उर रहहीं'**– पुरुषों के लिए कुछ नहीं लिखा। मैंने विनोद में उसे कहा कि मेरी माँ! तुलसी बेचारे तो यह लिखे नहीं, यदि थोड़ी देर के लिए सत्य भी मान लो तो तुलसी को तो नारियों के आठ अवगुण गिनने में आये, गिना दिये लेकिन पुरुषों के अवगुण तो वो गिन ही नहीं सके इसलिए उन्होंने साफ शब्दों में पुरुषों के लिए कह दिया –

साहस अनृत चपलता माया।
भय अबिबेक असौच अदायां।।

(रा० ६/१६–३)

अवगुन सिंधु मंदमति कामी।
बेद बिदूषक परधन स्वामी।।

(रा० ७/४०–७)

इसी रूप से रामायण में तुलसीदास जी ने नर पशु कहा है –

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना।
ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना।।

(रा० ५/५०–१)

रामचन्द्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान।।

(रा० ७/७८)

तुलसीदास जी ने कहा कि नर पशु होते हैं। तुलसीदास जी ने अपनी तरफ से नहीं कहा शास्त्र कहता है कि –

येषां न विद्या न तपो न दानं न चापिशीलं न गुणोः न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

(चाण्क्य० १०/७)

जिनमें न विद्या, न तप, न दान, न शील और न धर्म है, आकृति उनकी मनुष्यों की है लेकिन हैं वो पशु। मृगा माने पशु होता है। 'मृ' माने जंगल 'ग' माने गमन करने वाला अर्थात् जंगल में गमन करने वाला। वो पालतु पशु नहीं जंगली पशु है। उसी को तुलसीदास जी ने लिख दिया। अरे भाई! यदि नर पशु होगा तो पशु नारी भी होगी। देवियो! तुम ऐसा कैसे समझती हो कि नर पशु को तो तुम जन्म दे सकती हो पशु नारी को जन्म नहीं दे सकती। सृष्टि का यह नियम है –

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।

(रा० १/६)

इसलिए उन्होंने यदि लिख दिया– **'ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी।'** तो पशु और नारी को अलग–अलग क्यों करते हो? उन्होंने तो पशुनारी कहा है।

खैर यह तो प्रसंगानुसार मैंने आपको बात सुना दी। मैं आप लोगों को केवल इतना बताना चाहता था कि आप अपने अतीत की उपलब्धियों को समझें। भारतीय जीवन विकास में एक बहुत सुन्दर सुव्यवस्था है। हमारे यहां सनातन धर्म के सिद्धान्त में यह बात समझाई गई है कि सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण, इन तीनों से युक्त सृष्टि प्रकृति की अभिव्यक्ति है।

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि।।

(गीता ७/१२)

भगवान् ने इस शब्द को स्पष्ट रूप से कहा है कि सात्त्विक, राजस और तामस भाव, ये तो मेरे प्रकाश में अभिव्यक्त होते हैं। ये आप लोग जानते हो कि परमात्मा के प्रकाश में ही प्रकृति का विकास और संवरण होता है। गीता में भगवान् ने कहा है कि –

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।।

(गीता ९/१०)

परमात्मा के प्रकाश में जब तीनों गुणों का आविर्भाव हुआ तो इन तीनों गुणों के अनुसार सृष्टि का क्रम चला। सर्वप्रथम सतोगुणी सृष्टि हुई जिसको दैव सर्ग कहते हैं। उसके पश्चात् रजोगुणी सृष्टि हुई जिसको मानव सर्ग कहते हैं। इसके पश्चात् तमोगुणी सृष्टि हुई जिसको पाशिवक सर्ग कहते हैं। ये तीन सर्ग हैं – दैव सर्ग, मानवीय सर्ग और आसुरी सर्ग। आसुरी सर्ग माने पाशिवक सर्ग। पाशिवक सर्ग तमोगुण का परिणाम है, उसको तिर्यक सर्ग भी कहते हैं। तिर्यक सर्ग माने जिसका मुँह तिरछा होता है। There are five categories of life - vegetation life, insect life, raptile life, bird life and then animal life. उसके पश्चात् फिर मनुष्य जीवन है। क्रम ऐसा बना कि प्रकृति का जो आविर्भाव हुआ उसमें पहले सतोगुण, फिर रजोगुण और तमोगुण है इसलिए महर्षि पतंजलि ने इसकी व्याख्या करते हुए समझाया है कि –

प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम्।

(यो0सू0 २/१८)

यह सृष्टि क्रम इस रूप में बताया है। पहले सतोगुण का प्रकाश है, फिर रजोगुण की क्रिया है और फिर तमोगुण की स्थिति है। इसी को वैज्ञानिकों ने कहा है Gases, Liquid and Solid इसी को छान्दोग्योपनिषद् में तेज, अप और अन्न कहा। यह जो त्रिगुणात्मिक सृष्टि बनी इस सृष्टि में एक तो दैव सर्ग है जो दिव्य सर्ग है। दिव्य सर्ग उसे कहते हैं जो सृष्टि के आदि में प्रकट हुआ है और अन्त तक ऐसे ही रहेगा। सृष्टि का प्रलय काल जब आयेगा तो उसी में लीन हो जायेगा। दूसरा मानव सर्ग है। यह कर्म भूमि है क्योंकि रजोगुण क्रिया प्रधान है। यहां पर कोई जैसा करेगा वैसा भरेगा।

नीचे वाला तिर्यक सर्ग है। तिर्यक सर्ग भोग योनियां हैं। भोग माने अनुभूति। पशु केवल अनुभूति तो कर सकते हैं कर्म नहीं कर सकते। मनुष्य अनुभव भी करता है और उसको बदलने की कोशिश भी करता है लेकिन पशु अनुभव करेगा उसे बदल नहीं पायेगा। उसके पास कोई ऐसी प्रक्रिया ही नहीं कि उसको बदल दे इसलिए उसको भोग योनि कहते हैं। वह भोग योनि है कर्म योनि नहीं है लेकिन मनुष्य योनि भोग योनि भी है कर्म योनि भी है। यहां पर आप अनुभव भी करते हैं और क्रिया द्वारा परिणत भी कर सकते हैं तथा परिवर्तित भी कर सकते हैं। You are rational being and tool makers too. You can create some new tools also. आप केवल अनुभव ही नहीं करते, बुद्धि का प्रयोग करके कुछ निर्माण भी कर लेते हैं। गर्मी लगी तो आपने पंखों का निर्माण कर लिया। सर्दी लगी तो आपने हीटर बना लिया, आग जला कर बैठ गए। भूख लगी तो आपने खोज करके अन्न पैदा करके खा लिया, पशु पकड़ कर दूध निकाल कर पी लिया। आपके पास इतनी बुद्धि है जिसका आप प्रयोग करके आगे बढ़ सकते हैं। इस सर्ग का क्रम इस प्रकार है। पहले जड़ जीवन है, फिर वनस्पति जीवन है, फिर कृमि जीवन है, फिर सरीसृप जीवन है और तत्पश्चात् पशु जीवन आता है। ये पांच योनियां आपके नीचे की हैं और छटी मनुष्य योनि है। अब तो अनुसंधानकर्त्ताओं ने कहा है कि ये जो पुरानी बाईबिल वाले हैं ये भी भारत से आये हुए लोग हैं जिन्हें यहूदी कहते हैं। कभी वे किसी कारणवश निकाल दिए गये थे। वे बाहर चले आए और अपने संस्कारों को भूल गये। हमारे यहां कहा जाता है कि छटी स्थिति में मनुष्य है और बाईबिल में लिखा गया है कि पांच दिन भगवान् ने सृष्टि की और छटे दिन उसने मनुष्य को बनाया। सातवें दिन जाकर भगवान् सो गया क्योंकि थक गया था बेचारा। अज्ञानियों को समझाने के लिए तो यही कहानियाँ हो सकती हैं न? जब व्यक्ति विज्ञान का सहारा लेकर के सत्य को नहीं समझ पाता तो अज्ञान ग्रसित होने पर

उसको समझाने के लिए ऐसी कहानियाँ घड़ी जाती हैं। जैसे बाईबिल में हैं वैसे अन्य ग्रन्थों में हैं। वे वेद नहीं हैं कि उनमें तर्क की बात समझाई जाए, अनुसंधान की बात समझाई जाए। ये सब कहानियों के ग्रन्थ हैं। भारत में भी जब अज्ञानता बड़ी तो यहाँ भी ऐसी कहानियाँ लिखी गई जो आपको अनेकों ग्रन्थों में मिलेंगी लेकिन वो हैं तत्त्व–विज्ञान को समझाने की प्रक्रियाएँ।

मैं आप लोगों को यह बात समझा रहा था कि जब यह जीव मनुष्य स्थिति में आया तो इसका विकास क्रम शुरू हुआ। तमोगुण की स्थिति से इसे रजोगुण में जाना है, रजोगुण की स्थिति से इसे सतोगुण में जाना है। सतोगुण की स्थिति से इसे गुणातीत बनना है। मोक्ष किसे कहते हैं? गुणातीत अवस्था को। किसी गुण में आबद्ध होने को मोक्ष नहीं कहते। प्रत्येक मनुष्य पहले तो तमोगुण की स्थिति में आता है इसीलिए हमारे यहाँ शास्त्रकारों ने कहा **'जन्मना जायते शूद्रः'** जन्म से सब शूद्र होते हैं। शूद्र किसे कहते हैं? उपनिषदों में बताया गया कि शोकमय पदार्थों के पीछे जो दौड़ता है उसे शूद्र कहते हैं। इस परिभाषा अनुसार यदि देखो तो आज दुनिया में सभी उसी श्रेणी में हैं। क्यों? ये शोकदायी पदार्थों के पीछे दौड़ रहे हैं। हमें पद मिल जाए, हमें पदार्थ मिल जाए। अबोधावस्था में व्यक्ति शोकमय पदार्थों को ही सत्य मानता है। उसी के संग्रह में लगा रहता है। एक बच्चे को झुनझुना पकड़ाइये, वह उठा कर अपने मुंह में डालेगा। क्यों डालेगा? इसलिए कि वह उससे ज्यादा जानता ही नहीं। माँ–बाप उसे सिखाते हैं कि भैया हमें दे दो, हमें दे दो। मुश्किल से उसमें देने की आदत आती है, नहीं तो देता नहीं। पहले तो एक–एक घर में चार–चार, पांच–पांच, दस–दस भाई–बहन होते थे। उनमें बाँटकर खाने की वृत्ति जागृत हो जाती थी। अब तो हम दो एक, हमारे एक। अब एक में बाँटेगा किसमें? जब बाँटने की वृत्ति ही नहीं आई तो वहां Individuation अपने आप पैदा हो जाएगा। उसमें केवल अकेले भोगने की वृत्ति है, लूटने की वृत्ति है और उसी का परिणाम

यह नग्न नृत्य हो रहा है जो आप संसार में देख रहे हो।

मैं आप लोगों को बता रहा था कि हमारे यहाँ प्रत्येक व्यक्ति को आगे विकास करने की खुली छूट है। आप अपने उस स्तर से ऊपर उठने के लिए स्वतन्त्र हैं। ज्ञान का आश्रय लीजिए। किसी सद्‌गुरु की शरण लीजिए। आजकल जो तथाकथित सद्‌गुरु घूम रहे हैं, उनके चक्र में न पड़िए जो हज़ारों को बैठा करके लाऊड स्पीकर से मन्त्र दे रहे हैं। लोग मन्त्र लेकर घर जा रहे हैं, साल दो साल जपते हैं तो उन्हें लगता है कि कोई लाभ तो हुआ नहीं। अरे वेद में तुम्हें निर्देश दिया है –

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।

(मुण्डक० १/२–१२)

तुम किसी श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ के पास जाओ, उसको गुरु रूप में वरण करो। आजकल तो तमाशा देखिए। हमारे यहाँ – **'विद्यावतां भागवते परीक्षा'**। संस्कृत साहित्य का यह वाक्य है कि विद्वानों की परीक्षा श्रीमद्‌भागवत् ग्रन्थ से होती है क्योंकि उसमें बहुत गूढतम रहस्यमय तत्त्वों का विश्लेषण है। यह परमहंस संहिता है। आजकल भागवत कथा वो कहते हुए घूम रहे हैं जिनको संस्कृत शब्द का बोध ही नहीं है। महान् तत्त्वज्ञ व्यासदेव के पुत्र शुकदेव जो दिगम्बर हैं, जिनके शरीर पर वस्त्र भी नहीं है, वे गंगा के तट पर बैठे हुए मृत्यु के मुँह में जाने वाले परीक्षित को उस परम तत्त्व का अवबोधन करा रहे हैं। वहां वो ताल–मंजीरे नहीं बजा रहे थे लेकिन आज भागवत की क्या दुर्गति हो रही है, देख रहे हो न? उसमें आप लोग आनन्द ले रहे हो वाह ! बहुत अच्छी बात है। क्या सुन्दर कथा सुनाई पंडित जी ने। अरे भले आदमियो! यदि यही भागवत की कथा है तो तत्त्व–विज्ञान का क्या बनेगा? फिर तुम किस ब्रह्मविद्या को प्राप्त करोगे उसके माध्यम से? इसलिए मैं आप लोगों को बता रहा था कि गुरु की शरण में जाओ। हम भी अपने गुरु के चरणों में बैठ करके अध्ययन किए हैं। इस पर मुझे गौरव है

कि मुझे ऐसे गुरु मिले जिनके चरणों में बैठकर के मैंने वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया, अनुसंधान किया है। गुरु भक्ति पाखण्ड नहीं है, दम्भ नहीं है बल्कि वैदिक विज्ञान का एक परम्परागत नियम है।

याद रखो जीवन के विकास की स्वतन्त्रता शाश्वत सनातन धर्म में सदा बनी रही है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति उस विकास की प्रक्रिया में आगे बढ़ सकता है। आप लोग धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझिए और अपने विकास की प्रक्रिया को अपनाते हुए आगे बढ़ने का प्रयत्न कीजिए। साधन कीजिए, स्वाध्याय कीजिए। अपने बच्चों को संस्कृत पढाइये। वे अंग्रेजी न पढ़ें ऐसा मैं नहीं कहता। अंग्रेजी भी पढ़ें लेकिन उन्हें संस्कृत पढ़ायेंगे तो अपने अतीत की उपलब्धियों को वो समझेंगे। इससे आपको गौरव होगा और उनको भी गौरव होगा। आप सही सनातन धर्म के स्वरूप को समझ पायेंगे इसलिए सनातन धर्म की प्रक्रिया मैं आप लोगों को समझा रहा हूं।

पहले आप शारीरासक्त होते हैं। यहाँ से ऊपर उठते हैं तो इन्द्रियासक्त होते हैं। इन्द्रियों से ऊपर उठेंगे तो मनासक्त होंगे। मन से ऊपर उठते हैं तो अहं में आसक्त होते हैं। अहं से ऊपर उठते हैं तो बुद्धि में आसक्त होते हैं। इन पांचों से जब आप ऊपर उठते हैं तब आप आत्मस्थ होते हैं। इसीलिए हमारे यहाँ अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोष, ये चेतना के पांच स्तर बताये गए हैं। इन पांचों कोषों की व्याख्या करके ऋषियों ने बताया कि तुम पांचों कोषों से परे हो जाओ। धर्मशास्त्र उसके लिए अनेकों प्रकार की विधाएँ समझाता है आपको। आप समझ सकते हैं, कर सकते हैं।

एक छोटी सी बात और बता दूं, हम लोग जिस विचारधारा को दुनिया में फैला रहे हैं वह शाश्वत सनातन धर्म का अध्यात्मवाद है जिसमें किसी प्रकार के भेदभाव के लिए स्थान नहीं है। मानवमात्र उसका अधिकारी है क्योंकि मानवमात्र को ही परमात्मा ने ये सारी चीज़ें प्रदान की हैं। उसके साथ हम यह भी चाहते हैं कि आपके बच्चे या आप लोगों में से जो भी चाहे

इस प्रकार के कार्यक्रम में भाग ले सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय ब्रह्मर्षि मिशन के द्वारा बी0ए0 के पश्चात् तीन वर्ष का कोर्स करवाया जाता है। इसके पश्चात् सत्य को जानने की जिज्ञासा लेकर साधना में प्रवृत हो सकते हो। अपने देश में अपने धर्म की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्न कर सकते हो, प्रचार–प्रसार का काम कर सकते हो। आज समय पूरा हो गया। कल पुनः इसी स्थान पर प्रातः दस से बारह बजे तक आप से मिलूँगा।

हरि ऊँ तत्सत्

४

परावर रूप में उपस्थित मेरी प्रिय आत्माओ!

करुणानिधान भगवान् की करुणा आप सभी के लिए सदैव कल्याण का सृजन करती रहे, यह मेरी आन्तरिक शुभ कामना। यहाँ कार्यक्रम तो तीन दिन का ही था। आज का कार्यक्रम आपको घेलुआ में मिल गया। मैं आप लोगों को कुछ बातें बताने जा रहा हूँ जिनका आप मनन करें। शाश्वत सनातन धर्म में बहुदेववाद नहीं है, ब्रह्मवाद है। **वयं ब्रह्मवादिनः** – हम सभी ब्रह्मवादी हैं बहुदेववादी नहीं हैं। पश्चिम के अज्ञानी मिशनरियों ने यह भ्रान्ति फैलाई कि हिन्दुओं में बहुत से देवी–देवता पूजे जाते हैं। वे बहुदेववादी हैं लेकिन यह उनकी भ्रान्ति थी, उनकी अज्ञानता थी। **एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म**– जिसके बराबर का कोई दूसरा नहीं है, उसे ब्रह्म कहते हैं। उस ब्रह्म की अभिव्यक्ति अनन्त रूपों में होती है इसलिए हम एक देव की अनन्त शक्तियों को स्वीकार करते हैं। देव की शक्ति की अभिव्यक्ति के माध्यम को हम देवता कहते हैं। एक देव है सच्चिदानन्द, उसकी शक्ति की अभिव्यक्ति का जो माध्यम है उसकी संज्ञा हमारे वेद में देवता है। जैसे सूर्यो देवता, चन्द्रमा देवता, वरुण देवता, पृथ्वी देवता। ये सभी उस एक देव की अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। देवता हमारे यहां स्त्रीलिंग है पुलिंग नहीं है। हम एक देववादी हैं–

एको देव इति श्रुतिं।

ब्रह्म की अनन्त शक्तियों की उपासना में हम निरत रहते हैं। आपको

प्यास लगेगी तो पानी चाहिए, शीत लगेगी तो आग चाहिए, अन्धकार होगा तो प्रकाश चाहिए, भूख लगेगी तो अन्न चाहिए लेकिन यदि आप कहो कि हमको चाहे भूख लगे या प्यास लगे, चाहे सर्दी लगे, चाहे गर्मी लगे, हम तो एक ही पदार्थ का सेवन करेंगे। वह कौन सा पदार्थ होगा भाई? क्या कोई बता सकता है? ऐसा तो कोई पदार्थ है ही नहीं।

एक बार कुछ वैज्ञानिक मेरे से चर्चा कर रहे थे। उन्होंने पूछा कि आप बहु–देवता को कैसे स्वीकार करते हैं? मैंने उनसे कहा कि Do you know energy appeared in form of stone and grain too? ऊर्जा जो है वही अन्न रूप में प्रकट है, वही पत्थर के रूप में प्रकट है। तत्त्वतः दोनों एक ही हैं। पर जब तुम्हें भूख लगेगी तुम क्या खाओगे, अन्न या पत्थर? कहा कि अन्न खायेंगे। क्यों? क्या तुम जानते नहीं कि Energy is source of life ? You can get that energy from stone too because stone is the manifestation of energy. ऊर्जा ही जीवन का आधार है और वह ऊर्जा तुम पत्थर से भी ले सकते हो, वो क्यों नहीं खाते? इसका कोई उत्तर नहीं उनके पास। हम कहा कि इसी रूप से हमें जिस प्रकार की परमात्मा से शक्ति की जरूरत होती है, उस देवता के माध्यम से परमात्मा की आराधना करते हैं। हम सनातनी बिल्कुल विज्ञान–सम्मत धर्म को मानते हैं, अज्ञान–सम्मत धर्म को नहीं मानते। हमारे यहाँ यह नहीं कि इसमें विश्वास करो तब तुम Christian बनोगे। मैं किसी धर्म की निन्दा नहीं करता। उपासना की प्रक्रियायें सबकी भिन्न–भिन्न हैं लेकिन जो यथार्थ है उसको तो कहने में हमें कोई संकोच नहीं है। कोई भी व्यक्ति Christian नहीं बन सकता यदि पांच में विश्वास न करे। God में विश्वास, God के पुत्र ईसा मसीह में विश्वास, पवित्रात्मा में विश्वास, आखिरी दिन में विश्वास और बाईबिल में विश्वास। इन पांच में विश्वास करो तो ईसाई बनो। जानने की जरूरत नहीं केवल विश्वास होना चाहिए। इसी रूप से पांच में विश्वास करो तो मुसलमान बन

जाओ। वो पांच क्या हैं– खुदा में विश्वास, खुदा के पैगम्बर में विश्वास कि मुहम्मद साहिब अल्लाह के रसूल हैं, आखिरी दिन में विश्वास–उसे कयामत का दिन कहते हैं और पांचवां है कि आप विश्वास करें जहाँ तक अल्लाह के रसूल का संदेश फैला हुआ है उतनी जगह पाक है, जहाँ उनका संदेश नहीं है उतनी जगह नापाक है। सारी दुनिया को दो भागों में बाँटा गया है – एक वह भाग जहाँ अल्लाह के रसूल को लोग मानते हैं और एक वो भाग जहाँ अल्लाह के रसूल को लोग नहीं मानते। जो लोग अल्लाह के रसूल को मानने वाले हैं वो तो मोमिन हैं और जो लोग अल्लाह के रसूल को नहीं मानते वो कुफ्र करने वाले काफिर हैं। यदि ऐसे काफिरों से आप इस धरती को बचा लें और इसे अल्लाह के हवाले करदें तो आप बहुत पुण्य कार्य करने वाले हैं और यदि काफिरों की धरती बनी रहेगी तो नापाक हैं। वहाँ जाना भी आपके लिए पाप है। जन्नत और जहन्नुम, ये दोनों किसके आधार पर माना जाता है? जो अल्लाह के रसूल में विश्वास करेगा उसे तो जन्नत मिलेगी और जो उसमें विश्वास नहीं करेगा वो जहन्नुम में जायेगा। ये पांच विश्वास के आधार हैं इस्लाम के। आप इसमें तर्क नहीं लगा सकते, बुद्धि नहीं लगा सकते।

एक बार एक ईसाई से मेरी चर्चा होने लगी। मैंने उनसे पूछा कि भाई तुम्हारी बाईबिल में कुछ ऐसी बाते हैं जो मेरी समझ में नहीं आई, मुझे समझा दो। यह १९७२ की बात है जब मैं पहली बार इंग्लैंड गया, वहाँ प्रचार होने लगा तो लोगों में जागृति आई। एक अंग्रेज ने अपने बिशप को लिखा जो वहाँ का 'हैड' था कि भारत का एक दार्शनिक आया है और वह Challenge कर रहा है कि हिन्दू धर्म ईसाई धर्म के ऊपर है! आपके पास कोई विद्वान् हो जो उससे शास्त्रार्थ कर सके। वहाँ पर जो हैड था Church of England का उसने एक अपना विद्वान् पादरी भेजा। एक चर्च में मिलने का निश्चय हुआ। हम लोग मिले चर्चा होने लगी। चर्चा पहले यहीं से शुरू

हुई कि हिन्दू बहुत से देवताओं में विश्वास करते हैं। क्या वे एक भगवान् के बारे में नहीं जानते? खैर जैसा मैं अभी बता रहा था मैंने उसे समझाया। फिर मैंने उससे पूछा कि तुम्हारी बाईबिल में ऐसी बातें हैं जो अभी तक मेरी समझ में नहीं आई। उसने मेरे से पूछा कि आपने बाईबिल पढ़ा है? हम कहा कि पढ़ा हूँ तभी तो कह रहा हूँ। उसने कहा कि क्या समझ में नहीं आया वह मैं बता देता हूँ? हमने कहा कि तुम्हारी बाईबिल के पहले अध्याय में एक बात लिखी हुई है कि जब परमात्मा सृष्टि बनाने लगा तो एक दिन में यह बनाया, दूसरे दिन में वह बनाया और चौथे दिन उसने सूर्य को बनाया। मैंने उससे पूछा कि तुम यह जानते हो कि दिन और रात के मापतौल की गणना जो है, वह किससे होती है? कहा कि सूर्य से। हम कहा कि सूर्य तो चौथे दिन बना तो तीन दिन गणना किससे हुई? वो क्या कहता है जानते हो? You Hindu always criticise every holy book. वाह ! भाई, वाह! हम कहा कि इतना सीधा सा प्रश्न मैं पूछ रहा हूं और तुम्हारे पास इसका कोई उत्तर ही नहीं है। हम कहा कि This is the blind faith and we Hindu always use our brain. Be aware, if you want to be religious you must use your reasoning power because reasoning is the first step of religion and this is the greatest gift of Godhead. मैंने उससे कहा कि यदि तुम्हें धर्मात्मा बनना है तो सबसे पहले अपनी बुद्धि का प्रयोग करो। यह बुद्धि परमात्मा की सबसे बड़ी देन है मनुष्य के लिए। तुम्हारी बाईबिल में यह सबसे पहले लिखा हुआ है कि यदि तुम ज्ञान वृक्ष का फल खा लोगे तो जहन्नुम में चले जाओगे और यदि तुम ज्ञान वृक्ष का फल नहीं खाओगे तो 'हैवन' में रहोगे। बाईबिल में लिखा हुआ है कि ज्ञान वृक्ष का फल खाने से एडम और ईव स्वर्ग से धकेल दिए गए। हम कहा कि तुम्हारे यहाँ ज्ञान की उपासना नरक में जाने का साधन है। हमारे यहां ज्ञान का अवलम्बन मोक्ष प्राप्त करने का साधन है। भला बताओ, हमारी तुम्हारी बराबरी कहाँ हो सकती है? तुम

ज्ञानी होना चाहते हो कि अज्ञानी? अब वह क्या उत्तर दे मेरे को। इसलिए मैं तुम लोगों को बता रहा हूँ कि वेद के विज्ञान के प्रकाश में जीवन विकास की व्यवस्था को यदि अपनाओगे तब तो दुनिया में अमन चैन होगा। दुनिया में अन्धविश्वास की वृद्धि करने से संघर्ष बढ़ेगा, विनाश होगा। कभी भी मानव जाति शान्ति से नहीं रह सकती।

मैं आप को बता रहा था कि हमारे यहाँ धर्म जो है वह वैज्ञानिक दृष्टि से समझा जाता है। हम विज्ञान के प्रकाश में ही सत्य के बोध का प्रयत्न करते हैं। सृष्टि का मूलाधार एक परब्रह्म परमात्मा है। उस परब्रह्म परमात्मा से विराट् का आविर्भाव होता है। विराट् के पश्चात् फिर राट् का आविर्भाव होता है। राट् के पश्चात् फिर व्यक्ति का आविर्भाव होता है। ये ब्रह्म के विवर्त हैं। 'विवर्त' माने **'विशिष्ट रूपेण वर्तः इति विवर्तः'** ये ब्रह्म की विशिष्टाभिव्यक्ति हैं। सबसे पहले ब्रह्म से विराट् है, विराट् से राट् है। यह राट् क्या बला है? वेद कहता है –

आसमुद्र पर्यन्तः एक राट्।

यह पृथ्वी जो हमारी है इस पर रहने वाले जितने मनुष्य समाज के लोग हैं इनको राट् कहते हैं। यह राट् शब्द से ही राष्ट्र शब्द बना हुआ है – राष्ट्रीय संघमनि। ऐसा ऋग्वेद का मन्त्र है। पहले तो ब्रह्म है, ब्रह्म से विराट् और विराट् से राष्ट्र। इसका तात्त्विक अर्थ क्या है? Causal phenomenon of universes. There is not only one universe but there are numerous universes. वहां एक ब्रह्मण्ड नहीं है अनन्त ब्रह्मण्ड हैं। पश्चिम वालों को तो अब पता चला है कि अनन्त ब्रह्मण्ड हैं, १७२ करोड़ ब्रह्माण्डों की खोज आजकल के खगोलशास्त्रियों ने की है। मैंने उनसे पूछा कि क्या इतने ही हैं? कहा कि नहीं वे अनगिनत हैं। मैंने उनसे कहा कि आज से ४०० वर्ष पूर्व हुए हैं महात्मा तुलसीदास जी जिन्होंने अपनी रामायण में लिखा है कि भगवान् राम ने जब अपनी माँ के सामने विराट् रूप दिखाया तो–

देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड।।

(रा० १/२०१)

अरे तुम्हें तो आज पता चला है कि अनन्त ब्रह्मण्ड हैं, हम तो हमेशा अनन्त ब्रह्माण्डनायक कह कर परमात्मा की आराधना करते हैं। अनन्त ब्रह्माण्ड के समुच्य को विराट् कहते हैं और एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य और सूर्य के अंश रूप में उसके ग्रह–उपग्रह होते हैं। उसी में से हमारी पृथ्वी एक टुकड़ा है। वो तो विराट् बना यह बना राट्। जो कुछ विराट् में है वही राट् में है, वही व्यष्टि में है। जो ब्रह्म में है वही विराट् में है, जो विराट् में है वही राष्ट्र में है, जो राष्ट्र में है वही व्यक्ति में है। हमारे यहाँ पुराणकारों ने लिखा कि समस्त वेद पढ़ने से क्या प्रयोजन? यदि तुम एक पुरुष सूक्त पढ़ लो तो उसी से तुम्हें वेद का सारांश पता चल जायेगा। पुरुष सूक्त वेद का सार है क्योंकि पुरुष सूक्त में ब्रह्म की, विराट् की, राट् की और व्यष्टि की व्याख्या है। जहाँ पर यह बात आई –

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्च्यत पश्च्चाद्भूमिमथो पुरः।।

(पु० सू० ५)

वहाँ पर पहले ब्रह्म की व्याख्या की, फिर उससे विराट् की उत्पति की व्याख्या की –

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।

(पु० सू० ५)

उससे विराट् उत्पन्न हुआ लेकिन जो पुरुष परमात्मा है वह उससे भी परे है। विराट् किस रूप में आया? कहा –

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्रक्षः सहस्त्रपात्।

(पु० सू० १)

वह अनन्त रूपों में आया। विराट् को जब राट् रूप में बांधा गया तो क्या रूप बन गया उसका?

मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।

(पु० सू० १०)

उस राष्ट्र का मुख क्या बना? बाहु क्या बना? ऊरू क्या बना? पाद किसे कहा गया? यह प्रश्न है। यह नहीं कहीं बताया गया कि उस विराट् के मुख से कौन पैदा हुआ। बाहु से कौन पैदा हुआ, आप मन्त्र पढ़िए –

मुखं किमस्यात्।

'किं अस्य मुखंः आसीत' । उसका मुख क्या था? भुजाएँ क्या थी? ऊरू और चरण क्या कहे गये हैं वहाँ पर? उसकी व्याख्या कर दी –

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्न्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्द्रोऽअजायत।।

(पु० सू० ११)

जैसे विराट् पुरुष है वैसे राट् पुरुष है और वैसे ही व्यष्टि पुरुष है। व्यष्टि पुरुष के भी मुख है, हाथ हैं, धड़ है और पांव हैं। राष्ट्र पुरुष के भी मुख, हाथ, धड़ और पांव इत्यादि हैं। जैसे विराट् पुरुष का द्यू लोक सर है, अन्तरिक्ष उसका धड़ है, पृथ्वी उसका पांव है उसी रूप से राष्ट्र पुरुष के भी अंग बताए गए हैं। यहाँ पर तो केवल ब्रह्म से अभिव्यक्त हुए विराट्, राष्ट्र और व्यक्ति इन तीनों के स्वरूपों की व्याख्या की गई है। कोई पवित्र है वा अपवित्र है, यह तो कहा ही नहीं गया।

एक बार कुछ विद्वान् हमारे पीछे लग गये कि आप गलत व्याख्या करते हो। हम कहा कि सही व्याख्या आप लोग हमें बता दो भाई। कहने लगे कि शूद्र तो भगवान् के पांव से पैदा हुआ है –

पद्भयां शूद्द्रोऽअजायत।।

हम कहा कि यह तो हम भी मानते हैं। कहा कि फिर? हम कहा कि

आपको पता है कि किस अंग का देवता कौन है? कहा पता है। हम कहा कि चरण का देवता कौन है? कहा कि विष्णु। मुख का देवता कौन है? कहा कि अग्नि। हम कहा कि अग्नि श्रेष्ठ है या विष्णु। आप तो कुतर्क करते हैं। अरे भाई सीधी बात पूछो तो कुतर्क लगता है, तुम्हें ? कोई मेरे पास आता है तो मेरा मुंह स्पर्श करता है या मेरा पांव स्पर्श करता है? पूजा किसकी होती है पांव की या सर की? यदि कोई कहे कि मैं तुम्हारे सर की पूजा करूंगा इसका अर्थ तो आप लोग जानते हो कि क्या होता है? अर्थ ही बदल जाता है। बोले हां। मैने एक बात और कही उस सज्जन से। हम कहा कि तुम यह जानते हो कि भगवान् के चरण से गंगा जी पैदा हुई हैं? हम कहा कि जो भगवान् के चरण से पैदा हुई वह अपवित्र हो सकती है तो गंगा जी से अधिक अपवित्र तो कोई हो नहीं सकता क्योंकि वह तो उनके पांव के अंगूठे से पैदा हुई हैं परन्तु दुनिया में गंगा जी से पवित्र कोई है नहीं?

मेरा कहने का भाव कि मनुष्य की बुद्धि क्यों काम नहीं करती? यहां तो पवित्रता–अपवित्रता की कोई बात नहीं है, बात है एक स्वरूप की। समाज में जो श्रमिक है, जो मेहनत करता है वह चरण स्थानीय है। उसी के ऊपर यह सारी बाबूगिरी चलती है। ये कलैक्टर हैं, इंजीनियर हैं, डाक्टर हैं, प्रोफेसर हैं, जज हैं, ये सब किसके ऊपर जी रहे हैं? उसी श्रमिक के ऊपर जो अन्न पैदा करके दे रहा है और हम सारे खा रहे हैं। क्या कलम घिसाने से अन्न पैदा होता है? फैक्टरी में अन्न पैदा किया जाता है क्या? बिल्कुल नहीं। फिर खाते क्या हो? लोहा खाते हो, सोना खाते हो, हीरा खाते हो, चांदी खाते हो, नोट खाते हो या अन्न खाते हो? छापेखाने में नोट छापी जा सकती है लेकिन छापेखाने में अन्न सृजन नहीं किया जाता जो तुम्हारे जीवन का आधार है क्योंकि तुम खड़े होते हो तो पांव के बल खड़े होते हो। पांव तुम्हारा न हो तो तुम खड़े नहीं हो सकते इसीलिए तो बताया है कि जीवन का आधार चरण स्थानीय है। यह तो उसकी महिमा है। उसकी निन्दा

कहाँ हो गई इसमें? लेकिन नहीं आजकल अज्ञानी लोग जातिवाद, सम्प्रदायवाद, पंथवाद, धर्म के नाम पर इस देश की महान् संस्कृति–सभ्यता को नष्ट करने पर तुले हुए हैं।

अभी दो वर्ष पूर्व काशी से एक यात्रा निकली संत समिति के नाम पर। मैं आजकल संत समिति में सक्रिय हूँ। स्वामी वामदेव जी महाराज का शरीर अभी शान्त हुआ है। उनकी प्ररेणा से मैं इधर सक्रिय हुआ। उन्होंने कहा कि तूने बहुत काम कर लिया। २५ वर्ष तूने विदेश में अपने ज्ञान–विज्ञान को देने में लगा दिए। तुम्हारा इस मातृभूमि के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है कि नहीं है? हम कहा कि कर्त्तव्य तो है महाराज लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरे ज्ञान–विज्ञान की जरूरत भारतवासियों को नहीं है। क्यों नहीं है? हम कहा कि इसलिए नहीं है कि अभी कोई टुटहा सा नेता जिसको किसी विषय का पता नहीं है, तुम्हारे नगर में आ जाए, डुग्गी बजा जाए तो हज़ारों लोग इक्टठा हो जाएंगे। वह दूसरों को गालियां देगा और अपनी प्रशंसा करेगा। यदि कहीं अभिनेता आ जाए तो? फिर तो डुग्गी बजाने की भी जरूरत नहीं है। हमने कहा कि हमारे देश के जो नवयुवक हैं वो अभिनेता के उपासक हैं। जो प्रौढ लोग हैं वो नेता के उपासक हैं। नेता और अभिनेता दोनों के बीच में बावरा कहां आकर टपक सकता है इसलिए पश्चिम में ही हम अच्छे हैं। वहाँ के विद्वान्, वहाँ के वैज्ञानिक, वहाँ के पढ़े–लिखे लोग मेरी बात तो समझते हैं। वो कहने लगे कि हो गया, बहुत दिन समझा लिया, अब भारतवासियों को आकर समझाओ। एक बार आकर देखो तो। फिर मैं कुछ वर्षों से इधर लगा। आजकल संत समिति में सक्रिय भाग ले रहा हूं। पहले विदेश में दस मास लगते थे, फिर आठ माह किये और अब चार महीने कर रखा हूँ। आठ महीने भारत में रहता हूँ।

मेरा कहने का अभिप्राय यहाँ की स्थिति अलग है। जब यात्रा निकली ज्ञान वापी से तो मस्जिद पर मेरे मुसलमान भाई खड़े थे। बनारस

की सारी की सारी सी. आर. पी. भी वहाँ खड़ी थी। पूरी फौज वहाँ खड़ी थी। क्लैक्टर और पुलिस के आफिसर भी वहाँ खड़े थे। मैंने कहा कि जो मैं बताने जा रहा हूँ ये जितने हमारे भाई लोग मस्जिद पर खड़े हैं ध्यान से सुनें। इन सब के बाप, दादे, परदादे हिन्दू थे। तलवार की नोक पर उनको मज़बूर किया गया इस्लाम स्वीकार करने के लिए। भारत जब स्वतन्त्र हुआ तो उनको कहा गया कि अल्पसंख्यक रहोगे तो तुम को सुविधा मिलेगी। सुविधावाद के पीछे पड़ करके वो अपने आपको अल्पसंख्यक में आबद्ध कर दिए। जब पाकिस्तान और Middle East से उनको प्रेरणा मिलने लगी तो यह भी सोचने लगे कि यहाँ पर सेरियत का कानून होना चाहिए। हम कहा कि इनसे पूछो कि मन्दिर के पीछे वाला सारा भाग मन्दिर और आगे तोड़कर मस्जिद बनी है। क्या ये नहीं जानते कि यहां शंकर भगवान् की मूर्ति थी पहले? ये अपने आपको भारत माँ की सन्तान होते हुए क्यों समझते हैं कि ये बाबर की सन्तान हैं? बाबर जब आया था तो सौ घुड़सवार लेकर आया था, उसके पास ज्यादा लोग नहीं थे। अपने देश से निकाला गया था इसलिए भारत में शरण लेने के लिए आया था लेकिन यहाँ की फूट को देख करके उसने सोचा कि ऐसी मूर्ख जाति दुनिया में कोई नहीं मिलेगी। जो लोग राणासांगा के साथ बाबर के युद्ध में सहयोगी थे वे सब भारत के हिन्दू और राजपूत थे। केवल अपने जाति द्वेष के नाते उसको परास्त करने के लिए बाबर को सहयोग किया और देश में मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा कराई। महाराणा प्रताप का विरोध करने वाला मानसिंह स्वयं सूर्यवंशी क्षत्रीय था लेकिन अकबर को आगे करके महाराणा प्रताप को नीचा दिखाने के लिए सब कुछ किया उसने।

इतिहास बड़ा दुःखद है। मैं कभी इतिहास की बात छेड़ता नहीं लेकिन मैं लोगों को बता रहा था कि जब तक तुम्हारी यह आस्था रहेगी कि तुम बाबर की सन्तान हो, तुम महमूद गज़नवी की सन्तान हो, तुम मुहम्मद

बिन कासिम की सन्तान हो तब तक देवता न तुम शान्ति से रहोगे न हमें रहने दोगे। मक्का में भी हमारे भगवान् मुक्केश रहते हैं। मुहम्मद साहिब के चाचा उस मन्दिर के पुजारी थे। आज भी उनके द्वारा लिखी हुई भगवान् शंकर की स्तुति दिल्ली में बिरला मन्दिर के पीछे लिखी हुई है, जाकर पढ़ सकते हो। भगवान् शंकर की आराधना ही मुक्केश की आराधना है। मुक्केश को ही लोग मुकेश लिखने लगे हैं।

श्रीनगर यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर मुसलमान भाई से मैंने पूछा कि तुम पहले चन्द्रमा की आराधना करते थे अब चन्द्रमें पर तारे की आराधना करते हो। क्या तूने कभी देखा है कि चन्द्रमा पर तारा उदय हुआ हो? बोले– देखा तो नहीं। हम कहा कि फिर क्यों उपासना करते हो? कहा कि हमने कभी सोचा नहीं। हमें तो बताया गया कि ऐसे करना चाहिए इसलिए हम करते हैं। हम कहा कि अरे भले आदमी हमारे यहाँ अ, उ, म, ये तीन अक्षर हैं 'ऊँ' में। तुम्हारे यहाँ 'ऊँ ' को आमीन कहते हैं। यह अपभ्रंश है उसका, उसके ऊपर जो अर्ध मात्रा है, यह शिव का स्वरूप है। अर्ध मात्रा के ऊपर जो बिन्दी होती है यही तुम्हारे चन्द्रमा के ऊपर तारा है। यह अर्ध मात्रा की उपासना भगवान् शंकर की उपासना है। जो भगवान् शंकर की उपासना करते हैं वो गाढ़े जाते हैं जलाये नहीं जाते इसलिए शैव सम्प्रदाय की यह प्रक्रिया रही है जिसको मुहम्मद साहिब ने अपनाया। आप लोग इतिहास पढ़े हो आपको मालूम होगा, इसलिए मैं आप लोगों को बता रहा था कि भगवान् मुकेश की अराधना करना या मक्केश की अराधना करना तो भगवान् शंकर की ही एक प्रकार से आराधना है। यह तुम लोग करते रहो हमें कोई तकलीफ नहीं है लेकिन अपनी मातृ भूमि, अपने पूर्वजों के प्रति तथा अपने राष्ट्र के प्रति तो श्रद्धा रखो। इस महान् राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करने के लिए प्रयत्न करना कोई अकलमन्दी नहीं है। मेरी यह राय है कि मजहब, पंथ, सम्प्रदाय तथा धर्म की गलत व्याख्या करके मानवता में

विघटन पैदा करना बुद्धिहीनता है। शाश्वत सनातन धर्म की जो सीख है वह मानव मात्र के लिए है। पश्चिम में लोग मेरे से पूछते है कि आप हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। मैं कहता हू कि नहीं हम सनातन धर्म के अनुयायी हैं। हिन्दू धर्म क्या है? हम कहा कि सनातन धर्म तो मानवमात्र के लिए है उसको आजकल हिन्दू मानते हैं इसलिए हिन्दू धर्म कह दिया गया। अपने बच्चेपन में तो हम जानते ही नहीं थे कि हिन्दू धर्म भी कुछ होता है। हम तो सनातन धर्म ही जानते रहे हैं। हमारे किसी भी धर्म ग्रन्थ में आपको हिन्दू धर्म नहीं मिलेगा। हिन्दू शब्द तो मिलेगा, हिन्दू जाति मिलेगी लेकिन हिन्दू धर्म शब्द नहीं मिलेगा। सारे ग्रन्थों में – एतद् धर्मः सनातन– लिखा हुआ है। यह शाश्वत धर्म है, सनातन धर्म है और मानवमात्र के लिए धर्म है।

दुनिया में जहाँ कहीं मनुष्य हैं उनके पास मस्तिष्क है, हृदय है और हाथ है। यही तीन चीज़े देखी चौथी चीज़ तो कहीं देखी नहीं। यह बात अलग है कि सर पर कुल्ही यदि तुम रख लो तो दूसरा सर तो नहीं हो जाएगा वो, कुल्ही ही रहेगी। सर, हृदय और हाथ, इन तीनों के सदुपयोग के लिए वेद की सीख है। बुद्धि के प्रकाश में हृदय में सद्‌भावना लेकर हाथ का प्रयोग करो। इसको ही ज्ञान, उपासना और कर्म कहते हैं। कर्म. उपासना और ज्ञान यह वेदत्रयी है। यही मानव के विकास की कुंजी है। इसमें कहाँ पर हिन्दू आ गया, कहाँ पर मुसलमान और ईसाई कहाँ आ गया? सोचो तो आज दुनिया के अनेकों देशों के लोग इस वैदिक विज्ञान का अनुकरण कर रहे हैं। यदि तुम लोग यह सोचो कि वैदिक विज्ञान का अनुकरण करने से तुम लोग हिन्दू बन जाओगे तो यह तुम्हारी भ्रान्ति है।

अरे भाई! बिजली का अविष्कार इस युग में किसने किया? एक क्रिश्चन ने। विद्युत का प्रयोग करने से हम क्रिश्चन बन गये क्या? टैलीफून वा हवाई जहाज का प्रयोग करने से हम क्रिश्चन बन गए क्या? नहीं। अरे भले आदमी! जैसे वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रयोग करने से हमारा धर्म नहीं

बदलता इसी रूप से यह तो अध्यात्म विज्ञान है, ब्रह्म विज्ञान है। इस ब्रह्म विज्ञान का अनुसन्धान जिन्होंने किया था वो तो मनुष्य मात्र के पिता थे, तुम सब के बाप थे, वो ऋषि हमारे अकेले के बाप थोड़े ही थे।

जब वेद लिखा गया उस समय इस पृथ्वी पर अनेक जातियां नहीं थीं, अनेक पंथ, सम्प्रदाय नहीं थे। उस समय केवल एक मानव जाति थी और सारी पृथ्वी के ऊपर रहती थी। ऋषियों ने मानव–मात्र के लिए अपना संदेश दिया इसलिए उसका उत्तराधिकारी भी मानव मात्र है न केवल हिन्दू ही। हां, इतना जरूर है कि वैदिक ज्ञान–विज्ञान के कोष को हिन्दुओं ने सुरक्षित रखा इसलिए वो कहते हैं कि यह मेरा है। यदि तुम उसका प्रयोग करो तो तुम्हें मना कौन करेगा? हम तो उसके प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं। आज सैंकड़ों नहीं हज़ारों क्रिश्चनों को हम ने वैदिक विज्ञान की शिक्षा दी है, लोग उसका अनुकरण कर रहे हैं और आराम से जी रहे हैं। जिसके बाप, दादा हमेशा गऊमांस खाते थे और शराब पीते थे उनकी सन्तानें आज शुद्ध शाकाहारी हो गई हैं। आप जाइये उनके घरों में तो आपको लगेगा कि आप पुराने जमाने के ब्राह्मण के घर आ गये हैं। शुद्ध शाकाहारी जीवन है उनका। वहाँ अण्डे, मांस, शराब तथा धूम्रपान की गन्ध भी नहीं है। भारत में उसका उल्टा हो रहा है। जब भारत परतन्त्र था तो यहाँ पर २० प्रतिशत लोग मांसाहारी थे। अब भारत स्वतन्त्र हुआ तो यहाँ पर ८० प्रतिशत लोग मांसाहारी हो गए हैं। अभी मैं बनारस की और व्याख्यान दे रहा था तो एक सज्जन खड़े हो गए, उन्होंने कहा 'महाराज' जब तक छोटे लोग मांस खाते थे तो मांस ५ से १० रूपये किलो तक बिकती थी जब से ब्राह्मणों ने मांस खाना शुरू किया है तब से मांस ८० रू० किलो हो गई है यानी पतन की भी कोई सीमा है क्या? शुद्ध आहार, शुद्ध विहार से बुद्धि शुद्ध होती है। वेद की घोषणा है–

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः
स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षस्तस्मै ।

(छान्दोग्य० ७/२५–२)

आहार की शुद्धि से बुद्धि शुद्ध होती है। बुद्धि की शुद्धि से दृढ़ स्मृति होती है और दृढ़ स्मृति के प्रकाश में मनुष्य इस संसार से मुक्त हो करके ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। यह वेद का निर्देश है लेकिन अब आहार भ्रष्ट हो रहा है।

एक बात और बताता जाऊं आप लोगों को। इस समय हमारी संस्कृति, सभ्यता को नष्ट करने के लिए जितनी दुर्भिसन्धियां हो रही हैं, छलयुक्त प्रपंचयुक्त जो भी कार्य हो रहा है, वह बहुत ही भयानक है। इस समय चार शक्तियां हैं जो यहाँ की महिमा को नष्ट करने पर तुली हुई हैं। एक क्रिश्चैनिटी है जो दुनिया में ईसाई के सिवा किसी को नहीं देखना चाहती। दूसरा अरब से आया हुआ इस्लाम है जो दुनिया भर को पाक भूमि बनाना चाहता है। तीसरे साम्यवादी हैं जो दुनिया में केवल श्रमिक वर्ग रहे, ऐसा देखना चाहता है। उनका कहना है कि जो ऊपर हैं उनकी टांग पकड़ कर नीचे खींच लो धरती पर, सब बराबर हो जायेंगे। मैंने एक साम्यवादी से कहा कि यह क्यों नहीं शिक्षा देते कि जो नीचे खड़े हैं उनका हाथ पकड़ कर ऊपर बिठा लो। बोले यह तो सम्भव नहीं हो सकता। हम कहा कि यह ही आपके लिए सरल रास्ता निकला है कि जो ऊपर हैं उनको नीचे खींच लिया जाए यानी जो पढ़े लिखे हैं उनको मूर्ख बना दिया जाए जिससे सब बराबर के हो जाएं! ये कम्यूनिस्ट हैं और चौथे हैं वर्तमान के स्वार्थी राजनेता। बहुत खतरनाक हैं ये। यदि आप अपने देश के स्वार्थी राजनेताओं की चाल से बच जायें तभी इस देश का उत्थान आप कर सकते हैं। इस राष्ट्र की गति आगे बढ़ सकती है अन्यथा नहीं। बहुत दु:खद स्थिति है।

जब सोवियत संघ का विघटन हुआ तो वहाँ की सरकार ने कहा कि सरकार प्रति वर्ष ७५ करोड़ रूबल भारत की सरकार को देती रही है। किसलिए देती रही है? यह पता चला कि यहाँ की यूनिवर्सिटियों में

पत्रकारिता में तथा राजनेताओं में कुछ लोग ऐसे हैं जो ऊपर से गऊ की खाल ओढ़ रखे हैं और अन्दर से इस देश की संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करने के लिए सक्रिय रहते हैं।

मैं आप लोगों को बता रहा था कि इस देश की संस्कृति, सभ्यता, धर्म और इसके विज्ञान सम्मत जीवन विकास की प्रक्रिया के ऊपर जो आघात करने वाले हैं उनसे आप सावधान रहकर ही आगे बढ़ सकते हैं। यदि जीवन के रहस्य को जानना है, जीवन के विज्ञान को जानना है, जीवन के लक्ष्य को जानना है, जीवन के स्वरूप को जानना है तो तुम्हें ब्रह्मविद्या की शरण में आना पड़ेगा। यदि नकली सुख के पीछे भ्रमित होकर दुर्गति का शिकार बनना है फिर चाहे जहाँ चले जाओ कौन मना करता है तुम्हें।

मैं आप लोगों से बता रहा था कि यह जो Conspiracy चल रही है, कपट का जो सारा साम्राज्य चल रहा है उसके चार रूप आपको देश में दिखाई देंगे–आप मुर्गी पालिए, सूअर पालिए, मछली पालिए और शराब पीजिए सरकार आपको सबसिडी देगी। किसलिए? जिससे मांस खाकर आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो। आजकल तो गली–गली में शराब की दुकान आपको मिलेगी। याद होगा पहले शहर के कोने में एक शराब की दुकान होती थी। जो खरीदता था वह चोरी से जेब में लेकर जाता था, कोई देख लेगा तो कहेगा कि शराबी है। इस प्रकार वह शर्म करता था। आज तो सरकार रैवन्यु कमाने के लिए ठेकों की नीलामी करती है ताकि शराब पीकर आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाए जिससे आप पतन के गर्त में गिर जाएं। आपको मांस खिलाने की, शराब पिलाने की योजनाबद्ध कार्यवाही चल रही है। आपको जुआ खैलाने की योजनाबद्ध कार्यवाही चल रही है। लाटरी सरकारी जुआ ही तो है जिसमें गरीब आदमी करोड़ पाने के प्रलोभन में दिन भर की कमाई से टिकट खरीद लेता है। उस टिकट का हिस्सा सरकार के यहाँ पहुंच जाता है। अब रह गया था आपका चरित्र। उसको भ्रष्ट करने के लिए टी.वी. पर

विदेशी चैनलस आने लगे हैं जिस पर नग्न चित्र दिखाए जाते हैं। आजकल लोग कहते हैं कि 'सैक्स' की शिक्षा होनी चाहिए। अरे भले आदमी! हमने कहा इसके लिए ट्रेनिंग की क्या जरूरत है? भारत में हमेशा संयम की शिक्षा दी जाती रही है सैक्स की नहीं। अब उलट हो गया। अब सैक्स की शिक्षा दी जायेगी संयम की नहीं। एनर्जी का दुरुपयोग सिखाया जायेगा सदुपयोग नहीं। अपने आपको दीनहीन, निर्बल बनाने की प्रक्रिया इससे बड़ी और क्या हो सकती है? यह सब योजनाबद्ध हो रहा है। आप लोगों को सावधान कर रहा हूं। अपने आहार, अपने विहार, अपने व्यवहार को शुद्ध रखिए।

मैं हरियाणा में रहता हूँ। मेरे यहाँ मन्त्री लोग आते रहते हैं। मैंने उनसे कहा कि आप लोग मेरे पास आते हो इतना नहीं कर सकते कि शराब तथा जुआ बन्द कर दो। वो कहने लगा 'महाराज' क्या करूँ रैवन्यु कहाँ से आएगी? हम कहा कि रैवन्यु का क्या करेगा? कहा कि समाज का कल्याण करूंगा। हम कहा कि शराब पिलाकर उनकी बुद्धि भ्रष्ट करोगे तो कल्याण किस प्रकार से करोगे? मांस खिला कर सेहत खराब करोगे तो कल्याण किस प्रकार से करोगे? सड़क बना कर, अस्पताल बनाकर किसी देश का उत्थान होता है? मेरा कहने का अभिप्राय कि समाज को पतन के गर्त में डालकर उसके विकास की कल्पना करना मूर्खता के सिवा और क्या है? विकास माने होता है मनुष्य को चरित्रवान् बनाना। यह विकास का लक्षण नहीं है कि तुम्हारे शहर में कितने अस्पताल हैं। शहर में कितने असंयमी लोग रहते हैं, कितने रोगी होते जा रहे हैं यह विनाश का लक्षण है। गली–गली में पुलिस चौकी बनाना विकास का लक्षण नहीं है। यह तो वहाँ के लोगों का अपराधी होने का, चरित्र भ्रष्ट होने का लक्षण है। इसको आजकल लोग विकास के लक्षण मानने लगे हैं।

धर्म आपको सिखाता है कि आप अपने आप को राष्ट्र से जोड़िए, राष्ट्र को विराट् से जोड़िए और विराट् को ब्रह्म में लीन करके एक हो

जाइये। फिर आप देखेंगे जैसे श्रुति कहती है –

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्।। न बिभेति कदाचनेति।।

(तैत्तिरीय० २/४)

ऐसे आप आनन्द के समुद्र में हिलोरे लेते हुए निर्भय और निश्चिंत जीवन जीने लगेंगे। कितना उत्तम संदेश है वेद का लेकिन दुर्भाग्य है कि न तो धर्म के नाम पर और न शिक्षा के नाम पर आपको ये बातें समझाई जा रही हैं। शिक्षा में धर्म इसलिए नहीं आ सकता कि यदि धर्म आ गया तो आप धर्म–निरपेक्ष कैसे बनेंगे।

दिल्ली में आजकल साहिब सिंह की सरकार है। इस समय दिल्ली में ७२,००० अध्यापक हैं। उसने आदेश निकाला कि जितने अध्यापक हैं सबको गुरु जी के पास आ करके शिक्षा के विषय में निर्देश लेना चाहिए। वहाँ पर शिक्षा विभाग के डायरैक्टर हैं मेरे शिष्य के. के. भसीन, मिश्रा जी उन्हें जानते हैं। उन्होंने दिल्ली को नौ खण्डों में बाँटा। वह प्रत्येक खण्ड के अध्यापक और प्रिंसीपलज़ को इक्टठा करते हैं और वहाँ जाकर मैं व्याख्यान देता हूं। काफी प्रोग्राम मैंने दिए हैं और अभी चल ही रहा है वह प्रोग्राम।

शिक्षा के क्षेत्र में मैंने उन लोगों से कहा है कि नैतिक शिक्षा की व्यवस्था करो। सब पूछने लगे कि कैसे हो? कहीं ऐसा न हो कि नैतिक शिक्षा चलावें और बाद में हमें लोग साम्प्रदायिक घोषित कर दिये जायें। हम कहा कि साम्प्रदायिक होना कोई पाप तो नहीं है। यह तो गौरव की बात है। कैसे गौरव की बात है? किसी बाप का बेटा होना यह गौरव की बात है या अपमान की बात है? क्या राए है आप लोगों की? जो यह कहदे कि मेरे को तो बाप का पता नहीं, सारे पुरुष मेरे बाप हैं, उसको क्या कहेंगे आप? या तो पागल कहेंगे या एक शब्द और है जिसका मैं प्रयोग नहीं कर सकता। जैसे पिता का पुत्र होना गौरव की बात है ऐसे ही साम्प्रदायिक होना भी गौरव की बात है। सम्प्रदाय माने **'सम्यक् प्रकारेण प्रदीयते ज्ञानम्'** जो एक परम्परागत

ज्ञान से जुड़ा हुआ है, ज्ञान के प्रवाह से जुड़ा हुआ है वह साम्प्रदायिक है। हम सारे वैदिक विज्ञान के अनुयायी साम्प्रदायिक हैं। वेद हमारा मूलाधार है। उसी प्रक्रिया से हम सम्यक् प्रकार से ज्ञान–विज्ञान को ग्रहण करते आए हैं। हमने किससे पढ़ा? अपने गुरु से। हमारे गुरु ने किससे पढ़ा? अपने गुरु से। इस प्रकार से यह परम्परा कहाँ से चली आ रही है? वेद काल से चली आ रही है तभी तो ज्ञान–विज्ञान हमारे तक पहुंचा। हमारे तक पहुंचने वाली ज्ञान–विज्ञान की परम्परा को आप शर्मसार कहेंगे या गौरव की बात कहेंगे? साम्प्रदायिक होना गौरव की बात है। ये अज्ञानी जो Communists हैं उन्होंने तीन–चार शब्द रट रखे हैं। किसी का तिरस्कार करना होगा तो कहेंगे ये तो साम्प्रदायिक हैं, ये दकियानूसी हुं, ये पुराणपंथी हैं। पुराणपंथी कौन है, कौन नया पंथी है, ज़रा बताओ तो मुझे? कार्ल मार्क्स को मरे डेढ़ सौ वर्ष हो गए। डेढ़ सौ वर्ष पहले जो लिख कर मर गया उसका अनुकरण तुम करते हो तो तुम पुराणपंथी बने या नए पंथी बने? नया कौन सा पंथ है तुम्हारा?

मैं आपको बता रहा था कि आप अपनी इस परम्परा पर गर्व कीजिए। इस राजनैतिक चाल में आकर के अपने राष्ट्र का गौरव नष्ट मत कीजिए। यह जातिवाद एक घृणित अस्त्र है राजनेताओं के पास। यह धर्म निरपेक्षता उससे भी भयंकर जर्म है जो व्यक्ति के मस्तिष्क में जाकर उसके जीवन को ही नष्ट–भ्रष्ट कर देता है। आप लोग इस चाल में न आकर के वेद के विज्ञान के प्रकाश में अपने जीवन के विकास की प्रक्रिया को समझिए, स्वीकार कीजिए। आप हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ईसाई हैं, जैन हैं, इससे मेरा कुछ लेना–देना नहीं है, आप मनुष्य हैं इतना मैं जानता हूं। हमारे पास हज़ारों क्रिश्चियन हैं हमने कभी नहीं कहा कि तुम हिन्दू बन जाओ। क्यों कहूँ भाई? हिन्दू कोई बनाया जाता है या बिगाड़ा जाता है? हिन्दू माने क्या होता है? मैंने एक पुस्तक लिखी है 'हिन्दू धर्म सूत्र'। उसमें मैंने लिखा है –

हिंसया दूयते यस्य हृदयं सः हिन्दू।
हिनस्ति तपसा पापान् दैहिकान् दुष्टमानसान्।
हेतिभिः शत्रु वर्गांश्च स हिन्दूरभिधीयते।।

यह हमने नहीं व्याख्या की ये हमारे से हज़ारों वर्ष पहले की व्याख्या है कि जो अपने तप के प्रभाव से अपने मानसिक और शारीरिक पापों को नष्ट करता है, जो हमारे शत्रु हैं उनको शस्त्रों के साथ नष्ट करने की क्षमता रखता है, उसे हिन्दू कहते हैं। कहा कि एक तरफ हिन्दू का अर्थ करते हो अहिंसक दूसरी तरफ अर्थ करते हो शत्रुओं का संहार करने वाला। हम कहा हिंसा किसे कहते हो तुम? अपने सुख–सुविधा के लिए पशुओं को काट करके खाना हिंसा है। अपने देश, धर्म, संस्कृति, सभ्यता तथा जीवन पर आक्रमण करने वाले आततायी का वध करना अहिंसा है। अहिंसा माने यह नहीं होता कि मच्छर मर जायेगा तो आप नरक में चले जायेंगे। मच्छर तो रोज़ पैदा होते हैं रोज़ मरते हैं। इससे कौन नरक में जाता है और स्वर्ग में जाता है? हिंसा–अहिंसा की परिभाषा समझो। आप अपने शाश्वत सनातन धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझ कर तदनुसार अपने जीवन विकास की व्यवस्था को अपनावें। चार बातें जो मूल में मैंने कही थीं कि सनातन धर्म का मूलाधार ब्रह्म है, ब्रह्म की अभिव्यक्ति विराट् है, विराट् का एक अंश राष्ट्र है और राष्ट्र का एक अंश व्यक्ति है। व्यक्ति राष्ट्र का अंग है, राष्ट्र विराट् का अंग है और विराट् ब्रह्म की अभिव्यक्ति है। इन चारों की एकता का नाम मोक्ष है, तत्त्व दर्शन है, तत्त्व विज्ञान है और कल्याण का श्रेष्ठतम स्वरूप है। इसी का चिन्तन करते हुए आप लोग अब अपने–अपने घर को जाएं। फिर कभी मिलेंगे तो चर्चा करेंगे।

हरि ऊँ तत्सत्

हमारे प्रकाशन

✤ शक्ति तत्त्व बोध ✤ आपकी अपनी बात ✤ गीता ज्ञान विज्ञान योग
✤ श्रीहनुमत् विनय पच्चीसी ✤श्री चण्डिकाशतक ✤ श्री श्यामशतक ✤ मानस में धर्मरथ
✤ रामो विग्रहवान् धर्मः ✤ मानस महाकाव्य में नारी ✤ गीता तत्त्व बोध
✤ क्या वर्ण-व्यवस्था अभिशाप है? ✤ राम नाम महिमा ✤मानस के मोती ✤ जीवन विज्ञान
✤ भारत की आत्मा ✤ योगांकुर ✤ साधना सूत्र ✤ गीता कर्म विज्ञान ✤ समाधान
✤तत्त्व चिन्तन ✤ सन्त सन्देश ✤भक्ति दर्शन (नारद भक्ति सूत्र) ✤ राम और रामायण
✤क्रियायोग ✤ मानव पतन में हेतु ✤ योग पथ ✤ विश्व को हिन्दुओं का योगदान
✤ मानस में वैदिक सिद्धान्त ✤ सन्त लक्षण ✤ श्री हनुमत हृदय ✤संस्कृत भाषा का महत्व
✤ ब्रह्म और उसकी विशिष्टाभिव्यक्ति ✤ सहज समाधि भली ✤ब्रह्मविद्या विज्ञान-प्रथम
✤ ब्रह्मविद्या विज्ञान—द्वितीय ✤ नारी! तुलसी की दृष्टि में ✤ शिव तत्त्व बोध
✤ विश्व की समस्याओं का हल—अध्यात्मवाद ✤हिन्दू धर्म सूत्र ✤ गीतोक्त बुद्धियोग
✤ चंडी दी वार (भगवती की स्तुति) ✤ काव्य सुधा ✤ श्री शिव शतक
✤ मानस में नवधा भक्ति ✤ महात्मा भरत ✤ हनुमत पंच रत्न
✤राष्ट्र का मुखिया कौन ?(वज्रसूचिकोपनिषद् के आधार पर तात्त्विक विश्लेषण)
✤श्रीमद्भगवद्गीता धर्म विज्ञान भाष्य (अध्याय १ एवं २)
✤श्रीमद्भगवद्गीता धर्म विज्ञान भाष्य (अध्याय ३ एवं ४)
✤श्रीमदभगवद्गीता धर्म विज्ञान भाष्य (अध्याय ५ एवं ६)
✤वैदिक सनातन धर्म की वैज्ञानिक व्याख्या

Science of Stable Wisdom • The Science of *Pranav (om)* *(Commentary on Mandookyopanishad)* • How to be a Yogi • Towards Divinity • Yoga for life • The Hindu & its way of life • Essence of the Gita • Basic Principles of Yoga • Essays on the Kram Yoga • Lord Hanuman-Our Ideal • Meditation Technique • Science of the Absolute Knowledge *(Commentary on Ishopanishad)*

सर्म्पक सूत्र

ब्रह्मर्षि आश्रम
विराट् नगर् पिंजौर (हरियाणा)
पिन- 134102
फोन :-01733-266170

ब्रह्मर्षि योगाश्रम
28-बी, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032
फोन :-011-22821660,22821943

ब्रह्मर्षि बावरा शिक्षा निकेतन
माधोपुरी, गऊशाला रोड़, लुधियाना
फोन :-0161-2700141,270631

ब्रह्मर्षि बावरा शिक्षा निकेतन
(अंग्रेजी मीडियम)
बेअन्तपुरा, चण्डीगढ़ रोड़, लुधियाना
फोन :-0161-2666406,2608406

ब्रह्मर्षि बावरा शान्ति विद्यापीठ
दीनानगर, धार रोड़, उधमपुर (जे.के.)
फोन :-01992-271080

ब्रह्मर्षि प्राकृतिक चिकित्सालय
योग आश्रम
पुरी फार्म्स, जोड़ियां, रादौर रोड़,
यमुनानगर-135001(हरियाणा)
फोन:- 01732-279846

ब्रह्मर्षि बावरा विद्या मन्दिर
चककिशुनदास, ज्ञानपुर, भदोही,
वाराणसी (उ0प्र0)

ब्रह्मर्षि योगाश्रम
न्यू बाईपास, ऋषिकेश रोड़,
भूपतवाला, हरिद्वार (उ0 प्र0)
फोन:-0133-461018

श्रीगीता रामायण सेवा संघ
अशोक नगर, मोक्ष मार्ग,
उदयपुर (राजस्थान)
फोन:-0294-2414140

Metaphysical Science
Research Institute
Sec.19-A, Chandigarh
Phone : 0172-725390, 540128

Brahmrishi Mission School
Jarar, Devvan, Piplaage
Bhunter, Kullu (H.P.)
Ph. 01902-265518,266043

Brahmrishi Mission School
Hanumangarh Road,
Opp. New Water Works,
ABOHAR-152116
Ph. : 01634-229615, 230615

Brahmrishi Misson
278, Heston Road, Heston
Middlesex TW5 ORT U.K.
Phone : 0208-571-3879

Brahmriahi Mission CANADA
Shri-Ram-Dham Hindu Temple
525 Bridge Street,
East Kitchener, Ontario
CANADA N2K3C5
Phone : (519) 579-1486

Brahmrishi Ashram
1246, North Mantua Street, Kent,
Ohio- 44240, U.S.A..
Phone : 330-678-3793

Brahmrishi Ashram
717, Loosduinseweg,
2571 AM-Denhaag, Nederland,
Ph.: 070-3620961

एकत्वमनुपश्यतः

ब्रह्मर्षि मिशन

दिव्यालोक प्रकाशन

ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर, पिंजौर (हरियाणा)